अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका.

॥ ॐ नमः सिद्धं ॥ अथ श्रीजीवविचारप्रकरणप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तं ॥ भुवणपईवं
वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं ॥ जीवसरूवं किंचि वि, जह भणियं
पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥ जीवा मुत्ता संसा, रिणो य तस थावरा य संसारी ॥ पुढवि
जल जलण वाऊ, वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥ फलिह मणि रयण विद्दुम,
हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ धाउ सेढी, वन्निय अरणेट्टय
पलेवा ॥ ३ ॥ अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पाहाण जाइओ णेगा ॥ सोवीरंजण लू
णा, इ पुढविभेया य इच्चाइ ॥ ४ ॥ भोमंतरिक्खमुदगं, ओसाहिमकरग हरि
तणू महिया ॥ हुंति घणोदहिमाई, भेआ णेगा य आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जा
ल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विज्जुमाईया ॥ अगणिजियाणं भेया, नाय
व्वा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥ उब्भामग उक्कलिया, मंडलि मह सुद्ध गुंजवाया य ॥

घण तणु वायाईया, नेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया, वण
सइजीवा उहा सुए नणिया ॥ जेसिमणंताणं तणु, एगा साहारणा तेउ ॥ ८ ॥
कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल नूमि फोडा य ॥ अल्लयतिय गजर मो,
थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ए ॥ कोमलफलं च सव्वं, गूढसिराइं सिणाइपत्ता
इं ॥ थोहरि कुआरि गुग्गुलि, गलोइपमुहा य बिन्नरुहा ॥ १० ॥ इच्चाइणो
अणेगे, हवंति नेया अणंतकायाणं ॥ तेसिं परिजाणणत्थं, लरकणमेयं सुए
नणियं ॥ ११ ॥ गूढसिरसंधिपव्वं, समनंगमहीरुगं च बिन्नरुहं ॥ साहारणं
सरीरं, तव्विवरीयं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु तेय पत्ते
या ॥ फल फूल बल्लि कहा, मूला पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥ पत्तेयं तरुमुत्तं,
पंचवि पुढवाइणो सयललोए ॥ सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताउ अदि
स्सा ॥ १४ ॥ संख कवड्डय गंडुल, जलो य चंदणग अलस लहगाई ॥ मेह

रि किमि पूयरगा, बेइंदियमाइ वाहाई ॥ १५ ॥ गोमी मंकण जूआ, पिपी
लि उद्देहिया य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय गोकीड जाईउ ॥१६॥
गद्दहय चोर कीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवालिय इलिया,
तेइंदिय इंदगोवाई ॥ १७ ॥ चउरिंदिया य विच्छू, ढिंकुण भमरा य भमरिया
तिड्डा ॥ मच्छिय डंसा मसगा, कंसारी कविलडोलाई ॥ १८ ॥ पंचिंदिया य च
उहा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्तविहा, नायव्वा पुढवि भे
एणं ॥ १९ ॥ जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचिंदिया य तिरिक्खा य ॥ सु
सुमार मच्छ कच्छव, गाहा मगरा य जलचारी ॥ २० ॥ चउपय उरपरिसप्पा,
भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल पमुहा, बोधव्वा ते समा
सेणं ॥ २१ ॥ खयरा रोमयपक्खी, चम्मयपक्खी य पायडा चेव ॥ नरलोगाउ
बाहिं, समुग्गपक्खी वियय पक्खी ॥ २२ ॥ सव्वे जल थल खयरा, समुच्छि

मा गप्नया उहा हुंति ॥ कम्मा कम्मग नूमी, अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
दसहा नवणाहिवई, अठविहा वाणमंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा,
डविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥ सिद्धा पनरस नेया, तिह्वातिह्वाइ सिद्धनेए
णं ॥ एए संखेवेणं, जीवविगप्पा समख्काया ॥ २५ ॥ एएसिं जीवाणं, सरीर
माउं ठिई सकायम्मि ॥ पाणा जोणि पमाणं, जेसिं जं अह्वि तं नणिमो
॥ २६ ॥ अंगुलअसंखनागो, सरीरमेगिंदियाण सवेसिं ॥ जोयण सहस्स
महियं, नवरं पत्तेयरुख्काणं ॥ २७ ॥ बारस जोयण तिन्नी, गाऊआ जोयणं
च अणुकमसो ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥ २८ ॥ धणुसयपं
च पमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो अद्धूणा, नेया रयणप्पहा
जाव ॥ २९ ॥ जोयण सहस्स माणा, मह्वा उरगा य गप्नया हुंति ॥ धणुह
पुहुत्तं पंखी, नुअचारी गाउअ पुहुत्तं ॥ ३० ॥ खयरा धणुहपुहुत्तं, नुअगा

उरगा य जोयणपुहुत्तं ॥ गाउअ पुहुत्त मित्ता, समुच्छिमा चउपया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव गाउआइं, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ॥ कोसतिगं च मणुस्सा, उक्कोस सरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥ इसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त देह मुच्चत्तं ॥ दुग दुग दुग चउगेवि, जा णुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुढवीए, सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स ॥ वाससहस्सा दस तरु, गणाण तेऊ तिरित्ता उ ॥ ३४ ॥ वासाणि बारसाऊ, बिइंदियाणं तिइंदियाणं तु ॥ अऊणपन्नदिणाणं, चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥ ३५ ॥ सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं ॥ चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्निय पलिउवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उरभुअगाणं, परमाऊ होइ पुव्वकोडीउ ॥ पक्खीणं पुण भणिउ, असंखभागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥ सव्वे सुहुमा साहा, रणा य सम्मुच्छिमा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चियजियंति ॥ ३८ ॥ उगाहणाउ

माणं, एवं संखेवउ समक्खायं ॥ जे पुण अब विसेसा, विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥ एगिंदिया य सवे, असंख उस्सप्पिणीसकायम्मि ॥ उववज्जंति चयंति य, अणंतकाया अणंताउ ॥ ४० ॥ संखिज्ज समा विगला, सत्तठ नवा पणिंदि तिरि मणुआ ॥ उववज्जंति सकाए, नारयदेवा य नो चेव ॥ ४१ ॥ दसहा जिआण पाणा, इंदिय ऊसास आउ बल रूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो, विगलेसु ब सत्त अठेव ॥ ४२ ॥ असन्निसन्नीपंचिं, दिएसु नवदस कमेण बोधवा ॥ तेहि सह विप्पउगो, जीवाणं भन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोरपारे, संसारे सायरम्मि भीमम्मि ॥ पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥ तह चउरासी लक्खा, संखा जोणीण होइ जीवाणं ॥ पुढवाईण चउण्हं, पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं, चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउ

रो नारय, सुराण मणुआण चउदस हवंति ॥ संपिंडिआउ सवे, चुलसी ल
क्खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं न पाण जोणीउ ॥
साइ अणंता तेसिं, ठिई जिणंदागमे भणिया ॥ ४८ ॥ काले अणाइनिह
णे, जोणि गहणम्मि भीसणे इत्थ ॥ भमिया भमिहंति चिरं, जीवा जिणव
यण मलहंता ॥ ४९ ॥ ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि संमत्ते ॥ सिरिसं
तिसूरि सिठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥ एसो जीववियारो, संखेवरु
ईण जाणणाहेऊ ॥ संखित्तो उद्धरिउ, रुद्दाउ सुयसमुद्दाउ ॥ ५१ ॥ इति जीव
सं० ॥ अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः ॥ जीवाऽजीवा पुण्णं, पावाऽसव
संवरो य निज्जरणा ॥ बंधो मुक्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायवा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया, लीसा बासीय हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस, चउ
नव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥ एगविह दुविह तिविहा, चउविहा पंच छविहा

जीवा ॥ चेयण तस इयरेहिं, वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥ एगिंदिय सुहुमि यरा, सन्नियर पणिंदिया य स बि ति चउ ॥ अपजत्ता पज्जत्ता, कमेण चउ दस जियठाणा ॥ ४ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥ वीरियं उ वओगो य, एयं जीवस्स लक्कणं ॥ ५ ॥ आहार सरीरेंदिय, पज्जत्ती आण पाण जास मणे ॥ चउ पंच पंच ब्बिय, इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥ पणिंदिय त्तिबलूसा, साऊदसपाण चउ ब सग अठ ॥ इग डु ति चउरिंदीणं, असन्नि सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥ इति जीवतत्वम् ॥ धम्मा ऽधम्मा ऽगासा, तिय तिय नेया तहेव अद्धा य ॥ खंधा देसपएसा, परमाणु अजीव चउदस हा ॥ ८ ॥ धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा ॥ चलणस हावो धम्मो, थिरसंठाणो अहम्मो य ॥ ए ॥ अवगाहो आगासं, पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा ॥ खंधा देसपएसा, परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥ सद्दं

धयार उज्जोय, पभा छाया तवेहिआ ॥ वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु
लक्खणं ॥ ११ ॥ एगाकोडिसतसट्ठि, लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य ॥ दोयस
या सोलहिया, आवलिया इग मुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥ समयाऽवली मुहुत्ता,
दीहा पक्खा य मास वरिसा य ॥ भणिउ पलिआ सागर, उसप्पिणी सप्पिणी
कालो ॥ १३ ॥ परिणामि जीव मुत्ता, सपएसा एग खित्त किरिआए ॥ निच्चं
कारण कत्ता, सव्वगद मिदि रहिअपवेसे ॥ १४ ॥ इत्यजीवतत्वम् ॥ सा उच्च
गो य मणु दुग, सुर दुग पंचिंदिजाइ पणदेहा ॥ आइ ति तणू णु वंगा, आ
इम संघयण संठाणा ॥ १५ ॥ वन्नचउक्का गुरु लहु, परघा ऊसास आय वु
ज्जोयं ॥ सुभखगइ निमिण तस दस, सुर नर तिरियाउ तित्थयरं ॥ १६ ॥ त
स बायर पज्जत्तं, पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च ॥ सुस्सर आइज्ज जसं, त
साइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥ इति पुण्यतत्वम् ॥ नाणंतराय दसगं, नवबीये

नीय साय मिच्छत्तं ॥ थावर दस निरयतिगं, कसाय पणवीसतिरियदुगं ॥१८॥
इग बि ति चउ जाईउ, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥ अपसछं वन्न चऊ,
अपढम संघयण संठाणा ॥ १९ ॥ थावर सुहुम अपज्ज, साहारण मथिर
मसुभ दुभगाणि ॥ दुस्सर णाइज्ज जसं, थावरदसगं तु विवरीयं ॥ २० ॥
इति पापतत्वम् ॥ इंदिअ कसाय अव्वय,जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा ॥ कि
रिआउ पणवीसं, इमाउ ताउ अणुक्कमसो ॥ २१ ॥ काइय अहिगरणीआ,
पाउसिआ पारितावणी किरिया ॥ पाणाइवाइ रंभिअ, परिगहिया मायवत्ती
अ ॥ २२ ॥ मिछा दंसण वत्ती, अपच्चखाणाय दिठि पुठीअ ॥ पाडुच्चिअ
सामंतो, वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥ २३ ॥ आणवणि विआरणीआ, अण
भोगा अणवकंखपच्चइआ ॥ अन्नापउग समुदा, ण पिज्ज दोसे रिआवहि
आ ॥ २४ ॥ इत्याश्रवतत्वम् ॥ समई गुत्ति परीसह, जइधम्मो भावणा च

रित्ताणि ॥ पण ति छवीस दस बार,स पंचनेएहि सगवन्ना ॥२५॥ इर्या नासे
सणा दाणे, उच्चारे सुमई सुअं ॥ मणगुत्ति वयगुत्ति, कायगुत्ति तहेव य
॥२६ ॥ खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेला रइ छिउ ॥ चरिआ निसिआ सि
ज्जा, अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥ अलाभ रोग तण फासा, मल सक्कार प
रीसहा ॥ पन्नाअन्नाण सम्मत्तं, इअ बावीसं परीसहा ॥ २८ ॥ खंती मद्दव अ
ज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधवे ॥ सच्चं सोअं आकिं, चणं च बंभं च जइध
म्मो ॥ २९ ॥ पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एगया य अन्नत्तं ॥ असुइत्तं आ
सव सं, वरो अ तह निज्जरा नवमी ॥ ३० ॥ लोगसहावो बोही, डुलहा धं
म्मस्स साहगा अरिहा ॥ एआउ भावणाउ,भावे अवा पयत्तेणं ॥३१ ॥ सामाइ
अ पढमं, छेउवठ्ठावणं भवेबीअं॥ परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च
॥३२॥तत्तोअ अहक्खायं,खायं सव्वम्मि जीवलोगम्मि॥जं चरिऊण सुविहिआ,

वचंति अयरामरं ठाणं ॥ ३३ ॥ इति संवरतत्वं ॥ अणसण मूणोयरिआ, वित्तीसं
खेवणं रसच्चाउ ॥ काय किलेसो संली, णआयबज्ञोतवो होइ ॥ ३४ ॥ पायछि
त्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सचाउ ॥ ऊाणं उस्सग्गो विअ, अप्तिंतरउ तवो होइ
॥ ३५ ॥ बारसविहं तवो नि, ज्जराय बंधो चउविगप्पो अ ॥ पयई ठिइअणु
भाग, पएस भेएहि नायवो ॥ ३६ ॥ इति निर्जरातत्वम् ॥ पयइ सहावोवुत्ता,
ठिइ कालावहारणं ॥ अणुभागो रसो नेउ, पएसो दलसंचउ ॥ ३७ ॥ पड
पडिहार सि मज्ज, हडचित्तकुलाल भंमगारीणं ॥ जह ए एसिंभावा, कम्मा
णवि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥ इह नाण दंसणावर, ए वेय मोहाउ नाम गो
आणी ॥ विग्घं च पण नव ङ अ, ठवीस चउ ति सय ङ पणविहं ॥ ३९ ॥
नाणे य दंसणे य, वेअणिए चेव अंतराईए ॥ तीसं कोडाकोडी, अयराणं ठि
इ य उक्कोसा ॥ ४० ॥ सत्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥ ति

तीसं अयराइं, आउठिइ बंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥ बारस मुहुत्त जहन्ना, वेय
णिए अठ नाम गोएसु ॥ सेसाणंतमुहुत्तं, लहुठिई सनायव्वा ॥ ४२ ॥ इति
बंधतत्त्वं ॥ संतपय परूवणया, दव्वपमाणं च खित्तफुसणाय ॥ कालो अ अंत
रं भा, ग भावअप्पा बहु चेव ॥४३॥ संतं सुद्ध पयत्ता, विज्जंतं खकुसुमं व न
असंतं ॥ मुक्कत्ति पयं तस्सउ, परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥ गइ इंदीए
काये, जोए वेए कसाय नाणे य ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्निआ
हारे ॥ ४५ ॥ नरगइ पणिंदि तसभव, सन्नि अहक्काय खइअ सम्मत्ते ॥ मु
क्खोणाहार केवल, दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥ दव्वपमाणे सिद्धा,
णं जीव दव्वाणि हुंति णंताणि ॥ लोगस्स असंखिज्जे, भागे इक्को य सव्वे वि ॥४७॥
फुसणा अहिआ कालो, इगसिद्ध पडुच्च साइअणंतो ॥ पडिवाया भावाओ,
सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥ ४८ ॥ सव्व जियाण मणंते, भागे तेतेसि दंसणं नाणं

॥ खइए भावे परिणा, मि एअ पुण होइ जीवत्तं ॥ ४९ ॥ थोवा नपुंस सि
द्धा, थी नर सिद्धा कमेण संखगुणा ॥ इअ मुक्ख तत्तमेअं, नव तत्ता लेस
उ भणिआ ॥ ५० ॥ जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं ॥
भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥ सवाइं जिणेसर भा,सिआ
इं वयणाइं नन्नहा हुंति ॥ इह बुद्धी जस्स मणे, सम्मत्तं निच्चलं तस्स
॥ ५२ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तं,पि फासिअं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥ तेसिं अव
ड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥ उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परिअ
ट्टउ मुणेअवो ॥ तेणंताती अद्धा, अणागयद्धा अणंत गुणा ॥ ५४ ॥ जिण
अजिण तित्थ तित्था, गिहि अन्न सलिंग थी नर नपुंसा ॥ पत्तेअ सयंबुद्धा,
बुद्धबोहि कणिक्काय ॥ ५५ ॥ जिणसिद्धा अरिहंता, अजिण सिद्धा य पुंडरि
या पमुहा ॥ गणहारि तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा य मरुदेवी ॥ ५६ ॥ गिहिलिं

ग सिद्ध भरहो, वक्कलचीरीय अन्न लिंगम्मि ॥ साहू सलिंग सिद्धा, थी सिद्धा चंदणा पमुहा ॥ ५७ ॥ पुं सिद्धा गोयमाई, गांगेयाई नपुंसया सिद्धा ॥ पत्तेय सयंबुद्धा, भणिया करकंडु कविलाई ॥५८॥ तह बुद्धबोहिगुरुबो, हिया इग समय एग सिद्धा य ॥ इग समएवि अणेगा, सिद्धा ते णेगसिद्धा य ॥५९॥ जइआइ होइ पुच्छा, जिणाण मग्गंमि उत्तरं तइया ॥ इक्कस निग्गोयस्स, अणंत भागो य सिद्धिगउ ॥ ६० ॥ इति मोक्षतत्त्वं ॥ इतिश्रीनवतत्त्वं समाप्तं ॥

अथ श्रीदंडकप्रकरणं लिख्यते ॥ नमिउं चउवीसजिणे, तस्सुत्तवियारलेसदेसणउ ॥ दंडगपएहिं तेच्चिय, थोसामि सुणेह भो भव्वा ॥ १ ॥ नेरइया असुराई, पुढवाइ बेंदियादउ चेव ॥ गब्भय तिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिय वेमाणी ॥ २ ॥ संखित्तयरीउ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेस इंदीय दु समुघाया ॥ ३ ॥ दिट्ठी दंसण नाणे, जोगुवउगो

ववाय चवण ठिई ॥ पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गई आगई वेए ॥ ४ ॥ चउ ग
ब्भ तिरिय वाउसु, मणुआणं पंचसेस ति सरीरा ॥ थावर चउगे दुहओ, अं
गुलअसंखभाग तणू ॥ ५ ॥ सव्वेसिं पि जहन्ना, साहाविय अंगुलस्स संखं
सो ॥ उक्कोस पणसय धणू, नेरइया सत्त हत्थ सुरा ॥ ६ ॥ गब्भतिरि सहस
जोयण, वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं ॥ नर तेइंदि तिगाऊ, बेइंदिय जो
यणे बार ॥ ७ ॥ जोयणमेगं चउरिं,दि देह मुच्चत्तणं सुए भणियं ॥ वेउव्विय दे
हं पुण, अंगुलसंखं समारंभे ॥ ८ ॥ देव नर अहिय लक्खं, तिरियाणं न
व जोयण सयाइं ॥ दुगुणं तु नारयाणं, भणियं वेउव्विय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत
मुहुत्तं निरए, मुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु ॥ देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउ
व्वणा कालो ॥१०॥ थावर सुर नेरइया, अस्संघयणा य विगल छेवठा ॥ संघय
ण छगं गब्भय, नर तिरिएसु मुणेयव्वं ॥ ११ ॥ सव्वेसिं चउ दह वा, सन्ना स

वे सुरा य चउरंसा ॥ नर तिरिय छसंठाणा, हुंडा विगलिंदि नेरइया ॥ १२॥
नाणाविह धय सूई, बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया ॥ पुढवी मसूर चंदा,
कारा संठाणउ भणिया ॥ १३ ॥ सव्वे वि चउकसाया, लेस छगं गब्भ तिरिय
मणुएसु ॥ नारय तेऊ वाऊ, विगला वेमाणिय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइसिय
तेउ लेसा, सेसा सव्वे वि हुंति चउलेसा ॥ इंदियदारं सुगमं, मणुआणं
सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेय एय आहारे ॥
केवलिय समुग्घाया, सत्त इमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवलि,
तेयाहारग विणाउ चत्तारि ॥ ते वेउव्विय वज्जा, विगला सन्नीण ते चेव
॥ १७ ॥ पण गब्भ तिरि सुरेसु, नारय वाऊसु चउर तिय सेसे ॥ विगल दुदि
ठी थावर, मिच्छत्ती सेस तिय दिठी ॥ १८ ॥ थावर बितिसु अचक्खु, चउ
रिंदिसु त दुगं सुए भणियं ॥ मणुआ चउ दंसणिणो, सेसेसु तिगं तिगं भणियं

॥१ए॥ अन्नाण नाण तिय तिय, सुर तिरि निरए थिरे अनाण छुगं ॥ नाणन्नाण छु विगले,मणुए पण नाण तिअनाणा ॥२०॥ इक्कारस सुर निरए, तिरिएसु तेर पनर मणुएसु ॥ विगले चउ पण वाए,जोगतियं थावरे होई ॥२१॥ उवउंगा मणुएसु, बारस नव निरय तिरिय देवेसु ॥ विगलछुगे पण बक्कं, चउरिंदिसु थावरे तियगं ॥ २२ ॥ संख मसंखा समए, गप्नय तिरि विगल नारय सुरा य ॥ मणुआ नियमा संखा, वण णंता थावर असंखा ॥ २३ ॥ असन्नि नर असंखा, जह उववाए तहेव चवणे वि ॥ बावीस सग ति दस वा, स सहस उक्किठ पुढवाई ॥ २४ ॥ तिदिण ग्गि ति पल्लाऊ, नर तिरि सुर निरय सागर तितीसा ॥ वंतर पल्लं जोइस, वरिस लक्काहिअं पलिअं ॥ २५ ॥ असुराण अहिय अयरं, देसूण छु पल्लयं नवनिकाए ॥ बारस वासुणु पण दिण, बम्मासु क्कित विगलाऊ ॥ २६ ॥ पुढवाइ दस पयाणं, अंत मुहुत्तं जहन्न आउठिई ॥

दस सहस वरिस ठिइआ, नवणाहिव निरयवंतरिया ॥ २७ ॥ वेमाणिय जो
इसिआ, पल्लत यठं सआउआ हुंति ॥ सुर नर तिरि निरएसु, ब पज्जत्ति
थावरे चउगं ॥ २८ ॥ विगले पंच पजत्ति, बहिसि आहार होइ सवेसिं ॥ पण
गाइ पए नयणा, अह सन्नि तियं नणिस्सामि ॥ २९ ॥ चउविह सुर तिरिएसु,
निरएसु अ दीहकालिगी सन्ना ॥ विगले हेउवएसा, सन्नारहिया थिरा सवे
॥ ३० ॥ मणुआण दीह कालिअ, दिठीवाउवएसिआ केवि ॥ पज पण तिरि
मणुअ च्चिय, चउविह देवेसु गच्छंति ॥ ३१ ॥ संखाउ पज्ज पाणिंदि, तिरिय
नरेसू तहेव पज्जत्ते ॥ नू दग पत्तेयवणे, एएसु च्चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥ पज्ज
त्त संख गप्नय, तिरिय नरा निरय सत्तगे जंति ॥ निरउवट्टा एएसु, उववज्जंति
न सेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आउ वणस्सइ, मझे नारय विवज्जिआ जीवा ॥ स
वे उववज्जंति, निय निय कम्माणुमाणेणं ॥ ३४ ॥ पुढवाइ दस पएसु, पु

ढवी आऊ वणस्सई जंति ॥ पुढवाइ दस पएहिय, तेऊ वाऊसु उववाउ ॥३५॥ तेऊ वाऊ गमणं, पुढवी पमुहम्मि होइ पय नवगे ॥ पुढवाइ ठाणदसगा, विग लाइ तिय ताहिं जंति ॥ ३६ ॥ गमणा गमणं गप्नय, तिरिआणं सयल जीव ठाणेसु ॥ सव्वठ जंति मणुआ, तेऊ वाऊहिं नो इंति ॥ ३७ ॥ वेय तिय ति रि नरेसु, इत्थी पुरिसो अ चउविह सुरेसु ॥ थिर विगल नारएसु, नपुंस वेउ ह वइ एगो ॥ ३८ ॥ पऊ मणु वायरग्गी, वेमाणिय नवण निरय वितरिआ ॥ जोइस चउ पण तिरिया, वेइंदि तिइंदि नूआऊ ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई चि य, अहिआ अहिआ कमेण मेहुंति ॥ सव्वेवि इमे नावा, जिणा मए णंतसो पत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुम्ह नत्तस्स, दंमग पय नमण नग्ग हिययस्स ॥ दंम तियविरयसुलहं, लहु मम दिंतु मुक्खपयं ॥ ४१ ॥ सिरि जिणहंस मुणीस र, रज्जे सिरि धवलचंदसीसेणं ॥ गजसारेणं लिहिया, एसा विन्नत्ति

अप्पहिआ ॥ ४२ ॥ इतिश्री दंमकप्रकरणं संपूर्णम् ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ अथ श्रीलघुसंघयणी प्रारभ्यते ॥ नमिय जिणं सवन्नुं, जगपुज्जं जगगुरुं महावीरं ॥ जंबुद्दीव पयब्बे, वुह्वं सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥ खंमा जोयण वासा, पव्वय कूमा य तिब्ब सेढीउ ॥ विजय दह सलिलाउ, पिंमेसिं होइ संघयणी, ॥ २ ॥ णउय सयं खंमाणं, भरहपमाणेण भाइए लक्के ॥ अहवा णउअसय गुणं, भरह पमाणं हवइ लस्कं ॥ ३ ॥ अहविग खंमे भरहे, दो हिमवंते अ हेमवइ चउरो ॥ अठ महाहिमवंते, सोलस खंमाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ बत्तीसं पुण निसढे, मिलिया तेसहि बीयपासे वि ॥ चउसहिउ विदेहे, तिरासि पिंमेइ णउअसयं ॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं, सम चउरंसाइं इब्ब खंमाइं ॥ लस्कस्स य परिहीए, तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥ विस्कंभ वग्ग दहगुण, करणी वट्टस्स परिरउ होई ॥ विस्कंभ पाय गुणिउ, परिरउ तस्स गणियपयं ॥ ७ ॥ परिही

तिलक्ख सोलस, सहस्स दोयसय सत्तवीस हिया ॥ कोस तिग अठावीसं, ध
णु सय तेरंगुलद्ध हियं ॥ ८ ॥ सत्तेवयकोडिसया, णउआ छप्पन्न सय सहस्सा
इं ॥ चउणउयं च सहस्सा, सयंदिवढ्ढं च साहीयं ॥ ए ॥ गाउअ मेगं पनरस,
धणुसया तह धणूणि पनरस्स ॥ सठिं च अंगुलाइं, जंबुद्दीवस्स गणियपयं
॥ १० ॥ नरहाइ सत्त वासा, वियढ्ढ चउ चउरतिंस वहियरे ॥ सोलस व
क्खार गिरि, दो चित्त विचित्त दो जमगा ॥ ११ ॥ दोसय कणय गिरीणं, चउ
गयदंता य तह सुमेरू य ॥ छ वासहरा पिंमे, एगुणसत्तरि सया उन्नी ॥ १२ ॥
सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूमा य हुंति पत्तेयं ॥ सोमणस गंधमायण, सत्त
ठय रुप्पि महाहिमवे ॥ १३ ॥ चउतीस वियढ्ढेसु, विज्जुप्पह निसढ नीलवं
तेसु ॥ तह मालवंत सुरगिरि, नव नव कूमाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥ हिमसिहरिसु
इक्कारस, इय इगसठी गिरीसु कूमाणं ॥ एगत्ते सवधणं, सयचउरो सत्तसठीयं

॥१५॥ चउ सत्त अह नवगे,गारसकूमेहिं गुणह जहसंखं ॥ सोलस उ उ गुणया
लं, उवेय सगसहि सयचउरो॥१६॥ चउतीसं विजएसु, उसहकूमा अहमेरुजंबु
मि॥अहय देवकुराइं,हरिकूम हरिस्सए सही॥१७॥ मागह वरदाम पभा,सं तिञ्च
विजयेसु एरवय भरहे ॥ चउतीसा तिहिं गुणिया, उरुत्तरसयं तु तिञ्चाणं॥१८॥
विजाहर अभिउगिय, सेढीउ उन्नि उन्नि वेअहे ॥ इय चउगुण चउतीसा, ब
त्तीस सयं तु सेढीणं ॥ १९ ॥ चक्की जेयबाइ, विजयाइं इञ्च हुंति चउतीसा ॥ म
ह दह ब पउमाई, कुरूसु दसगंति सोलसगं ॥ २० ॥ गंगा सिंधू रत्ता, रत्त
वई चउ नईउ पत्तेयं ॥ चउदसहिं सहसेहिं, समग्ग वच्चंति जलहिंमि ॥ २१ ॥
एवं अभिंतरिया, चउरो पुण अहवीस सहसेहिं ॥ पुणरवि बप्पन्नेहिं, सहसे
हिं जंति चउ सलिला ॥ २२ ॥ कुरुमझे चउरासी, सहसाइं तहय विजय सो
लससु ॥ बत्तीसाण नईणं, चउदस सहसाइं पत्तेयं ॥ २३ ॥ चउदस सह

स्स गुणिया, अडतिस नइउ विजय मझिल्ला ॥ सीउयाए निवडं, ति तहय
सीयाइ एमेव ॥ २४ ॥ सीया सीउया वि य, बत्तीससहस्सपंचलक्खेहिं ॥ स
वे चउदस लक्खा, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥२५॥ छज्जोयणसकोसे, गंगा
सिंधूण विछरो मूले ॥ दसगुणिउ पज्जंते, इय दु दु गुणणेण सेसाणं ॥ २६ ॥
जोयणसयमुच्चिठा, कणयमया सिहरिचुल्लहिमवंता ॥ रुप्पि महाहिमवंता,
दुसउच्चा रुप्पकणयमया ॥ २७ ॥ चत्तारि जोयण सए, उच्चिठो निसढ नी
लवंतो य ॥ निसढो तवणिज्जमउ, वेरुलियो नीलवंतो य ॥ २८ ॥ सवे वि प
वयवरा, समयखित्तम्मि मंदर विहुणा ॥ धरणितले मुवगाढा, उस्सेय चउब्भा
यम्मि ॥ २९ ॥ खंडाई गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदीवस्स ॥ संघयणी सम्म
त्ता, रइया हरिभद्दसूरीहिं ॥ ३० ॥ इति श्रीलघुसंग्रहणीप्रकरणं संपूर्णम् ॥

॥ अथ बृहत्संग्रहणीसूत्राणि ॥ नमिउं अरिहंताई, ठिइ भवणो गाहणा य प

तेयं ॥ सुरनारयाण वुत्तं, नरतिरियाणं विणा भवणं ॥ १ ॥ उववाय चवण विरहं, संखं इगसमइअं गमागमणे ॥ दसवाससहस्साइं, भवणवईणं जहन्नठिई ॥ २ ॥ चमर बलि सार महिअं, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारि ॥ पलियाइं सड्ढाइं, सेसाणं नवनिकायाणं ॥ ३ ॥ दाहिण दिवड्ढपलिअं, उत्तरओ हुंति दुन्नि देसूणा ॥ तद्देवि मद्ध पलिअं, देसूणं आउमुक्कोसं ॥ ४ ॥ वंतरिआण जहन्नं, दसवाससहस्स पलिअमुक्कोसं ॥ देवीणं पलिअद्धं, पलिअं अहियं ससिरवीणं ॥ ५ ॥ लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिअमेएसिं ॥ ठिइ अद्धं देवीणं, कमेण नक्खत्तताराणं ॥ ६ ॥ पलिअद्धं चउभागो, चउ अडभागाहिगा उ देवीणं ॥ चउजुअले चउभागो, जहन्नमडभाग पंचमए ॥ ७ ॥ दोसाहि सत्तसाहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक्क महिय मित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीस णुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिइ जिट्ठा ॥

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलिअ महियं च ॥ ए ॥ दोसाहि सत दस चउद
स, सत्तर अयराइं जा सहस्सारो ॥ तप्परउ इकिक्कं, अहिअं जा णुत्तर चउके
॥ १० ॥ इगतीससागराइं, सवठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥ परिगहिआणिअ रा
णिय, सोहम्मीसाणदेवीणं ॥ ११ ॥ पलिअं अहिअं च कमा, ठिई ज
हन्ना इअ उक्कोसा ॥ पलिआइं सत्त पन्ना,स तहय नव पंचवन्ना य ॥ १२ ॥
पण छ च्चउ चउ अठ य, कमेण पत्तेअ मग्गमहिसीउ ॥ असुर नागाइ वंतर,
जोइस कप्पदुगिंदाणं ॥ १३ ॥ दुसुतेरस दुसुबारस, छ प्पण चउ चउ दुगे दु
गे अ चउ ॥ गेविज्ज णुत्तरे दस, बिसठि पयरा उवरि लोए ॥१४॥ सोहम्मुक्को
सठिइ, निअपयरविहत्त इच्छसंगुणिआ ॥ पयरुक्कोस ठिइउ, सवत्थजहन्नउ पलि
यं ॥ १५ ॥ सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इच्छसंगुणिउ ॥ हिठिल्लठिइस
हिउ, इच्छियपयरम्मि उक्कोसा॥ १६ ॥ सोमजमाणं स तिन्ना,ग पलिय वरुणस्स

देसूणा॥वेसमणे दो पलिया, एस ठिई लोगपालाणं॥१७॥कप्पस्स अंतपयरे, निय कप्पवडिंसया विमाणाउ ॥ इंदनिवासा तेसिं, चउदिसिं लोगपालाणं ॥ १८ ॥ (सुरेसु ठिइदारं सम्मत्तं, एएसु चेव भवणदारं भणइ) असुरा नाग सुवन्ना, वि ज्जू अग्गी य दीव उदहीअ ॥ दिसि पवण थणिय दसविह, भवणवई तेसु दु दु इंदा ॥ १९ ॥ चमरे बलीअ धरणे, भूयाणंदे अ वेणुदेवे य ॥ तत्तो अ वेणु दाली, हरिकंत हरिस्सहे चेव ॥ २० ॥ अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुन्नविसि ठे तहेव जलकंते ॥ जलपह तह अमिअगई, मिअवाहण दाहिणुत्तरउ॥२१॥ वेलंबेअ पभंजण, घोस महाघोस एसि मन्नयरो ॥ जंबुद्दीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं॥२२॥चउतीसा चउचत्ता, अठत्तीसा य चत्तपंचण्हं॥पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणाउ ॥ २३ ॥ चउचउलक्खविहूणा, तावइआ चेव उत्तरदिसा ए ॥ सव्वे वि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२४॥ चत्तारियकोडीउ, लक्ख

बच्चेव दाहिणे नवणा ॥ तिस्रेव य कोडीन, लरका बावढि उत्तरन ॥ २५ ॥ रय
णाए हिठुवरिं, जोयणसहसं विमुत्तु ते नवणा ॥ जंबुद्दीवसमा तह, संख म
संखिज्ज विच्चारा ॥ २६ ॥ चूडामणिफणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्से
अ ॥ गय मयर वद्धमाणे, असुराईणं मुणसु चिंधे ॥ २७ ॥ असुरा काला ना
गु द, हि पंडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया ॥ कणगाज विज्जु सिहि दी, व अ
रुण, वाऊ पिअंगुनिज्ञा ॥ २८ ॥ असुराणवज्झरत्ता, नागो दहि विज्जु दीव सि
हि नीला ॥ दिसि थणिअ सुवन्नाणं, धवला वाऊण संकरुई ॥ २९ ॥ चउस
ठि सठि असुरे, बच्च सहस्साइं धरणमाईणं ॥ सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा
आयरक्खाय ॥ ३० ॥ रयणाए पढमजोयण, सहसे हिठुवरिं सय सय विहू
णे ॥ वंतरियाणं रम्मा, नोमा नगरा असंखिज्जा ॥ ३१ ॥ बाहिंवट्टा अंतो, च
उरंस अहोअ कन्नियायारा ॥ नवणवईणं तह वं,तराण इंदनवणाउ नायवा ॥

॥ ३२ ॥ तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ॥ निच्चं सुहिया पमुइ
या, गयंपि कालं न याणंति ॥३३॥ ते जंबुदीव भारह, विदेह सम गुरु जहन्न
मज्झिमगा ॥ वंतर पुण अट्ठविहा, पिसायभूया तहा जक्खा ॥ ३४ ॥ रक्खस
किंनर किंपुरिसा,महोरगा अट्ठमा य गंधव्वा ॥ दाहिणउत्तरभेआ,सोलस तेसिं
इमे इंदा ॥ ३५ ॥ काले अ महाकाले, सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे अ ॥ तह चेव
माणिभद्दे, भीमे अ तहा महाभीमे ॥ ३६ ॥ किंनर किंपुरिस सपुरिस, महापु
रिस तहय अइकाए ॥ महकाए गीअरई, गीअजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ३७ ॥
चिंधं कलंब सुलसे, वड खट्टंगे असोग चंपयए ॥ नागे तुंबरुअच्चए, खट्टंगवि
वज्जिया रुक्खा॥३८॥जक्ख पिसाय महोरग, गंधव्वा साम किंनरा नीला ॥रक्खस
किंपुरिसा वि अ,धवला भूआ पुणो काला॥३९॥ अणपन्नी पणपन्नी, इसिवा
इ अ भूअवाइए चेव ॥ कंदी अ महाकंदी,कोहंडे चेव पयए अ॥४०॥इयपढम

जोयणसए, रयणाए अठ वंतरा अवरे ॥ तेसु इह सोलसिंदा, रुअग अहो
दाहिणुत्तरउ ॥ ४१ ॥ संनिहिए सामाणे, धाइ विहाए इसिय इसिवाले ॥ ई
सर महेसरे विय, हवइ सुवछे विसाले य ॥ ४२ ॥ हासे हास रईविय, सेएय
भवे तहा महासेए ॥ पयगे पयगवईविय, सोलसइंदाण नामाइं॥४३॥सामाणि
याण चउरो, सहस्स सोलसय आयरक्काणं ॥ पत्तेयं सबेसिं, वंतरवइ ससि
रवीणं च ॥ ४४ ॥ इंद सम तायतीसा, परिसतिया रक्कलोगपाला य ॥ अणि
य पइण्णा अभिउगा, किब्बिसं दस भवण वेमाणी॥ ४५ ॥ गंधव नट्ट हय ग
य, रह भड अणियाणि सब इंदाणं ॥ वेमाणियाण वसहा,महिसा य अहोनि
वासीणं ॥ ४६ ॥ तित्तीस तायतीसा, परिसतिआ लोगपाल चत्तारि ॥ अणि
आणि सत्त सत्तय, अणियाहिव सबइंदाणं ॥ ४७ ॥ नवरं वंतर जोइस, इं
दाण न हुंति लोगपालाउ ॥ तायत्तीसभिहाणा, तियसावियतेसिं नहु हुंति ॥

॥ ४८ ॥ समभूतलाउ अठहिं, दसूण जोयण सएहिं आरभ्भ ॥ उवरि दसुत्तर
जोयण, सयम्मि चिठंति जोइसिया ॥ ४९ ॥ तब रवी दस जोयण, असीइ
तडुवरि ससी य रिक्खेसु ॥ अह भरणि साइ उवरिं, बहिमूलो ब्भिंतरे अभिई
॥ ५० ॥ तार रवि चंद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥ सगसय न
उय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ॥ ५१ ॥ इक्कारस जोयणस
य, इगवीसि क्कारसाहिया कमसो ॥ मेरुअलोगाबाहिं, जोइसचक्कं चरइ ठाइ
॥ ५२ ॥ अद्धकविठागारा, फलिहमया रम्म जोइस विमाणा ॥ वंतरनयरेहिं
तो,संखिज्जगुणा इमे हुंति॥५३॥ताइं विमाणाइं पुण,सव्वाइं हुंति फालिहमयाइं॥
दगफालीहमया पुण; लवणे जे जोइस विमाणा ॥५४॥ जोयणिगसठि भागा,
छप्पन्नडयाल गाउ इगद्धं ॥ चंदाइ विमाणाया,म विहरा अद्ध मुच्चत्तं ॥५५॥
पणयाल लक्ख जोयण, नरखित्तं तच्छिमे सया भमिरा ॥ नरखित्ताउ बहिं

पुण, अङ्गपमाणा ठिआ निच्चं ॥ ५६ ॥ ससिरविगहनक्खत्ता, ताराउ हुंति
जहुत्तरं सिग्घा ॥ विवरीयाउ महद्धीअ,विमाणवहगा कमेणेसिं ॥ ५७ ॥ सोल
स सोलस अड चउ, दो सुरसहसा पुरोय दाहिणउ ॥ पच्छिम उत्तर सीहा,
हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ५८ ॥ गहअठासी नक्खत, अडवीसं तार कोडि
कोडीणं ॥ छासठिसहस नवसय, पणसत्तरि एगससि सिन्नं ॥ ५९ ॥ कोडा
कोडी सन्नं, तरंतु मन्नंति खित्त थोवतया ॥ केई अन्ने उस्से, हंगुलमाणेण ता
राणं ॥ ६० ॥ किण्हं राहुविमाणं, निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ॥ चउरंगुल
मप्पत्तं, हिठा चंदस्स तं चरइ ॥ ६१ ॥ तारस्स य तारस्स य, जंबुद्दीवम्मि अं
तरं गुरुयं ॥ बारस जोयण सहसा, दुन्निसया चेव बायाला ॥ ६२ ॥ निस
ढो य नीलवंतो,चत्तारिसयउच्च पंचसय कूडा ॥ अद्धंउवरिं रिक्खा,चरंति उभय
ठ बाहाए ॥ ६३ ॥ छावठा दुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥ निव्वाघा

ए गुरु लहु, दोगाउय धणुसया पंच ॥६४॥ माणुसनगाउ बाहिं, चंदासूरस्स सूरचंदस्स ॥ जोयणसहस्स पन्ना,स णूणगा अंतरं दिठं ॥ ६५ ॥ ससिससि रविरवि साहिय, जोयण लक्खेण अंतरं होइ ॥ रविअंतरिया ससिणो, ससि अंतरिया रवी दित्ता ॥ ६६ ॥ बहियाउ माणुसुत्तर, चंदा सूरा अवठिउज्जोया ॥ चंदा अभीयजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥ उध्धार सागरदुगे, सढे समएहिं तुल्ल दीवुदही ॥ दुगुणा दुगुण पवित्थर, वलयागारा पढमवज्जं ॥ ॥ ६८ ॥ पढमो जोयण लक्खं, वट्टो तं वेढिउ ठिया सेसा ॥ पढमो जंबुद्दीवो, सयंभुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥ जंबू धायइ पुक्कर, वारुणिवर खीरघय खो य नंदिसरा ॥ अरुण रुणवाय कुंडल, संख रुयग भुयग कुसकुंचा ॥ ७० ॥ पढमे लवणोजलहि, बीए कालो य पुक्कराईसु ॥ दीवेसु हुंति जलही, दीवसमाणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥ आभरण वत्थ गंधे, उप्पल तिलएय पउम निहि रय

ए ॥ वासहर दह नईओ,विजया वक्खार कप्पिंदा ॥ ७२॥ कुरु मंदर आवासा,
कूडा नक्खत्त चंद सूरा य ॥ अन्ने वि एवमाइ, पसब वत्थूण जे नामा ॥ ७३ ॥
तं नामा दीवु दही, तिपडोयायार हुंति अरुणाई ॥ जंबू लवणाईया, पत्तेयं ते
असंखिज्जा ॥ ७४ ॥ ताणं तिम सूरवरा, वभास जलही परं तु इक्किक्का ॥ देवे
नागे जक्खे, भूए य सयंभुरमणे य ॥७५॥ वारुणिवर खीरवरो, घयवर लवणो
य हुंति भिन्नरसा ॥ कालो य पुक्खरोदहि, सयंभुरमणो य उदगरसा ॥ ७६ ॥
इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमच्छा ॥ पण सग दस जोयण
सय, तणु कमा थोवसेसेसु ॥ ७७ ॥ दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणम्मि
धायईसंडे ॥ बारससि बारस रवि, तप्पभिइ निदिठ ससिरविणो ॥ ७८ ॥
तिगुणा पु विल्ल जुया, अणंतराणंतरंमि खित्तंम्मि॥ कालोए बायाला, बिसत्तरी
पुक्खरद्धंमि ॥ ७९ ॥ दो दो ससि रवि पंती, एगंतरिया छसठि संखाया ॥ मेरुं

पयाहिणंता, माणुसखित्ते परियडंति ॥ ८० ॥ छप्पन्नं पंतीउ, नक्खत्ताणं तु मणु
यलोगंमि ॥ छावट्ठी छावट्ठी, होई इक्किक्किया पंती ॥ ८१ ॥ एवं गहाइणो विहु,
नवरं धुव पासवत्तिणो तारा ॥ तंचिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिब्भमंति
॥ ८२ ॥ चउयाल सयं पढमि, ल्लयाए पंतीए चंदसूराणं ॥ तेणपरं पंतीउ, चउ
रुत्तरियाइ वुड्ढीणं ॥ ८३ ॥ बावत्तरि चंदाणं, बावत्तरि सूरियाण पंतीए ॥ पढमा
ए अंतरं पुण, चंदाचंदस्स लक्ख दुगं ॥ ८४ ॥ जो जावइ लक्खाइं, वित्थरउ सा
गरो य दीवो वा ॥ तावइआउय तहिं, चंदासूराण पंतीउ ॥८५॥ पनरस चुल
सीइ सयं, इह ससि रवि मंडलाइं तक्खित्तं ॥ जोयण पणसय दसहिय, भागा
अडयाल इगसट्ठा ॥ ८६ ॥ तिसिइगसट्ठा चउरो, इगइगसट्ठस्स सत्तभइय
स्स ॥ पणतीसं च दु जोयण, ससिरविणो मंडलं तरयं ॥ ८७ ॥ पणसट्ठी नि
सढंमिय, तत्तिय बाहा दु जोयणं तरिया ॥ एगुणवीसं च सयं, सूरस्स य मंड

ला लवणे ॥ ८८ ॥ मंमलदसगं लवणे, पणगं निसढम्मि होइ चंदस्स ॥ मंमल अंतरमाणं, जाण पमाणं पुरा कहियं॥ ८९ ॥ ससिरविणो लवणंमि य,जोयण सय तिन्नि तीस अहियाइं ॥ असिई तु जोयणसयं, जंबुद्दीवम्मि पविसंति ॥ ९० ॥ गह रिक्ख तार संखं, जत्थेच्छसि नाउ मुदहिदीवे वा ॥ तस्ससिहि एग ससिणो, गुणसंखं होइ सव्वग्गं ॥ ९१ ॥ बत्तीसठावीसा,बारस अड चउ विमाण लक्खाइं ॥ पन्नास चत्त छ सहस, कमेण सोहम्म माईसु ॥ ९२ ॥ छु सु सयचउ छसु सयतिग, मिगारसहियं सयं तिगेहिठा ॥ मझे सत्तुत्तरसय, मु वरि तिगेसयसुवरि पंच ॥ ९३ ॥ चुलसीइ लक्ख सत्ता,णवइ सहस्सा विमाण तेवीसं ॥ सव्वग्ग मुड्ढलोगं, मिंदया बिसठि पयरेसु ॥ ९४ ॥ चउदिसि चउपं तीउ, बासठिविमाणिया पढमपयरे ॥ उवरि इक्किक्कहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक्कं ॥ ९५ ॥ इंदयवट्टा पंतिसु, तोकमसो तंस चउरसा वट्टा ॥ विविहा पुप्फवकि

सा, तयंतरे मुत्तुं पुवदिसिं ॥ ९६ ॥ वट्टं वट्टेसुवीर, तंसं तंसस्स उवरिमं होइ ॥
चउरंसे चउरंसं, उद्धंतु विमाण सेढीए ॥ ९७ ॥ सवे वट्टविमाणा, एगडुवारा
हवंति नायवा ॥ तिन्निय तंसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥ ९८ ॥ आवलि
य विमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥ संखिज्जमसंखिज्जं, जणियं पु
प्फावकिन्नाणं ॥ ९९ ॥ एगं देवे दीवे, डुवे य नागोदही सुबोधवे ॥ चत्तारि ज
ख्कदीवे, नूय समुद्देसु अठेव ॥ १०० ॥ सोलस सयंनुरमणे, दीवेसु पइठिया
य सुरनवणा ॥ इगतीसं च विमाणा, सयंनुरमणे समुद्दे य ॥ १०१ ॥ अन्नंत
सुरहिगंधा, फासे नवणीय मउय सुह फासा ॥ निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपहा ते
विरायंति ॥ १०२ ॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणउ आवली मुणेयवा ॥ जे पुण
उत्तर इंदा , उत्तरउ आवली मुणे तेसिं ॥ १०३ ॥ पुवेण पच्छिमेण य, जे वट्टा
तेवि दाहिणिल्लस्स ॥ तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति डुण्हंपि ॥१०४॥ पुवे

ए पच्छिमेण य, सामण्णा आवली मुणेयव्वा ॥ जेपुण वट्ट विमाणा, मज्झिल्ला दा
हिणल्लाणं ॥ १०५ ॥ पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥ चउरंस
विमाणाणं, चउद्दिसिं वेइया होइ ॥ १०६ ॥ जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स
वेइया होइ ॥ पागारो बोधव्वो, अवसेसेहिंतु पासेसु ॥१०७॥ पढमं तिम पयरा
वलि, विमाण मुहनूमि तस्स मासऊं ॥ पयरगुण मिठकप्पे, सव्वग्गं पुप्फकि
ण्णयरे ॥ १०८ ॥ इगदिसि पंति विमाणा, तिविनत्ता तंस चउरसा वट्टा ॥ तंसे
सु सेसमेगं, खिव सेस डुगस्स इक्किक्कं ॥ १०९ ॥ तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासि
तिगंपि चउगुणं काउं ॥ वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कप्पे ॥ ११० ॥
कप्पेसुय मिय महिसो, वराह सीहाय छगल सालूरा ॥ हय गय नुयंग खग्गी,
वसहा विडिमाइं चिंधाइं ॥ १११ ॥ चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सठी
य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दस सहस्सा आयरक्क चउगुणिया ॥

॥ ११२ ॥ डुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तडुनयं च कमो ॥ सुरन्न
वणपइहाणं, आगास पइहिया उवरिं ॥ ११३ ॥ सत्तावीस सयाइं, पुढवीपिं
मो विमाण उच्चत्तं ॥ पंचसया कप्पडुगे, पढमे तत्तोय इक्किक्कं ॥ ११४ ॥ हायइ
पुढवीसु सयं, वड्ढइ नवणेसु डु डु डु कप्पेसु ॥ चउगे नवगे पणगे, तहेव जाणु
त्तरेसु नवे ॥ ११५ ॥ इगवीस सया पुढवी, विमाण मिक्कारसेवय सयाइ ॥ ब
त्तीस जोयणसया, मिलिया सव्वह नायव्वा ॥ ११६ ॥ पण चउ ति डु वस्स वि
मा,ण सधय डुसु डुसुय जा सहस्सारो ॥ उवरि सिय नवण वंतर, जोइसि
याणं विविहवस्सा ॥ ११७ ॥ रविणो उदयबंतर, चउणवइसहस पणसय ब
वीसा ॥ बायाल सहिनागा, कक्कड संकंति दियहंमि ॥ ११८ ॥ एयंमि पुणो
गुणिए, तिपंच सग नवहि होइ कममाणं ॥ तिगुणंमि य दोलक्खा, तेसीइ स
हस्स पंचसया ॥ ११९ ॥ असिई ब सहिनागा, जोयण चउलक्ख बिसतरि

सहस्सा ॥ छच्चसया तेत्तीसा, तीसकला पंचगुणियम्मि ॥ १७० ॥ सत्तगुणे छ लक्खा, इगसठिसहस्स छ सय छासीया ॥ चउपन्नकला तह नव, गुणंमि अ डलक्ख सट्ठाउ ॥ १७१ ॥ सत्तसया चत्ताला, अठारसकला य इयकमा चउरो ॥ चंमा चवला जयणा, वेगाय तहा गइ चउरो ॥ १७२ ॥ इत्थयगई चउहिं, जयणयरिं नाम केइ मन्नंति ॥ एहिं कमेहिं मिमाहिं, गईहिं चउरो सुरा कमसो ॥१७३॥ विक्खंभं आयामं, परिहिं अभिंतरिं च बाहिरियं ॥ जुगवं मिणंति छम्मा, स जाव न तहावि ते पारं ॥ १७४ ॥ पावंति विमाणाणं, केसिंपि हु अहव तिगुणियाईए ॥ कमचउगे पत्तेयं, चंमाईगईउ जोइज्जा ॥ १७५ ॥ जोयण लक्ख परमाणं, निमेस मित्तेण जाइ जो देवा ॥ छम्मासे णय गमणं, एगं रज्जू जिणा बिंति ॥ १७६ ॥ तिगुणेण कप्पचउगे, पंचगुणेणं तु अठसु मुणिज्जा ॥ गेविज्जे सत्तगुणेणं, नवगुणे णुत्तरचउक्के ॥ १७७ ॥ पढमपयरम्मि पढमे, कप्पे

उडुनामइंदयविमाणं ॥ पणयाल लस्कजोयण, लस्कं सव्वुवरि सव्वठं ॥ १२८ ॥ उडु चंद रयणवग्गू, वीरिय वरुणे तहेव आणंदे॥बंन्ने कंचण रुइन्ने, चंद अरुणे य वरुणे य ॥ १२९ ॥ वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥ मेहे अग्घ हलिद्दे, नलिणे तहलोहियक्खेय ॥ १३० ॥ वइरे अंजण वरमा,ल रिठ देवेय सोम मंगलए ॥ वलन्नद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णंदियावत्ते ॥ १३१ ॥ आ नंकरेय गिद्धी, केऊ गरुले य होइ बोधव्वे ॥ बंन्ने बंन्नहिए पुण, बंभुत्तर लंत ए चेव ॥१३२॥ महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणएय बोधव्वे ॥ पुप्फे लंका र आरण, तहा विय अच्चुए चेव ॥ १३३ ॥ सुदंसण सुपडिबद्धे ॥ मणोरमे चे व होइ पढमतिगे ॥ तत्तोय सव्वन्नद्दे, विसालए सोमणे चेव ॥१३४॥ ॥ सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे ॥ सव्वठ सिद्धि नामे, इंदया ए व बासठी ॥ १३५ ॥ पणयालीसं लस्का, सीमंतय माणुसं उडु सिवंच ॥ अपयठाणो

सव,ठ जंबुद्दीवो इमं लक्खं ॥ १३६ ॥ अह नागा सग पुढवी,सु रज्जु इक्किक्क
तह य सोहम्मे ॥ माहिंद लंत सहसा, र अच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥ १३७ ॥
॥ ७ ॥ सुरेसु नवण दारं सम्मत्तं ॥ इण्हिं उगाहणा दारं नण्णइ ॥ ॥ ॥
नवण वण जोइ सोह,म्मीसाणे सत्तहब तणुमाणं ॥ ड ड ड चउक्केगे वि, जणु
त्तरे हाणि इक्किक्कं ॥१३८॥ कप्पडुग ड ड ड चउगे,नवगे पणगे य जिठविइ अ
यरा ॥ दो सत चउदठारस, बावीसिगतीस तित्तीसा ॥ १३९ ॥ विवरे ताणि
क्कूणे, इक्कारसगाउ पाडिए सेसा ॥ हिक्कारसनागा,अयरे अयरे समहियम्मि
॥१४०॥ चयपुव्वसरीराउ, कमेणएगुत्तराइ वुड्ढीए ॥ एवंठिईविसेसा, सणंकुमारा
इ तणुमाणं ॥ १४१ ॥ नवधारणिज्ज एसा, उत्तरविउवि जोयणालक्खं ॥ गेविज्ज
णुत्तरेसु, उत्तरवेउविआ नत्ति ॥१४२॥ साहाविय वेउविय, तणू जहन्ना कमेण
पारंने ॥ अंगुल असंख नागो, अंगुल संखिज्ज नागो य ॥१४३॥७॥ सुरेसु उ

गाहणा दारं सम्मत्तं; इसिहं विरहकालोववाय उवट्टणाणं दारं नसइ ॥ ७ ॥
सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारसमुहुत्त उक्कोसा ॥ उववायविरहकालो, अह नव
णाईसु पत्तेयं ॥ १४४ ॥ नवण वण जोइ सोह,म्मी साणेसू मुहुत्त चउवीसं ॥ तो
नवदिण वीसमुहू, बारसदिण दस मुहुत्ता य ॥ १४५॥ बावीस सद्धदीहा, पणया
ल असीइ दिणसयंतत्तो ॥ संखिज्जा उसु मासा, उसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥
॥१४६॥ वासाणसया सहसा, लस्का तह चउसु विजयमाईसु ॥ पलियाअसं
खन्नागो, सवठे संखन्नागो य॥१४७॥सवेसिंपि जहन्नो,समउ एमेव चवणविरहो
वि ॥ इग उ ति संख मसंखा, इग समए हुंति अ चवंति ॥१४८॥ नरपंचिंदिय
तिरिया, णुप्पत्तीसुरनवे पज्जुत्ताणं ॥ अवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मंतु
॥४९॥ नर तिरिअसंखजीवी, सवे नियमेण जंति देवेसु ॥ निय आउअसम ही
णा, उएसु ईसाण अंतेसु ॥ १५० ॥ जंति समुच्छिम तिरिया, नवण वणेसु नजो

इमाईसु ॥ जं तेसिं उववाओ, पलिया संखंस आउसु॥१५१॥बालतवे पडिबद्धा,
उक्कड रोसा तवेण गारविया ॥ वेरेणय पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जायंति॥१५२॥
रज्जुगह विस भक्खण, जल जलण पवेस तण्ह छुह दुहओ ॥ गिरिसिर पडणा
उ मुया, सुहभावा हुंति वंतरिया ॥१५३॥ तावस जा जोइसिया, चरग परिव्वा
य बंभलोगो जा ॥ जा सहसारो पंचिं, दितिरिअ जा अच्चुअ सड्ढा ॥ १५४ ॥
जइ लिंगमिच्छदिठि, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं ॥ पयमवि असद्दहंतो, सुत्तत्थं
मिच्छदिठीओ॥१५५॥ सुत्तं गणहररइअं,तहेव पत्तेयबुद्धरइअं च ॥ सुयकेवलि
णा रइअं, अभिन्न दस पुव्विणा रइअं ॥ १५६॥ छउमत्थ संजयाणं, उववा उक्को
सओ अ सव्वठे ॥ तेसिं सड्ढाणंपिअ, जहन्नओ होइ सोहम्मे ॥ १५७ ॥ लंतंमि
चउदपुव्विस, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥ एसिं उववाय विही, नियकिरियठिया
ण सव्वोवि ॥१५८॥ वज्जरिसहनारायं, पढमं बीअं च रिसहनारायं ॥ नारायम

ध्नाराय कीलिया तह्य बेवहं ॥ १५९ ॥ एए ब स्संघयणा, रिसहोपट्टोय कीलिया वज्जं ॥ उन्नउमक्कडबंधो, नाराउ होइ विन्नेउ ॥१६०॥ ब गप्नतिरीनराणं, संमुच्छिम पणिंदि विगलबेवहं ॥ सुरनेरइया एगिं,दियाय सवे असंघयणा ॥ ॥१६१॥ बेवहेण उगम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाईसु ॥ चउसु ड ड कप्पवुढ्ढी, पढमेणं जावसिध्दीवि ॥१६२॥ समचउरंसे नग्गो,ह साइ वामणाय खुज्ज हुंमे य॥ जीवाण ब संठाणा, सवब सुलस्कणं पढमं ॥१६३ ॥ नाहीए उवरि बिछ्यं, तई अमहो पिठि उयर उरवज्जं ॥ सिर गीव पाणी पाए, सुलस्कणं तं चउबं तु ॥ ॥१६४॥ विवरीयं पंचमगं, सवब अलस्कणं नवे बठं ॥गप्नय नर तिरिय बहा, सुरा समा हुंमया सेसा॥१६५॥इतिदेवानां गतिद्वारं, अधुना आगतिद्वार माह ॥७॥ जंति सुरा संखाउ य, गप्नय पज्जत्त मणुयतिरिएसु॥पज्जत्ते सुय बायर, नू दग पत्तेयग वणेसु ॥१६६॥ तबवि सणं कुमारं, प्पन्निई एगिंदिएसु नो जंति ॥

आणय पमुहा चविउं, मणुए सुचेव गछंति ॥१६७॥ दोकप्प कायसेवी, दो दो
दो फरिस रूवसद्देहिं ॥ चउरो मणेणु वरिमा, अप्पवियारा अणंतसुहा॥१६८॥
जं च कामसुहं लोए, जं च दिव्वं महासुहं ॥ वीयराय सुहस्सेय, णंतन्नागं पि
नग्घई ॥१६९॥ उववाउ देवीणं,कप्पज्जुगं जा परो सहस्सारा ॥ गमणागमणं न
ही, अच्चुय परउ सुराणंपि ॥१७०॥ तिपलिय तिसार तेरस, साराकप्प ज्जुग त
इय लंत अहो ॥ किब्बिसिय नहुंति उवरिं,अच्चुय परउ भिउगाई ॥१७१॥ अ
परिग्गह देवीणं, विमाण लरका उ हुंति सोहम्मे ॥ पलियाई समया हिय, वि
इजासिं जाव दसपलिया ॥१७२॥ ताउ सणं कुमारा, एवं वढंति पलिय दस
गेहिं ॥ जा वंभ सुक्क अणय, आरण देवाण पन्नासा॥१७३॥ईसाणे चउलरका,
साहिय पलियाइ समय अहियठिई ॥ जा पनर पलिय जासिं, ताउ माहिंददे
वाणं ॥१७४॥ एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग वुढीए ॥ लंत सह

सार पाणय, अच्चुय देवाण पणपन्ना ॥१७५॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाउ ॥ नवण वण पढम चउले, सजोइस कप्पडुगे तेऊ ॥ १७६॥ कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥ कणगाभ पउमकेसर, वण्णाइसु तिसु उवरि धवला॥१७७॥दसवास सहस्साइं,जहन्नमाउं धरंति जे देवा ॥ तेसिं चउथा हारो, सत्तहि थोवेहि ऊसासो ॥१७८॥ आहि वाहि विमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो ॥ पाणू सत्तइमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥१७९॥ लवसत्तहत्तरीए,होइ मुहुत्तो इमम्मि ऊसासा॥सग तीस सय तिहुत्तर,तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥१८०॥ लक्खं तेरस सहसा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥ पक्खेहिं ऊसासे, वास सहस्सेहिं आहारो ॥१८१॥ दसवास सहस्सु वरिं, समयाई जाव सागरं ऊणं॥दिवसमुहुत्त पहुत्ता,आहारूसास सेसाणं॥१८२॥सरिरेणोउयाहारो, तयाइफासेण लोमआहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होइ ना

यवो ॥१८३॥ उयाहारा सव्वे, अपजत्त पजत्त लोमआहारो ॥ सुरनिरय इगिंदिवि
णा, सेसनवत्था सपरकेवा ॥१८४॥ सच्चित्ता चित्तोनय, रूवो आहारसव्व तिरि
आणं ॥ सव्वनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अच्चित्तो ॥१८५॥ आनोगाणा नो
गा, सव्वेसिं होइ लोम आहारो ॥ निरयाणं अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणु
न्नो ॥१८६॥ तह विगल नारयाणं, अंतमुहुत्ता सहोइ उक्कोसो ॥ पंचिंदि तिरि
नराणं, साहाविउ उठ अठमउ ॥१८७॥ विग्गहगइ मावन्ना, केवलिणो समु
हया अजोगी य ॥ सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥१८८॥ केस
ठि मंस नह रो,म रुहिर वसचम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥ रहिया निम्मल देहा, सुगं
ध निस्सास गय लेवा ॥१८९॥ अंतमुहुत्तेणं चिय, पजत्ता तरुण पुरिस संका
सा ॥ सव्वंगनूषणधरा, अजरानिरुया समा देवा ॥१९०॥ अणि मिस नयणा
मणक, ज्ज साहणा पुप्फदाम अमिलाणा ॥ चउरंगुलेण नूमि, न छिबंति सुरा

जिणा बिंति ॥१९१॥ पंचसुजिण कल्लाणे, सु चेव महरिसि तवाणु भावाउ ॥
जम्मंतरनेहेण य, आगछंति सुरा इहयं ॥१९२॥ संकंति दिव्वपेमा, विसय पस
त्ता समत्त कत्तव्वा ॥ अणहीण मणुय कज्जा, नरभव मसुहं न इंति सुरा॥१९३॥
चत्तारि पंचजोयण,सयाइ गंधोय मणुयलोगस्स॥ उड्ढं वच्चइ जेणं,नहु देवा तेण
आवंति ॥१९४॥ दो कप्प पढम पुढवी,दो दो दो बीय तइयगं चउत्थिं ॥ चउ उ
वरिम उहीए, पासंती पंचमं पुढविं ॥१९५॥ छट्ठी छग्गेविज्जा, सत्तमीयरे अणु
त्तर सुराउ ॥ किंचूण लोगनालिं, असंखदीवुदहि तिरियं तु ॥१९६॥ बहुअर
गं उवरिमगा, उड्ढं सविमाण चूलिय धयाइ ॥ ऊणद्ध सागरे सं, ख जोयणा
तप्पर मसंखा ॥१९७॥ पण वीस जोयण लहु, नारय भवणवण जोइ कप्पाणं ॥
गेविज्ज णुत्तराणय, जहसंखं उहियागारा ॥१९८॥ तप्पागारे पल्लग, पडहग झ
ल्लरि मुहंग पुप्फजवे ॥ तिरिय मणुएसु उहि, नाणाविह संठिउ भणिउ ॥१९९॥

उद्धं भवण वणाणं, बहुगोवेमाणियाण होउद्दी ॥ नारय जोइस तिरियं, नर ति
रियाणं अणेगविहो ॥२००॥ इयदेवाणं भणियं, ठिइ पमुहं नारयाण वुछामि॥
इगतिन्नि सतदससतर, अयर बावीस तित्तीसा ॥२०१॥ सत्तसु पुढवीसु ठिई, जि
ठोवरिमाइ हिठ पुढवीए॥होइ कमेण कणिठा,दसवास सहस्स पढमाए॥२०२॥
नवइ सम सहस लक्का, पुवाणं कोडि अयरदस भागा ॥ इक्किक्क भाग वुद्धी,
जा अयरं तेरसे पयरे ॥२०३॥ इय जिठ जहन्ना पुण,दसवास सहस्स लक्क प
यर ङ्गे ॥ सेसेसु उवरि जिठा, अहो कणिठाउ पइ पुढवी ॥२०४॥ उवरि खि
इ ठिइ विसेसो, सगपयर विहत्तु इछसंगुणिउ ॥ उवरिम खिइ ठिइ सहिउ, इ
छिय पयरम्मि उक्कोसा ॥२०५॥ सत्तसु खित्तज वेयणा, अन्नन्न कयावि पहरणे
हिं विणा ॥ पहरण कया वि पंचसु,तिसु परमाहम्मिय कयावि ॥२०६॥ बंधण
गइ संठाणा, भेया वन्ना य गंध रस फासा ॥ अगुरु लहु सद्द दसहा, असुहा

विय पुग्गला निरए ॥२०७॥नरया दस विह वेयण,सीउ सिण खुह पिवास कं
डूहिं ॥ परवस्सं जरदाहं, भय सोगं चेव वेयंति ॥२०८॥ पण कोडि अठ स
ठी, लक्खा नव नवइ सहस पंचसया ॥ चुलसी अहीयरोगा, छठी तह सत्तमी
नरए ॥२०९॥ रयण प्पह सक्कर पह, वालुय पह पंक पहय धूमपहा ॥ तमप
हा तम तमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥२१०॥ धम्मा वंसा सेला, अंजण
रिठा मघा य माघवई ॥ नामेहिं पुढवीउ, छत्ताई छत्त संठाणा ॥२११॥असीय
बत्तिस अडविस, वीसा अठार सोल अड सहसा ॥ लक्खुवरि पुढवि पिंडो;
घणुदहि घणवाय तणुवाया ॥२१२॥गयणं च पइठाणं, वीस सहस्साइं घणुद
ही पिंडो ॥ घणतणुवाया गासा, असंख जोयण जुया पिंडो ॥२१३॥ न फुसं
तिअलोगं चउ, दिसंपि पुढवीय वलयसंगहिया ॥ रयणाए वलयाणं, छ
ध पंचम जोयणं सढं ॥२१४॥ विक्खंभो घणउदही, घणतणु वायाण होइ

जहसंखं ॥ सत्तिभाग गाऊयं, गाऊयं तह गाउय तिभागो ॥ २१५ ॥ पढम महीवलएसु, खिविज्ज एयं कमेण बीयाए ॥ इ ति चउ पंच छ गुणं, तइया इसु तंपि खिव कमसो ॥ २१६॥ मज्झेचिय पुढवि अहे, घणुदहिपमुहाण पिंरु परिमाणं ॥ भणियं तवो कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ २१७ ॥ तीस पणवीस पणरस, दसतिन्नि पणूण एगलरकाइं ॥ पंचय निरया कमसो, चुलसीइ लरकाइ सत्तसु वि ॥ २१८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्नि ग पयर सव्वि गुणवन्ना ॥ सीमंताई अप्पइ, गणंता इंदया मज्झे ॥ २१९ ॥ सीमंतउछपढमो, बीउ पुण रोरुय त्ति नामेण ॥ रंभो य तछ तइउ, होइ चउछो य उभ्रंतो ॥२२०॥ संभंतमसंभंतो, विभ्रंतो चेव सत्तमो निरउ ॥ अहमउ भं तो पुण, नवमो सीउत्ति णायव्वो ॥२२१॥ चक्कंतणु वुक्कंतो, विकल्लो तह चेव रोरु उ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए, इंदिया एए बोधव्वा॥२२२॥घणिए घणए य तहा,

मणए मणए य होइ नायव्वे ॥ घट्टे तह संघट्टे,जिब्भे अव जिब्भए चेव ॥ २२३ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधव्वे ॥ बीयाए पुढवीए,इक्कारस इंदि
या एए ॥२२४॥ तत्ते तविउ तवणो, तावणो पंचमो य निदड्ढो॥छठो पुण पज्ज
लिउ, उप्पज्जलिउ य सत्तमउ ॥२२५॥ संजलिउ अठमउ,संपज्जलिउ य नवमउ
भणिउ ॥ तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया ए ए ॥२२६॥ आरे तारे मारे, वच्चे
तमए य होइ नायव्वे ॥ खाड खडे खंमखमे,इंदय नरया य चउबीए॥२२७॥ खा
ए तमए य तहा,ऊसे ऊसंधए तहा तिमिसे ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंद
या हुंति ॥ २२८॥ हिमवद्दल लल्लके,तिसिउनिर इंदयाय छठीए ॥ एगो य स
त्तमाए, अपइठाणो उ नामेणं ॥२२९॥ पुव्वेण होइ कालो, अवरेण पइठिउ म
हाकालो॥रोरो दाहिणपासे,उत्तर पासे महारोरो॥२३०॥तेहिंतो दिसि विदिसिं,
विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु

जहसंखं ॥ सत्तिभाग गाऊयं, गाऊयं तह गाउय तिभागो ॥ २१५ ॥ पढम
महीवलएसू, खिविज्ज एयं कमेण बीयाए ॥ छ ति चउ पंच छ गुणं, तइया
इसु तंपि खिव कमसो ॥ २१६॥ मज्झेचिय पुढवि अहे,घणुदहिपमुहाण पिंम प
रिमाणं ॥ भणियं तवो कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ २१७ ॥ तीस
पणवीस पणरस, दसतिन्नि पणूण एगलक्खाइं ॥ पंचय निरया कमसो,
चुलसीइ लक्खाइ सत्तसु वि ॥ २१८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्नि ग
पयर सव्वि गुणवन्ना ॥ सीमंताई अप्पइ, गणंता इंदया मज्झे ॥ २१९ ॥ सी
मंतउब्बपढमो, बीउ पुण रोरुय त्ति नामेण ॥ रंभो य तब तइउ, होइ चउब्बो
य उज्झंतो ॥२२०॥ संभंतमसंभंतो, बिज्झंतो चेव सत्तमो निरउ ॥ अठमउ भं
तो पुण,नवमो सीउत्ति णायव्वो ॥२२१॥ चक्कंतणु वुक्कंतो, विकलो तह चेव रोरु
उ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए, इंदिया एए बोधव्वा॥२२२॥थणिए थणए य तहा,

मणए मणए य होइ नायव्वे ॥ घट्टे तह संघट्टे,जिब्भे अव जिब्भए चेव ॥ २२३ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधव्वे ॥ बीयाए पुढवीए,इक्कारस इंदि
या एए ॥२२४॥ तत्तो तविउ तवणो, तावणो पंचमो य निदड्ढो॥छठो पुण पज्ज
लिउ, उप्पज्जलिउ य सत्तमउ ॥२२५॥ संजलिउ अठमउ,संपज्जलिउ य नवमउ
भणिउ ॥ तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया ए ए ॥२२६॥ आरे तारे मारे, वच्चे
तमए य होइ नायव्वे ॥ खाड खडे खंभखम्भे,इंदय नरया य चउत्थीए॥२२७॥ खा
ए तमए य तहा,झसे झसंधए तहा तिमिसे ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंद
या हुंति ॥ २२८॥ हिमवद्दल लल्लके,तिसिउनिर इंदयाय छठीए ॥ एगो य स
त्तमाए, अपइठाणो उ नामेणं ॥२२९॥ पुव्वेण होइ कालो, अवरेण पइठिउ म
हाकालो॥रोरो दाहिणपासे,उत्तर पासे महारोरो॥२३०॥तेहिंतो दिसि विदिसिं,
विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु

अडयाला ॥२३१॥ बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणाउ हुंति पंतीउ ॥ जा सत्त
मि महि पयरे, दिसि इक्किक्को विदिसि नत्थि ॥२३२॥ इठप्पयरे ग दिसि, संख
अडगुणा चउ विण इग संखा ॥ जह सीमंतय पयरे, एगुणनउया सया तिन्नी
॥२३३॥ अपयठाणे पंचउ, पढमो मुहमंतिमो हवइ भूमी ॥ मुह भूमि समास
ऽं, पयरगुणं होइ सव्वधणं ॥२३४॥ छन्नवइ सय तिवन्ना, सत्तसु पुढवीसु आव
ली निरया ॥ सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहसा ॥ २३५ ॥
तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज विच्छडा यामा, पणयाल लक्ख सीमं,तउय ल
क्खं अपइठाणो ॥२३६॥ हिठा घणो सहस्सा, उप्पिंसे कुठडे सहस्सं तु ॥ मज्झे
सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुस्सिया निरया ॥२३७॥छसु हिठोवरि जोयण,
सहस्स बावन्न सड्ढचरिमाए ॥ पुढवीए निरय रहिय,निरया सेसम्मि सव्वासु
॥२३८॥ बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं ॥ ऊणा रुवु

ए निय पयर, न्नाईयापत्बडंतरयं ॥२३९॥ तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जो यण सहस्सा ॥ रयणा य पत्बडंतर, मेगोचिय जोयण तिन्नागो॥२४०॥ सत्ताण वइ सयाइं, बीयाए पत्बडंतरं होइ ॥ पणहत्तरि तिन्निसया, बारसहस्सा य तइ याए ॥२४१॥ बावठसयं सोलस,सहस्स पंका य दोति न्नागा य॥ अट्ठाइज्जस याइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥ २४२ ॥ बावन्नसड्ढ सहसा,तमप्पन्ना पत्बडंतरं होइ ॥ एगोचिअपत्बडउ, अंतररहिउ तमतमाए ॥ २४३ ॥ पउणठ धणु ब अं गुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥ सेसासु डुगुण डुगुणं, पणधणु सय जावचरि माए ॥२४४ ॥ रयणाय पढम पयरे, हत्तियं देहमाणमणुपयरं ॥ बप्पसंगुल सड्ढा, वुड्ढीजातेरसे पुन्नं ॥२४५॥ जं देहपमाण उवरि, माए पुढवीइ अंतिमे प यरे ॥ तं चिय हिठ्ठि म पुढवी,पढमं पयरम्मि बोधव्वं॥२४६॥तं चेगूणग सगपय र, न्नइयं बीयाइ पयर वुड्ढिन्नवे ॥ तिकर ति अंगुल करसत, अंगूला सटि गु

ए वीसं ॥२४७॥ पणधणु अंगुलवीसं, पणरसधणु दूणिहत्थ सढाय ॥ बासहि धणुहसढा, पण पुढवी पयर वुढिमा ॥२४८॥ इय साहाविय देहो, उत्तर वेउ विउ य तद्दुगुणो ॥ ङविहो वि जहन्न कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥२४९॥ सत्तसु चउवीस मुहू, सग पनरदिणेग ङ चउ बम्मासा ॥ उववाय चवणविरहो, उहे बारस मुहुत्त गुरू ॥२५०॥लहुउ ङहावि समउ,संखा पुण सुरसमा मुणेयवा ॥ संखाउ पजत्त पणिं,दि तिरि नरा जंति निरएसु॥२५१॥ मिञ्चादिहि महारं,न परिगहो तिवकोह निस्सीलो ॥नरयाउयं निबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामो ॥२५२॥ असन्निसरिसिव पक्की, ससीह उरगिं बि जंति जा बहिं ॥ कमसो उक्कोसेणं, सत्तम पुढवी मणुय मञ्चा ॥२५३॥ वाला दाढी पक्की, जलयर नरयागया उ अइक्रूरा ॥ जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमो॥२५४॥दो पढम पुढवि गमणं, बेवहे कीलियाइ संघयणे ॥ इक्किक्क पुढवि वुढी, आइ तिलेसा

उ नरएसु ॥२५५॥ दुसु काऊ तइयाए,काऊ नीला य नील पंकाए ॥ धूमा य
नीलकिण्हा, दुसु किण्ह हुंति लेस्साउ ॥२५६॥ सुर नारयाण ताउ, दव्वल्लेस्सा
अवठिया जणिया ॥ जाव परावत्तीए, पुणएसिं हुंति बल्लेस्सा ॥२५७॥ निर उ
वट्टा गब्भय, पजत्तसंखाउ लद्धिए एसिं ॥ चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ
दिसि सम्मपुहविकमा ॥२५८॥ रयणाएउहि गाउय, चत्तारि अद्ध गुरु लहु क
मेण ॥ पइ पुढवि गाउयद्धं, हायइ जा सत्तमि इगद्धं ॥२५९॥(नरय दारं सम्म
त्तं, मणुयदारं नणइ) ॥ छ॥ गब्भनर ति पलियाऊ,ति गाउ उक्कोस ते जहन्नेणं॥
मुच्छिम डहावि अंत मु,हु अंगुल असंख जागतणू॥२६०॥ बारस मुहुत्त गब्भे,
इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ॥ जम्म मरणे सुसमउ, जहन्नसंखा सुरसमाणा
॥२६१॥ सत्तमि महि नेरइए,तेऊ वाऊ असंख नर तिरिए ॥ मुत्तूण सेसजीवा,
उप्पज्जंति नरजवम्मि॥२६२॥ सुर नेरइ एहिंचिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बल

देवा ॥ चउविह सुर चक्किबला; वेमाणिय हुंति हरि अरिहा ॥ २६३ ॥ हरिणो मणुस्स रयणा,इ हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ॥ जह संभव मुववाउ, हयगय एगिं दि रयणाणं ॥२६४॥ वामपमाणं चक्कं, छत्तं दंडं डुहत्थयं चम्मं ॥ बत्तीसंगुल ख ग्गो, सुवन्न कागिणि चउरंगुलिया ॥२६५॥ चउरंगुलो डुअंगुल, पिहुलोय म णी पुरोहि गय तुरया ॥ सेणावइ गाहावइ, वट्टइ थी चक्कि रयणाइं ॥ २६६ ॥ चउरो आयुज गेहे, भंमारे तिन्नि डुन्नि वेयट्टे ॥ एगं रायगिहम्मिय, नियनयरे चेव चत्तारि ॥२६७॥ नो सप्पे पंमूए, पिंगलए सवरयण महपउमे ॥ कालेय म हाकाले, माणव गया महासंखे ॥२६८॥ जंबुद्दीवे चउरो, सयाइ वीसुत्तराइ उ क्कोसं ॥रयणाइ जहस्सं पुण,हुंति विदेहंमि छप्पन्ना ॥२६९॥ चक्कं धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥ संखो सत्तइमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥ ॥२७०॥संखनरा चउसुगइ,सु जंति पंचसु वि पढम संघयणे॥इग डु ति जा अठ

सयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥२७१॥ वीसि त्थि दस नपुंसग, पुरिसठसयं तु
एग समएणं ॥ सिज्झइ गिहिअन्न सलिं,ग चउदस अठाहिय सयं च॥ २७२ ॥
गुरु लहु मज्झिम दोचउ, अठसयं उड्ढो तिरिय लोए ॥ चउ बावीसठसयं,
दुसमुद्दे तिन्नि सेसजले ॥२७३॥ नरय तिरिया गयादस, नरदेवगईउ वीस अ
ठसयं ॥ दसरयणा सक्कर वा,लुयाउ चउ पंक भू दगउ ॥२७४॥छच्च वणस्सइ
दस तिरि, तिरि त्थि दस मणुय वीस नारीउ ॥ असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी
उ पत्तेयं ॥२७५॥ जोइ दस देविवीसं, विमाणियठसय वीसदेवीउ ॥ तह पुवे
एहिंतो, पुरिसो होऊण अठसयं ॥२७६॥ सेसठभंगएसु, दसदस सिज्झंति एग
समएणं ॥ विरहो छमास गुरुउ, लहु समउ चवणमिह नत्थि ॥२७७॥ अड स
ग छ पंच चउ ति,न्नि दुन्नि इक्कोय सिज्झमाणेसु ॥ बत्तीसाइसुसमया, निरंतरं
अंतरं उवरिं ॥२७८॥ बत्तीसा अडयाला, सठी बावत्तरी य बोधवा ॥ चुलसीई

भ्रवई, इरहियमत्तछुरसयं च ॥२७९॥ पणयाल लरकजोयण, विरकंन्ना सिद्धि सिल फलिह विमला ॥ तछवरि गजोयणंते, लोगंतो तन्न सिद्धठिई ॥ २८० ॥ बहुमज्जदेसन्नाए, अठेवय जोयणाइ बाहिल्लं ॥ चरिमंते सुय तणुई, अंगुलसंखिज्जई न्नागं ॥२८१॥ तिन्निसया तित्तीसा, धणुत्ति न्नागोय कोसबन्नागो ॥ जं परमोगा हणाय, तंते कोसस्स बन्नागो ॥२८२॥ एगा य होइ रयणी, अठेवय अंगुलेहिं साहीया ॥ एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न उगाहणा न्नणिया ॥२८३॥ मणुयदारं समत्तं॥तिरियदारं न्नणइ॥७॥बावीस सग ति दस वा,स सहस गिणि तिदिण बेंदियाईसु॥ बारस वासुण पण दिण,छम्मास तिपलिय ठिई जिठा॥२८४॥ सराहाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्कराय खर पुढवी ॥ इग बार चउदसोलस, ठारस बावीस समसहसा ॥२८५॥ गब्न नुय जलयरो न्नय, गब्नोरग पुव्व कोडि उक्कोसा ॥ गब्नचउप्पय पक्किसु, तिपलिय पलियाअसंखंसो॥२८६॥ पुव्वस्स

उपरिमाणं, सयरि खलु वास कोडि लरकाय॥ छप्पसंच सहस्सा, बोधवा वा
सकोडीणं॥१८७॥ संमुछि पणिंदि थल खयर उरग भूयगा जिठ ठिइ कम
सो॥ वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपस बायाला॥१८८॥ एसा पुढवाई
णं, भव ठिईसंपयंतु कायठिई॥ चउ एगिंदि सु णेया, उसप्पिणीउ असंखिज्जा,
॥१८९॥ ताउ वणंमि अणंता, संखिज्जा वास सहस विगलेसु॥ पंचिंदि तिरि
नरेसु, सत्तठ भवाउ उक्कोसा॥१९०॥ सव्वेसिंपि जहन्ना, अंतमुहुत्तं भवेय का
ए य॥ जोयण सहस्स महियं, एगिंदियदेह मुक्कोसं॥ १९१॥ बि ति चउरिंदि
सरीरं, बारस जोयण तिकोस चउकोसं॥जोयण सहसपणिंदिय, उहे वुछं विसेसं
तु॥१९२॥अंगुल असंखभागो, सुहुम निगोउ असंख गुणवाऊ॥तोअगणितउ
आऊ, तत्तो सुहुमा भवे पुढवी॥१९३॥तो बायर वाउ गणी, आऊ पुढवी निगोय
अणुकमसो॥पत्तेयवणसरीरं, अहियं जोयणसहस्सं तु॥१९४॥उस्सेहंगुलजोय

ए,सहस्समाणे जलासए नेयं॥तं वल्लि पउम पमुहं,अउ परं पुढविरूवंतु॥२९५॥
बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयणं भमरो ॥ मुछिम चउपयभुय गुर
ग, गाऊधणु जोयण पहुत्तं ॥२९६॥ गप्भ चउप्पय छग्गा, उयाइं भुयगाउ गाउ
य पहुत्तं ॥ जोयण सहस्स मुरगा, मछा उभय विय सहस्सं ॥२९७॥ पक्खि दु
ग धणुपहुतं, सवाणंगुल असंखभाग लहू ॥ विरहो विगला सन्नी,ण जम्म म
रणे सु अंत मुहू ॥२९८॥ गप्भे मुहुत्त बारस,गुरुउ लहु समय संखसुर तुल्ला ॥
अणुसमय मसंखिज्जा, एगिंदिय हुंतिय चवंति॥२९९॥वणकाइउ अणंता,इक्कि
काउ वि जं निगोयाउ ॥ निच्चमसंखो भागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥ ३०० ॥
गोलाय असंखिज्जा, असंख निग्गोय उ हवइ गोलो ॥ इक्किक्कंमि निगोए, अ
णंत जीवा मुणेयवा ॥३०१॥ अछि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणा
मो ॥ उप्पज्जंति चयंति य, पुणोवि तहेव तछेव॥३०२॥ सवोवि किसलउ खलु,

उगाममाणो अणंतउ नणिउ ॥ सोचेव विवद्धतो,होइ परित्तो अणंतो वा॥३०३॥ जया मोहोदउ तिब्बो, अन्नाणं खु महप्नयं ॥ पेमलं वेयणीयं तु,तया एगिंदियत्त एं ॥३०४॥ तिरिएसु जंति संखा,उतिरिनराजाउ कप्पदेवाउ ॥ पज्जत्तसंख गप्न य, बायर नूदगपरित्तेसु ॥३०५॥ तो सहसारंत सुरा, निरया पज्जत्तसंखगप्नेसु॥ संखपणिंदिय तिरिया, मरिउं चउसु वि गइसु जंति॥३०६॥ थावर विगला निय मा, संखाउ य तिरि नरेसु गच्छंति ॥ विगला लनिज्ज विरइं,सम्मंपि न तेउ वाउ चुया॥३०७॥पुढवी दग परितवणा,बायर पज्जत्त हुंति चउलेसा ॥ गप्नय तिरि य नराणं,छल्लेसा तिन्नि सेसाणं॥३०८॥अंतमुहुत्तंमि गए,अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव॥ लेसाहिंपरिणयाहिं,जीवा वच्चंतिपरलोयं॥३०९॥तिरि नरआगामि नवे,लेस्साए अइ गए सुरा निरया॥पुवनव लेस्ससेसे,अंतमुहुत्ते मरणमिंति॥३१०॥अंतमुहु त्तठिइउ, तिरिय नराणं हवंति लेस्साउ ॥ चरिमा नराण पुण नव,वासूणा पुव

कोडीवि ॥३११॥ तिरियाण वि ठिइपमुहं, भणिय मसेसंपि संपई वुच्छं ॥ अभि
हिय दारब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥३१२॥ देवा असंख नर तिरि; इत्थी
पुं वेय गब्भ नर तिरिया ॥ संखाउया तिवेया, नपुंसगा नारयाईया ॥ ३१३ ॥
आयंगुलेण वत्थुं, सरीरमुस्सेह अंगुलेण तहा ॥ नग पुढवि विमाणाई, मिण
सु पमाणंगुलेणं तु ॥३१४॥ सत्थेण सुतिक्खेण वि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का॥
तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥३१५॥ परमाणू तसरेणू, रहरेणू वा
लअग्गलिक्खा य ॥ जूय जवो अट्ठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥ ३१६॥ अं
गुलछक्कं पाउ, सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो ॥ चउहत्थं धणु दु सहस्स, को
सो ते जोयणं चउरो ॥३१७॥ चउसयगुणं पमाणं, गुलमुस्सेहंगुलाउ बोधव्वं ॥
उस्सेहंगुलदुगुणं, वीरस्सायंगुलं भणियं ॥ ३१८ ॥ पुढवाइसु पत्तेयं, सग व
णपत्तेय णंतदस चउद ॥ विगले दु दु सुर नारय, तिरि चउ चउ चउदस नरेसु

॥ ३१९॥ जोणीण हुंति लस्का, सवे चुलसी इहेव घिप्पंति ॥समवन्नाई नेया, ए
गत्तेणेव सामन्ना ॥३२०॥ एगिंदिएसु पंचसु, बार सग तिसत्त अठवीसा य ॥
विगलेसु सत्त अड नव, जल खह चउपय उरग भुयगे ॥ ३२१ ॥ अध्दत्तेरस
बारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥ बारस बवीस पणविस, हुंति कुले को
डि लस्काइं ॥३२२॥ इग कोडि सत्तणवई, लस्का सट्ठा कुलाण कोडीणं ॥ संवु
ऋजोणि सुरेगिं,दि नारया वियड विगल गप्नु नया ॥३२३॥ अचित्त जोणि सु
रनिरय, मीसग्गप्ने तिन्नेय सेसाणं ॥ सी उसिण निरय सुर गप्न, मीसत्ते उ
सिण सेस तिहा ॥३२४॥ हय गप्न संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइं जायंति ॥ अ
रिह हरि चक्कि रामा, वंसी पत्ताइ सेस नरा॥३२५॥आउस्स बंधकालो, अबा
ह कालो य अंत समउ य॥अपवत्तण णपवत्तण,उवक्कम णुवक्कमा नणिया॥२६
बंधंति देव नारय, असंख नर तिरि ढमास सेसाऊ ॥ परनविया ऊसेसा,नि

रुवक्कमतिभागसेसाउ ॥ ३२७ ॥ सोवक्कमा उया पुण, सेसतिभागे अहव नव
मभागे ॥ सत्तावीस इमे वा, अंतमुहुत्तं तिमे वावि ॥३२८॥ जइमे भागे बंधो,
आउस्स भवे अबाहकालो सो॥ अंतेउजुगइ इग सम,य वक्क चउ पंच समयंता
॥३२९॥ उज्जु गइ पढम समए, परभवियं आउयं तहा हारो॥ वक्काइ बीय स
मए, परभवियाउं उदयमेई ॥३३०॥ इग दु ति चउ वक्कासु, दुगाइ समएसु प
रभवाहारो ॥ दुग वक्काइ सु समया, इग दो तिन्नी अणाहारा ॥३३१॥ बहुका
ल वेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह कालेणं ॥ वेइज्जइ जुगवंचिय, उइन्न सवप्पए
सग्गं ॥३३२॥ अपवत्तणिज्जमेयं, आउं अहवा असेसकम्मंपि ॥ बंध समए
वि बद्धं, सिढिलं चिय तं जहाजोगं ॥ ३३३ ॥ जं पुण गाढ निकायण, बंधेणं
पुव्वमेव किल बद्धं ॥ तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्ज फलं ॥ ३३४॥
उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असंख नर तिरिया ॥ हुंति निरुवक्कमाउ, दु

हावि सेसा मुणेयवा ॥ ३३५ ॥ जेणाउ मुवक्कमि जइ, अप्पसमत्थेण इयर गेणा
वि ॥ सो अज्जवसाणाई, उवक्कम णुवक्कमो इयरो॥३३६॥ अज्जवसाण निमित्ते,
आहारे वेयणा पराघाए ॥ फासेआणापाणू, सत्तविहं झिज्जए आउं ॥ ३३७॥
आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भासमणे ॥ चउ पंच पंच छप्पिय, इग
विगला सन्नि सन्नीणं ॥३३८॥ आहारसरीरिंदिय, ऊसास वऊ मणोनिनिव
त्ती ॥ होइ जउ दलियाऊ, करणं पइसाउ पज्जत्ती ॥३३९॥ पण इंदिय तिबलू
सा, साऊ दस पाण चउ छ सग अठ ॥ इग छ ति चउरिंदीणं, असन्नि सन्नी
ण नव दस य॥३४०॥आहारे भय मेहुण,परिगाहा कोह माण माया य ॥ लो
भे उहे लोगे, दस सण्णा हुंति सवेसिं ॥३४१॥ सुह दुह मोहा सन्ना, वितिगि
छा चउदमा मुणेयवा ॥ सोए तह धम्म सणा, सोल समा हवइ मणुएसु ॥
॥३४२॥ संखित्तासंघयणी, गुरुतर संघयणि मथउ एसा ॥ सिरि सिरि चंद सु

ण्ठिंदे,ण निम्मिया अप्प पढणठा॥३४३॥ संखित्तयरी उ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा,य लेसिंदिय डु समुग्घाया ॥ ३४४ ॥ दिठी दंसण नाणे, जोगु वउगो ववाय चवण ठिई॥पज्जत्ति किमाहारे.सन्निगई रागई वेए॥३४५॥ तिरिया मणुया काया,तह गाबीया चउक्कगा चउरो॥देवा नेरइया वा, अठारस नावरासीउ ॥३४६॥ एगा कोडी सत सठि,लक्का सतहुत्तरी स हस्साय ॥ दोय सया सोलहिया, आवलियाणं मुहुत्तंमि ॥३४७॥ पणसठि स हस पणसय, बत्तीसा इग मुहुत्त खुड्डनवा ॥ दोय सया छप्पन्ना, आवलिया एग खुड्डनवे ॥३४८॥ मलहारि हेमसूरि,ण सीसलेसेण विरइयं सम्मं ॥ संघयणि रयण मेयं, नंदउ जा वीरजिण तिठं ॥३४९॥ इतिश्रीत्रैलोक्यदीपिकानामसंग्रहणीसंपूर्णा ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ॐ श्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीरत्नशेखर सूरिकृत लघुक्षेत्रसमास प्रकरणं

लिख्यते ॥ वीरं जयसेहरपय, पइठियं पणमिऊण सुगुरुं च ॥ मंडत्ति ससरणठा, खित्तवियाराणु सुहामि ॥१॥ तिरि एगरज्जुखित्ते, असंखदीवो दहीउ ते सवे ॥ उद्धार पलियपणविस, कोडा कोडी समयतुल्ला ॥२॥ कुरुसग दिणाविअंगुल, रोमे सगवार विहिय अडखंडे ॥ बावन्नसयं सहसा, सगनवई वीस लक्खाणू ॥३॥ ते थूला पल्लेविहु, संखिज्जा चेव हुंति सवेवि ॥ ते इक्किक असंखे, सुहमे खंडेपकप्पेह ॥४॥ सुहमाणु निचिय उस्से, हंगुलचउकोस पल्लि घणवट्टे ॥ पइसमय मणुग्गह निठियंमि उद्धारपल्लिउत्ति ॥५॥ पढमो जंबू बीउ, धायइसंडो य पुक्करो तइउ ॥ वारुणिवरो चउत्थो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥ घयवर दीवोछठो ॥ इक्खुरसो सत्तमो य अठमउ ॥ नंदीसरो य अरुणो, नवमो इच्चाइअसंखिज्जा ॥७॥ सुपसत्थवत्थुनामा, तिपडोयारा तहा रुणाईया ॥ इगनामेवि असंखा, जाव य सूरावभा सुत्ति ॥८॥ तत्तो देवे नागे, जक्खे भूए सयंभुरमणे य ॥

एए पंच वि दीवा, इगेगनामा मुणेअव्वा ॥९॥ पढमे लवणो बीये, कालोदहि से
सएसु सव्वेसु ॥ दीवसम नामया जा, सयंभुरमणो दहीचरमो ॥१०॥ बीउ तइ
उ चरमो, उदगरसा पढमचउथ पंचमगा ॥ बठोवि सनामरसा, इक्खुरसामेस
जलनिहिणो ॥११॥ जंबूदीवपमाणं, गुलजोयणलक्खवट्ट विक्खंभो ॥ लवणाई
या सेसा, वलयाभा डुगुणडुगुणा य ॥१२॥ वयरामईहि निय निय, दीवोदहि
मज्झिगणियमूलाहिं, अठुच्चाहिं बारस, चउमूले उवरि रुंदाहिं ॥१३॥ विछारडु
ग विसेसो, उस्सेहि विभत्तु खउ चउ होइ ॥ इय चूलागिरि कूडा,इ तुल्ल वि
क्खंभ करणाहिं ॥ १४ ॥ गाउडु गुच्चाइ तय,ठभाग रुंदाइ पउमवेईए ॥ देसूण
डु जोयणवर, वणाहि परिमंभिय सिराहिं ॥१५॥ वेईसमेण महया, घवक्ख क
डएण संपरित्ताहिं ॥ अठारसूणचउभ, त्त परिहिदारं तराहिं च॥१६॥ अठुच्च
चउसु विछर, डुपाससक्कोस कुट्टदाराहिं ॥ पुव्वाइ महड्डियदे,व दारविजयाइ ना

माहिं ॥१७॥ नाणामणिमयदेहलि, कवाड परिघाइ दार सोहाहिं ॥ जगईहिं ते सवे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥१८॥ वरतिण तोरण ज्झय, त्तवाविपासाय सेलसिलवट्टे ॥ वेइवणे वरमंडव, गिहा सणेसू रमंति सुरा ॥१९॥ इह अहिगा रो जेसिं, सुराण देवीण ताण मुप्पत्ति ॥ नियदीवोदहिं नामे, अस्संखइमे स नयरीसु ॥२०॥ जंबुद्दीवो बहि कुल, गिरीहि सत्ताहिं तहेव वासेहिं ॥ पुवावरदीहेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो ॥२१॥ हिमवं सिहरी महहिम,रुप्पी निसढो य नीलवंतो य ॥ बाहिरउ दु दु गिरिणो,उभउ विसवेइया सवे ॥ २२ ॥ नरहेरव यत्ति दुगं, दुगं च हेमवयरण्णवयरूवं ॥ हरिवासरम्मयदुगं, मज्झि विदेहुत्ति सग वासा ॥२३॥ दो दीहा चउ वट्टा,वेयड्ढा खित्तछक्कमज्झंमि ॥ मेरूविदेहमज्झे,पमाण मित्तोकुलगिरीणं ॥२४॥ इग दो चउ सय उच्चा, कणगमया कणगरायया कम सो ॥ तवणिज्ज सुवेरुलिया, बहि मज्झभिंतरा दो दो ॥ २५ ॥ इग अड छतीस

अंका, लरकगुणा कमिण नउयसयन्नइया ॥ मूलोवरि समरूवं, विक्षारं बिंति
जुयलतिगे ॥२६॥ बावसहिउ सहसो, बारकला बाहिराण विक्षारो ॥ मज्झिमगा
ण दसुत्तर, बायालसया दस कला य ॥२७॥ अभिंतराण इकला, सोलसहस्स
डसया सबायाला ॥ चउचत्त सहस दोसय, दसुत्तरा दसकला सवे ॥ २८ ॥ इ
ग चउ सोलस अंका, पुवुत्तविहीइ खित्तजुयलतिगे ॥ विक्षारं बिंति तहा, चउ
सहिं को विदेहस्स॥२९॥ पंचसया ढवीसा, ढच्च कला पढमखित्तजुयलम्मि, बीए
इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥३०॥ चुलसीसय इगवीसा॥इक्ककला
तइयगे विदेहि पुणो ॥ तित्तीससहस ढस्सय, चुलसीया तह कला चउरो ॥
॥३१॥ पणपन्नसहससग सय, गुणनउया नव कला सयलवासा॥गिरिखित्तं क
समासे, जोयण लस्कं हवइ पुन्नं ॥३२॥ पन्नास सुद्ध बाहिर, खित्ते दलियम्मि
ड सय अडतीसा ॥ तिन्नि य कला य एसो, खंडचउक्कस्स विक्खंभो ॥ ३३ ॥

गिरिउवरि सवेइदहा,गिरिउच्चत्ताउ दसगुणा दीहा ॥ दीहत्ति अद्धरुंदा,सवे द
सजोयणुवेहा ॥ ३४ ॥ बहि पउमपुंमरीया,मझे ते चेव हुंति महपुवा ॥ ते गिच्छि
केसरीया,अभिंतरिया कमेणेसु॥३५॥सिरि लच्छी हिरि बुद्धी,धी कित्ती नामिया
उ देवीउ ॥ भवणवईउ पलिउ, वमाउ वरकमलनिलयाउ ॥३६॥ जलुवरि को
सदुगुच्चं, दहवित्थरपणसयंसवित्थारं ॥ बाहिल्लवित्थरद्धं, कमलं देवीण मूलि
ल्लं ॥ ३७ ॥ मूले कंदे नाले, तं वयरारिठवेरुलियरूवं ॥ जंबूणयमच्चतवणि,
ज्जबहिदलं रत्तकेसरयं ॥३८॥ कमलद्ध पायपिहुलु,च्च कणगमयकसिगोवरिं
भवणं ॥ अद्धेग कोसपिहु दी,ह चउदसय चाल धणुहुच्चं ॥ ३९॥ पच्छिमदिसि
विणुधणु पण, सउच्च ढाइज सयप्पिहु पवेसं ॥ दारतिगं इह भवणे, मझे दहदे
वि सयणिज्जं ॥४०॥ तं मूल कमलमद्ध, प्पमाण कमलाण अडहियसएणं ॥ प
रिखित्तं तन्नवणे, सुभूसणाईणि देवीणं॥४१॥मूलपउमाउ पुविं, महयरियाणं च

उसह चउपउमा ॥ अवराइ सत्त पउमा, अणिया हिवईण सत्तएहं ॥४१॥ वाय व्वाइसु तिसु सिरि, सामन्नसुराण चउ सहस पउमा ॥ अठ दस बारसहसा, अग्गेयाइसु तिपरिसाणं ॥४३॥ इय बीयपरिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु देवीणं ॥ चउ चउ पउमसहस्सा, सोलसहस्साय रक्खाणं ॥४४॥ अभिउगाइ तिवलए, इतीस चत्ताडयाललक्खाइं ॥ इगकोडि वीस लक्खा, पन्नासस सहस्स वीससयं ॥ ४५ ॥ पुव्वावरमेरुमुहं, डुसु दार तिगंपि सदिसि दहमाणा ॥ असीइभागपमाणं, सतोरणं निग्गयनईयं ॥४६॥ जामुत्तरदारडुगं, सेसेसु दहेसु ताण मेरुमुहा ॥ सदिसि दहासिय भागा, तयद्धमाणा य बाहिरिया ॥४७॥ गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवई बाहिरं नइचउक्कं॥ बहि दहपुव्वावरदार विब्वरं वहइ गिरिसिहरे ॥४८॥ पंचसय गंतु नियगा, वत्तणकूडाउ बहिमुहं वलई ॥ पणसय तेवीसेहिं, साहियतिकलाहिं सिहराउ ॥४९॥ निवडइ मगरमुहोवम, वयराम

यजिह्नियाहि वयरतले ॥ नियगे निवायकुंडे, मुत्तावलि समप्पवाहेण॥५०॥दह दारविहराउ, विहरपण्णास नागजहाउ ॥ जट्टत्ताउ चउगुण, दीहाउ सव्वजिह्नी उ ॥५१॥ कुंडंतो अडजोयण, पिहुलो जलउवरि कोसदुगमुच्चो ॥ वेइजुउ नइ देवी, दीवो दहदेविसमभवणो ॥ ५२ ॥ जोयणसट्ठिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुल वेइतिदुवारा ॥ एए दसुंड कुंडा,एवं अन्ने वि नवरं ते ॥५३॥ एसिं विहारतिगं, पडुच्च सम दुगुण चउगुणट्ठगुणा ॥ चउसट्ठि सोल चउ दो, कुंडा सव्वेवि इह नवई ॥५४॥ एयं च नइचउक्कं, कुंडाउ बहिदुवार परिवूढं ॥ सगसहस नइसमेयं, वेयड्ढगिरिप्प भिंदेई ॥५५॥ तत्तो बाहिर खित्त,द्ध मझउ वलइ पुव्वअवरमुहं ॥ नइसत्तसहससहियं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥५६॥ धुरि कुंडदुवारसमा, पज्जंते दसगुणा य पिहुलत्ते ॥ सव्वत्थ महनईउ, विहरपण्णासभागुंडा ॥ ५७॥ पण खित्तमहनईउ, सदारदिसि दहविसुद्धगिरिअद्धं ॥ गंतूणसजिह्नीहिं, निय

नियंकुंमेसु निवडंति ॥५८॥ नियजिब्भियपिहुलत्ता, पणवीसंसेणमुत्तमवगिरिं ॥ जामसुहा पुव्वुदहिं, इयरा अवरोयहिमुविंति ॥ ५९ ॥ हेमवइ रोहियंसा, रोहीयां गंगडगुणपरिवारा ॥ एरसवय सुवस, रुप्पकुलाउ ताण समा ॥६० ॥ हरिवासे हरिकंता,हरिसलिला गंगचउगुणनईया॥एसि समा रम्मवए, नरकंता नारिकंता य ॥६१॥ सीउया सीयाउ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ॥ निवडइ पणलक्ख डतीस सहस अडतीस नइसलिलं ॥ ६२ ॥ कुरुनइ चुलसीसहसा, बच्चे वंतरनईउ पइविजयं ॥ दो दो महानईउ, चउदस सहसाउ पत्तेयं ॥६३ ॥ अडसयरि महानइउ, बारस अंतरनईउ सेसाउ ॥ परियरनईउ चउदस, लक्खा बप्पस सहसा य ॥ ६४ ॥ एगारड नवकूमा, कुलगिरि जुयलत्तिगे वि पत्तेयं ॥ इय बप्पसा चउ चउ, वक्खारेसुत्ति चउसठी॥६५॥ सोमणसि गंधमायणि, सग सग विज्जुपन्निमालवंति पुणो ॥ अठठ सयलतीसं, अडनंदणि अठ करि

कूडा ॥६६॥ इय पणसउच्च गास,ट्ठि सउ कुडा तेसु दीहर गिरीणं ॥ पुव्वनइमेरु
दिसिच्छं, त सिध्दकूडेसु जिणभवणा ॥६७॥ ते सिरिगिहाउ दो सय, गुणप्पमा
णा तहेव तिछवारा ॥ नवरं अडवीसाहिय, सयगुण दारप्पमाणमिह ॥६८॥ प
णवीसं कोससयं, समचउरसविछडा इगुणमुच्चा ॥ पासाया कूडेसु, पणसयउ
च्चेसु सेसेसु ॥६९॥ बल हरिसह हरिकूडा, नंदनवणि मालवंति विज्जुपभे ॥ ई
साणुत्तरदाहिण, दिसासु सहसुच्चकणगमया ॥७०॥ वेयढेसु वि नव नव, कूडा
पणवीसकोसउच्चा ते ॥ सवे तिसय बडुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूडा॥ ७१ ॥
ताणुवरि चेइहरा, दहदेवी भवणतुल्लपरिमाणा ॥ सेसेसु य पासाया, अधेग
कोसं पिहुच्चत्ते ॥७२॥गिरिकरिकूडा उच्च,त्तणाउ सम अध्दमूलुवरि रुंदा ॥रयण
मया नवरिविय,ह मज्झिमा ति त्ति कणगरुवा॥७३॥जंबूणयरययमया,जगइसमा
जंबुसामलीकूडा ॥ अठ्ठ तेसुदहदे, वि गिहसमा चारुचेइहरा ॥७४॥ तेसि स

मोसहकूडा, चउतीसं चुल्लकुंडजुयलंतो ॥ जंबूण एसु तेसु य, वेयड्ढेसुव्व पासा
या ॥७५॥ पंचसए पणवीसे, कूडा सव्वे वि जंबुदीवंमि ॥ ते पत्तेयं वरवण, जुया
हिं वेईहिं परिक्खित्ता ॥७६॥ छ सयरि कूडेसु तहा, चूलाचउवणतरूसु जिणभ
वणा ॥ भणिया जंबूद्दीवे,सदेवया सेस ठाणेसु ॥७७॥ करिकूड कुंड नइ दह,कु
रुकंचण जमलसमवियड्ढेसु ॥ जिणभवणविसंवाओ, जो तं जाणंति गीयत्था
॥७८॥ पुव्वावरजलहिंता, दसुच्च दसपिहुल मेहलचउक्का ॥ पणवीसुच्चा पन्ना,
स तीस दसजोयणपिहुत्ता ॥७९॥ वेईहिं परिक्खित्ता, सखयरपुर पन्नसट्ठिसेणि
दुगा ॥ सदिसिंदलोगपालो, वन्नोगउवरिल्लमेहलया ॥८०॥ दु दु खंडविहिय
भरहे,रवया दु दु गुरु गुहा य रुप्पमया ॥ दो दीहा वेयड्ढा, तहा दुतीसं च वि
जयेसु ॥८१॥ नवरं ते विजयंता, सखयरपणपन्नपुरदुसेणीया ॥ एवं खयरपुरा
इं, सगतीस सयाइं चालाइं ॥८२॥ गिरि विवर दीहाओ, अडुच्च चउ पिहुपवे

सदाराउ ॥ बारस पिहुलाउ अडु,च्च याउ वेयड्ढडुग्गुहाउ ॥८३॥ तंमवि ड जो
यणअं,तराउ ति ति विबराउ डुनईउ ॥ उम्मग्गनिमग्गाउ, कडगाउ महानइ
गयाउ ॥ ८४ ॥ इह पइन्निति गुणव,स्र मंफ्ले लिहइ चक्किडुडसमुद्दे ॥ पणसय
धणुहपमाणे, बारेगडजोयणुज्जोए ॥८५॥ सा तिमिस गुहा जीए, चक्की पविसेइ
मझखंफंतो ॥ उसहं अंकिय सो जी,इ वलइ सा खंफगपवाया ॥८६॥ कयमाल
नट्ठमालय, सुराउ वढइ निबन्धसलिलाउ ॥ जा चक्की ता चिठइ, ताउ उग्घडि
य दाराउ ॥८७॥ बहिखंफंतो बारस, दीहा नव विछडा अउझपुरी ॥ सा लव
णावेयड्ढा, चउदहियसयं चिगारकला ॥८८॥ चक्किवसनइपवेसे, तिछुगं माग
हो पन्नासो य ॥ ताणंतो वरदामो,इह सव्वे बिडुत्तरसयंति ॥८९॥ भरहेरवए ब
ब अर,मयवसप्पिणीउसप्पिणीरूवं ॥ परिन्नमइ कालचक्कं,डुवालसारं सया वि
कमा ॥९०॥ सुसमसुसमा य सुसमा,सूसमडुसमाय डुसमसुसमाय ॥डुसमा य

उसमउसमा, कमुक्कमा उसु वि अरगंकं ॥९१॥ पुव्वुत्तपल्लिसमसय, अणुगहणा
निठिए हवइ पलिउं ॥ दस कोडिकोडिपलिए, हिं सागरो होइ कालस्स ॥९२॥
सागरचउतिउ कोडा, कोडिमिए अरतिगे नराण कमा ॥ आऊ तिउइगपलि
यां, तिउइगकोसा तणुच्चत्तं ॥९३॥ तिउइगदिणेहि तूअरि, वयरामलमित्तमेसि
माहारो ॥ पिठकरंमा दोसय, उप्पन्ना तहलं च दलं ॥९४॥ गुणवणदिणे तह प
नर, पन्नरअहिया अवच्चपालणया ॥ अवि सयलजिया जुयला, सुमणसरूवा
सुरगईया ॥ ९५ ॥ तेसि मत्तंग भिंगा, तुडियंगा जोइ दीवचित्तंगा ॥ चित्तरसा
मणियंगा, गेहागारा अणियत्रका ॥९६॥ पाणं भायण पिच्छण, रविपह दीव
पह कुसुममाहारो ॥ भूसण गिह वच्चासण, कप्पडुमा दसविहा दिंति ॥९७॥
मणुआउसमगयाई, हयाइ चउरंस जाइ अठंसा ॥ गोमहिसुट्टखराई, पणंस
साणाइ दसमंसा ॥९८॥ इच्चाइ तिरच्छाण वि, पायं संवारएसु सारिच्छं ॥ तइया

रसेस कुलगर, नयजिणधम्माइउप्पत्ती ॥९९॥ कालडुगे तिचउत्ता,रगेसु एगूण
नवइपरकेसु ॥ सेसगएसु य सिवं,ति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥१००॥ बायाल
सहस वरसू, णिगकोडाकोडिञ्अयरमाणाए ॥ तुरिए नराउपुवा, ण कोडितणु
कोसचउरंसं ॥१०१॥ वरिसेगवीससहस, प्पमाण पंचमरए सगकरुच्चा ॥ तीस
हियसयाउ नरा, तयंतधम्माइयाणंतो ॥१०२॥ सुयसूरिसंघधम्मो, पुवण्हे छिज्ज
ही ञ्अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणो सुह,ममंति तद्धम्म मज्झण्हे॥१०३॥खा
रग्गिविसाईहिं, हाहाभूया कयाइ पुहवीए ॥ खगबीय वियाढइ सु, नराइबीयं
बिलाईसु ॥१०४॥ बहुमच्छचक्कवहनइ,चउक्कपासेसु नव नव बिलाइं ॥ वेयड्ढो
भयपासे, चउयालसयं बिलाणेवं ॥१०५॥ पंचमसमछ्ठारे, इकरुच्चा वीसव
रिसञ्आउ नरा ॥ मच्छासिणो कुरूवा, कूरा बिलवासि कुगइगमा॥१०६॥ निल्ल
ज्जा निवसणा, खरवयणा पियसुयाइठिइरहिया ॥ थीउ छवरिसगप्भा, ञ्अहिदु

हपसवा बहुसुया य ॥१०३॥ इय अरछक्केण वस,प्पिणित्ति उस्सप्पिणी वि विव
रीया ॥ वीसं सागरकोडा, कोडीउ कालचक्कंमि ॥१०८॥ कुरुडुगि हरिरम्मयडु
गि, हेमवएरस्रवयडुगि विदेहे ॥ कमसो सया वसप्पिणि, अरयचउक्काइसम
कालो ॥१०९॥ हेमवएरस्रवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया ॥ सद्दावइ विड
डावइ, गंधावइ मालवंतक्का ॥११०॥ चउ वट्टवियड्ढा सा,इ अरुण पउम प्पभा
स सुरवासा ॥ मूलुवरि पिहुत्ते तह,उच्चत्ते जोयणं सहसं ॥१११॥ मेरू वट्टो स
हस्स, कंदो लक्कूसिउ सहस उवरिं ॥ दसगुण भुवि तं सनवइ, दसिगारंसं
पिहुलमूले ॥११२॥ पुढवुवल वयर सक्कर, मयकंदो उवरि जाव सोमणसं ॥
फलिहंक रयय कंचण, मउ य जंबूणउ सेसो ॥११३॥ तडुवरि चालीसुच्चा, व
ट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला ॥ वेलुरिया वरचूला, सिरिभवणपमाण चेइहरा
॥११४॥ चूलातलाउ चउसय, चउणउए वलयरूवविक्कंभं ॥ बहुजलकुंडं पं

ऽग,वणं च सिहरे सयेईयं ॥११५॥ पन्नासजोयणेहिं, चूलाउ चउदिसासु जि
णभवणा ॥ सविदिसि सक्कीसाणं, चउवाविजुया य पासाया ॥११६॥ कुलगिरि
चेइहराणं, पासायाणं चिमे समप्पगुणा ॥ पणवीस रुंद ङगुणा, यामाउ इमाउ
वावीउ ॥११७॥ जिणहर बहिदिसि जोयण, पणसय दीह्ऽपिहुल चउउन्ना ॥
अद्धससिसमा चउरो, सियकणगसिला सवेईया ॥११८॥ सिलमाणठ सहस्सं,
समाणसींहासणेहि दोहिं जुया ॥ सिलपंडु कंबलार, त्तकंबलापुव्वपच्छिमउ ॥
॥११९॥ जामुत्तराउ ताउ,इगेगसींहासणाउ अइपुव्वं ॥ चउसु वि तासु निया
सण,दिसिन्नवजिणमज्जणं होई ॥१२०॥ सिहरा बत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ
पंचसए ॥ पिहुलं सोमण सवणं, सिलविणु पंडगवणसरिछं ॥१२१॥ तब्बाहि
रि विक्खंभो, बायालसयाहि इसय रिजुयाइं ॥ अठेगारसभागा, मघे तं चेव
सहसूणं ॥१२२॥ तत्तो सहढछसठी, सहसेहिं नंदणंपि तह चेव ॥ नवरि भव

एपासायं, तरुदिसि कुमरि कूडा वि ॥१२३॥ नवसहस नवसयाइं,चउपन्ना छच्चिगारजागा य ॥ नंदणवहिविरकंजो, सहसूणो होइ मप्रंमि ॥१२४॥ तदहो पंच सएहिं, महियलि तह चेव नद्दसालवणं ॥ नवरंमिह दिग्गयच्चिय, कूडा वणविहरं तु इमं ॥१२५॥ बावीससहस्साइं,मेरूउ पुवउ य पच्छिमउ ॥ तं चाउ सीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरउ ॥१२६॥ छवीस सहस चउसय, पणहत्तरि गं तु कुरुनइपवाया ॥ उन्नउ विनिग्गया गय,दंता मेरुम्मुहा चउरो ॥१२७॥ अ ग्गेयाइसु पयाहि,णेण दिसासु सियरत्त पियनीला ॥ जासोमणस विज्जुपह, गंधमायण मालवंतरका ॥१२८॥ अहलोगवासिणीउ,दिसाकुमारीउ अठ एए सि ॥ गयदंतगिरिवराणं, हिठा चिठंति नवणेसु ॥१२९॥ धुरि अंते चउ पण सय, उच्च त्ति पिहुत्ति पणसया सिसमा ॥ दीहत्ति इमे छकला, डुसयनवुत्तरस हसतीसं ॥१३०॥ ताणं तो देवुत्तर, कुराउ चंदद्धसंठियाउ छवे ॥ दससहस वि

सुद्दमहा, विदेहदलमाणपिहुलाउ ॥१३१॥ नइपुव्वावरकूले, कणगमया बल स
मा गिरी दो दो ॥ उत्तरकुराउ जमगा, विचित्तचित्ता य इयरीए ॥१३२॥ नइव
ह दीहा पण पण, हरया दुदुदारया इमे कमसो ॥ निसहो तह देवकुरू, सूरो
सुलसो य विज्जुपहो॥१३३॥तह नीलवंत उत्तर, कुरु चंदे रवय मालवंतो त्ति ॥
पउमदहसमा नवरं, एएसु सुरा दहसमाना ॥१३४॥ अडसय चउतीस जोय,
णाइं तह सेगसत्तभागाउ॥इक्कारसय कलाउ,गिरिजमलदहाणमंतरयं॥१३५॥
दहपुव्वावर दसजो, यणेहि दस दस वियड्ढकूडाणं ॥ सोलसगुणप्पमाणा, कंच
णगिरिणो दुसय सव्वे ॥१३६॥ उत्तरकुरुपुव्वद्धे, जंबूणयजंबुपीढमंतेसु ॥ कोस
दुगुच्चं कमि व,ड्ढमाण चउवीसगुण मज्झे ॥१३७॥ पणसयवट्टपिहुत्तं, तं परिखि
त्तं च पउमवेईए ॥ गाउ दुगेगुच्चपिहु,त चारुचउदारकलियाए ॥१३८॥ तं मज्झे
अडविच्छर, चउच्च मणिपीढियाइ जंबुतरू ॥ मूले कंदे खंधे, वरवयरारिट्ठवेरु

लिउ ॥१३ए॥ तस्स य साह पसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो ॥ सोव
सुजायरूवा, वेरुलितवणिज्जजंबुणया ॥१४०॥ सो रययमयपवालो, रायययवि
डिमो य रयणपुप्फफलो ॥ कोसङ्गं उवेहो, थुडसाहा विडिमविक्खंनो ॥१४१॥
थुडसाहवडिमदीह,त्ति गाउए अठ पनर चउवीसं ॥ साहा सिरिसमन्नवणा,
तम्माणस चेइयं वडिमं ॥१४२॥ पुव्विल्लि सिज्ज तिसुश्रा, सणाणि नवणेसु णा
ढियसुरस्स ॥ सा जंबू बारसवे,इयाहि कमसो परिक्खित्ता ॥१४३॥ दहपउमाणं
जं वि,वरं तुतमिहावि जंबुरुक्खाणं ॥ नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहि
सीउ ॥१४४॥ कोस इसएहि जंबू, चउद्दिसिं पुव्वसालसमन्नवणा ॥ विदिसासु
सेस तिसमा, चउवाविजुया य पासाया ॥१४५॥ ताणंतरेसु अड जिण, कूमा
तह सुरकुराइ अवरद्धे॥राययपीढे सामलि,रुक्खो एमेव गरुलस्स ॥१४६ ॥ ब
त्तीस सोल बारस, विजया वक्खार अंतर नईउ ॥ मेरुवणाउ पुव्वा, वरासुकुल

गिरिमह नयंता ॥१४७॥ विजयाण पिहुत्ति सग, छन्नाग बारुत्तरा छुवीस सया
॥ सेलाणं पंचसए, सवेइ नइ पणवीससयं ॥ १४८ ॥ सोलससहस्स पणसय,
बाणउया तह य दो कलाउ य॥ एएसिं सव्वेसिं, आयामो वणमुहाणं च॥१४९॥
गयदंतगिरिवुच्चा, वक्खारा ताणमंतरनईणं ॥ विजयाणं च निहाणा, इ मालवं
ता पयाहिणउ ॥१५०॥ चित्ते य बंभकूडे, नलिणीकूडे य एगसेले य ॥ तिउडे
वेसमणे वि य, अंजण मायंजणे चेव ॥१५१॥ अंकावइ पम्हावइ, आसीविस
तह सुहावहे चंदे ॥ सूरे नागे देवे, सोलस वक्खारगिरिनामा ॥१५२॥ गाहाव
इ दाहावइ, वेगवई तत्त मत्त उम्मत्ता ॥ खीरोय सीयसोया, तह अंतोवाहि
णी चेव ॥१५३॥ उम्मीमालिणि गंभी,रमालिणी फेणमालिणी चेव ॥ सव्ववि
दसजोयण, उंडाकुंडप्पवा एया॥१५४॥ कच्छो सुकच्छो य महा,कच्छो कच्छावई त
हा ॥ आवत्तो मंगलावत्तो, पुक्खलो पुक्खलावई॥१५५॥ वच्छो सुवच्छो य महा,

वछो वछावई विया ॥ रम्मो य रम्मड चेव, रमणी मंगलावई॥१५६॥पम्हो सुपम्हो य महा, पम्हो पम्हावई तहा ॥ संखो नलिणनामा य, कुमुदो नलिणावई ॥१५७॥ वप्पो सुवप्पो य महा, वप्पो वप्पावईविय ॥ वग्गू तहा सुवग्गू य, गंधिलो गंधिलावई ॥१५८॥ एए पुव्वावरगय, वियड्ढदलियत्तिनई दिसिदलेसु ॥ नरच्छपुरीसमाड, इमेहिं नामेहिं नयरीड ॥१५९॥ खेमा खेमपुरा विय, रिठा रिठावई य नायव्वा ॥ खग्गी मंजूसा विय, उसहपुरी पुंडरिगिणी य ॥ १६० ॥ सुसीमा कुंडला चेव, वराइ य पहंकरा ॥ अंकावइ पम्हावइ, सुत्ता रयणसंचया ॥१६१॥ आसपुरा सींहपुरा, महापुरा तह य चेव विजयपुरा ॥ अवराइया य अवरा, असोग तह य वीयसोगा य ॥ १६२ ॥ विजया य वेजयंती, जयंति अपराजिया य बोधव्वा ॥ चक्कपुरा खग्गपुरा, होइ अवझा अउझा य ॥ ॥१६३॥ कुंडुब्भवा उ गंगा, सिंधूउ कछपम्हपमुहेसु ॥ अठठएसु विजये, सु सेसे

सु रत्त रत्तवई ॥१६४॥ अविवक्खिऊण जगई,सवेइवणमुहचउक्कपिहुलत्तं ॥ गु
णतीससय दुवीसा,न इंति गिरिअंति एगकला ॥१६५॥ पणतीससहस चउस
य, छडुत्तरा सयलविजयविक्खंभो ॥ वणमुह दुग विक्खंभो, अडवन्नसया य च
उआला ॥१६६॥ सगसय पन्नासा नइ,पिहुत्ति चउवन्न सहस मेरुवणे ॥ गिरि
विवर चउसहसा, सबसमासो हवइ लक्खं ॥१६७॥ जोयण सयदसगंते, सम
धरणीउ अहो अहो गामा ॥ बायालीससहसेहिं,गंतुं मेरुस्स पच्छिमउ॥१६८॥
चउ चउतीसं च जिणा, जहन्नमुक्कोसउ य हुंति कमा ॥ हरिचक्किबला चउरो,
तीसं पत्तेयमिह दीवे ॥१६९॥ ससिदुग रविदुग चारो, इह दीवे तेसिं चारखि
त्तं तु ॥ पणसय दसुत्तराइं, इगसठिभागा य अडयाला ॥१७०॥ पनरस चुल
सीइसयं, छप्पन्न डयालभागमाणाइं ॥ ससिसूरमंडलाइं, तयंतराणि गिगहीणा
इं ॥१७१॥ पणतीस जोयणे भा,ग तीस चउरो य भाग सगभाया ॥ अंतरमा

एं ससिणो, रविणो पुण जोयणे डुन्नि ॥१७१॥ दीवंतो असियसए, पण पणस
ठी य मंमला तेसिं ॥ तीसहिय तिसय लवणे, दस गुणवीसं सयं कमसो ॥
॥१७२॥ ससि ससि रवि रवि अंतरि, मझे इगलरकु तिसयसाठूणो ॥ साहिय
डुसयरि पणचय, बहिलरको उसय साठहिअ ॥१७४॥ साहियपणसहस तिहु,
१ राइ ससिणो मुहुत्तगइ मझे ॥ बावस्रहिया सा बहि, पइमंमल पउणचउवुढी
॥१७५॥ जा ससिणो सारविणो, अडसयरिसएण सीसएण हिया ॥ किंचूणा
एं अठा, रसठिनागाणमिह वुढी ॥१७६॥ मझे उदयछंतरि, चउणवइसहस्स
पणसय छवीसा ॥ बायालसठिनागा, दिणं च अठारसमुहुत्तं ॥१७७॥ पइमं
मल दिणहाणी, डुण्हमुहुत्तेगसठिनागाणं ॥ अंते बारमुहुत्तं, दिणं निसा तस्स
विवरीया ॥१७८॥ उदयछंतरि बाहिं, सहसा तेसठि छ सय तेसठिं ॥ तह इग
ससिपरिवारो, रिरकड वीसाडसीइ गहा ॥१७९॥ गसठिसहस नवसय, पण

हत्तरी तारकोडिकोडीणं ॥ सयंतरेणमुस्से,हंगुलमाणेण वा हुंति ॥१८०॥ गह रिस्क तारगाणं, संखं ससिसंखसंगुणं काउं ॥ इच्छियदीवुदहिंमिय, गहाइमाणं वियाणिज्जा ॥१८१॥ चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धाइयंमि ससि सूरा ॥ परउदहिदीवेसु य, तिगुणा पुविल्लसंजुत्ता ॥१८२॥ नरखित्तं जा समसे,णिचा रिणो सिग्घसिग्घतरगइणो ॥ दिठिपहमिंति खित्ता,णुमाणउ ते नराण जहा ॥ ॥१८३॥ पणसय सत्तत्तीसा, चउतीससहस्स लक्ख इगवीसा ॥ पुक्खरदीवड्ढन रा, पुवेण वरेण पिच्छंति ॥१८४॥ नरखित्तबहिं ससिरवि, संखाकरणंतरेहि वा होई ॥ तह तउ य जोइसिया, अचलद्धपमाणसु विमाणा ॥१८५॥ जंबूपरिहि तिलक्खा, सोलसहस्स इसय पउणअडवीसा ॥ धणुअडवीस सयंगुल, तेरसस ढासमहिया य ॥१८६॥ सगसय नउया कोडी, लक्खा छप्पस चउणवइ सहसा ॥ सहसयं पउणउको,स सढबासठि करगणियं ॥१८७॥ पट्टपरिहिं च गणियं,

अंतिमखंमाइ उसुजियं च धणुं ॥ बाहं पयरं च घणं, गणियव्वममेहिं करणेहिं ॥१८८॥ विरकंनवग्गदहगुण,मूलं वट्टस्स परिरउ होई ॥ विरकंनपाय गुणिउ, परिरउ तस्स गणीयपयं ॥१८९॥ उगाहु उसूसु च्चिय, उगणीसगुणो उसूक ला होई ॥ विउसुपिहुत्ते चउगुण, इसुगुणिए मूलमिह जीवा ॥ १९० ॥ उसुव ग्गि ठगुणजीवा, वग्गजुए मूल होइ धणुपिठं ॥ धणुडुगविसेससेसं, दलियं बाहाडुगं होई ॥१९१॥ अंतिमखंमस्सुसुणा,जीवं संगुणि य चउहि नइऊणं ॥ लद्धंमि वग्गिए दस,गुणंमि मूलं हवइ पयरो ॥१९२॥ जीवा वग्गेण डुगे, मि लिए दलिए य होइ जं मूलं ॥ वेयद्धाईण तयं, सपिहुत्तगुणं हवइ पयरो ॥ ॥१९३॥ एयं च पयरगुणियं, संववहारेण देसियं तेण ॥ किंचूणं होइ फलं, अ इहंपि हवइ सुहुमगणणा ॥ १९४ ॥ पयरो सोस्सेहगुणो, होइ घणोपरिरयाइ सव्वं वा ॥ करणगणणालसेहिं, जंतगलहियाउ दहव्वं ॥ १९५ ॥ इति श्री लघु

क्षेत्रसमास प्रथम जंबूद्वीपाधिकारः समाप्तः॥ दीवाउलवणसमुद्दो दुगारो भसइ
॥ गोतित्थं लवणोभय, जोयण पणनवइ सहस जा तत्थ ॥ समभूतलाउ सग
सय, जलवुड्ढी सहसमो गाढो ॥ १९६ ॥ तेरासिएण मज्झि, इह रासिणा संगुणि
ज्ज अंतिमगं ॥ तं पढमरासिभइयं, उव्वेहं मुणसु लवणजले ॥१९७॥ दहुवरि
सहसदसगं, पिहुलामूलाउ सतरसहसुच्चा ॥ लवणसिहा सा तदुवरि, गाउडु
गं वड्ढइ दुवेलं ॥१९८॥ बहुमज्झे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा ॥
जोयणसहस्स जड्डा, तद्दसगुण दहुवरि रुंदा ॥१९९॥ लक्खं च मज्झि पिहुला,
जोयणलक्खं च भूमिमो गाढा ॥ पुव्वाइसु वडवामुह, केउव जूवे सर निहाणा
॥२००॥ अन्ने लहुपायाला, सगसहसा अडसया सचुलसीया ॥ पुव्वुत्त सयंस
पमा,णा तत्थ तत्थ पएसेसु ॥२०१॥ कालो य महाकालो, वेलंब पभंजणो य च
उसु सुरा ॥ पलिउवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयद्धाऊ ॥२०२॥ सव्वे सिमहो

नागे, वाऊ मचिह्लंयमि जलवाऊ ॥ केवलजलसुवरिल्ले, नाग इगे तह सासु वे ॥२०३॥ वहवे जयारवाया, मुयंति खुहंति इसि वाराउ॥ एगअहोरत्तं तो,त या तया वेलपरिवुड्ढी ॥२०४॥ वायालसहि इसयरि, सहसा नागाण मचवरि बाहिं ॥ वेलं धरंति कमसो, चउहत्तरुलक्ख ते सवे ॥२०५॥ वायालसहस्सेहिं, पुवेसाणाइदिसि विदिसि लवणे ॥ वेलंधराणवेलं, धरराईणं गिरिसु वासा ॥ ॥२०६॥ गोथूने दगनासे, संखे दगसीमनामि दिसि सेले ॥ गोथूनो सिवदेवो, संखो य मणोसिलो राया ॥२०७॥ कक्कोडे विज्जुपहे, केलास रुणप्पहे विदिसि सेले ॥ कक्कोडग कद्दमउ, केलास रुणप्पहो सामी ॥२०८॥ एए गिरिणो सवे, बावीसहिया य दससया मूले ॥ चउसय चउवीसहिया, विच्छिण्णा हुंति सिहरतले ॥२०९॥ सतरससय इगवीसे, उच्चत्ते ते सवेइया सवे ॥ कणगंकरय यफालिह,दिसासु विदिसासु रयणमया ॥२१०॥ नवगुणहत्तरि जोयण, वहिंज

लुवरि चत्त पण नवइ नाया ॥ एए मज्झे नवसय, तेसठा नागसगसयरी॥२११॥
हिमवंतंता विदिसी, साणाइगयासु चउसु दाढासु ॥ सग सग अंतर दीवा,
पढमचउक्कं च जगईउ ॥२१२॥ जोयणतिसएहि तउ, सयसयवुड्ढी य छसु चउ
केसु ॥ अन्नुन्न जगइ अंतरि, अंतरसमविछरा सव्वे॥२१३॥ पढमचउक्कुच्चबाहिं,
अड्ढाइ य जोयणाइ य वीसंसो ॥ सयरिं सवुड्ढिपुरउ, मज्झदिसिं सव्वि कोसदुगं
॥२१४॥ सव्वे सवेइयंता, पढमचउक्कंमि तेसि नामाइं ॥ एगोरुय आभासिय,
वेसाणिय चेव लांगूले ॥२१५॥ बीयचउक्के हयगय, गो सक्कुलि पुव्वकसनामा
णो ॥ आयंस मिंढग अउ, गोपुव्वमुहा य तइयंमि ॥२१६॥ हय गय हरि वग्घ
मुहा, चउछए आसकस हरिकसो, अकस कस पावर,ण दीव पंचमचउक्कंमि
॥२१७॥ उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुदंत छठंमि ॥ सत्तमगे दंतंता, घण
लठ निगूढ सुध्दाय ॥२१८॥ एमेव य सिहरिंमि वि, अडवीसं सव्वि हुंति छप्प

न्ना ॥ एएसु जुअलरूवा, पलिआसंखंसआउ नरा ॥ २१९॥ जोयणदसमंस तणू, पिठिकरंमाणमेसि चउसठी ॥ असणं चउउत्थाउ, गुणसीदिण वच्चपालणया ॥२२०॥ पच्छिमदिसि सुठिय लव,णसामिणो गोयमुत्ति इगुदीवो ॥ उन्नउ वि जंबुलवणे, दु दु रविदीवा य तेसिं च ॥२२१॥ जगइ परुप्परि अंतरि, तह विठर बार जोयणसहस्सा ॥ एमेव य पुव्वदिसि,चंदचउक्कस्स चउ दीवा॥२२२॥ एवंचिय बाहिरउ, दीवा अठठ पुव्वपच्छिमउ ॥ दु दु लवणे छ छ धायइ,संरू ससीणं रवीणं च ॥२२३॥ एए दीवा जलुवरि, बहि जोयण सढ्ढअठसीइ तहा ॥ भागावि य चालीसा, मज्झे पुण कोसडुगमेव ॥ २२४ ॥ कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु नियनियपहूणं ॥ तह लवणे जोइसिया, दगफालिह उढ्ढलेसागा ॥२२५॥ इति श्री लवणसमुद्राधिकारोद्वितीयः समाप्तः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
॥ जामुत्तरदीहेणं, दससयसमपिहुल पणसय उच्चेण ॥ उसुयारगिरि डुगेणं,

धायइसंडो दुह विहत्तो ॥२२६॥ खंडदुगे छ छ गिरिणो, सग सग वासा य अ
रविवररूवा ॥ धुरि अंति समा गिरिणो, वासा पुण पिहुलपिहुलयरा ॥२२७॥
दहकुंडउंडत्तममे,रुसुस्सयं विउरं वियड्डाणं॥वट्टगिरीणं च सुमे,रुवज्जमिह जाण
पुव्वसमं ॥२२८॥ मेरुदुगंपि तहच्चिय, नवरं सोमणसहिट्ठुवरि देसे ॥ सगअड
सहस्स ऊणा,त्तिसहस पणसीइ उच्चत्ते ॥२२९॥ तहपणनवइचउसउ, य अड
चउसउ य अड तीसाय ॥ दस य सया य कमेणं, पणठाणपिहुत्ति हिठाय
॥२३०॥ नइ कुंडदीववणमुह, दहदीहरसेलकमलविछारं ॥ नइउंडत्तं च तहा,
दह दीहत्तं च इह दुगुणं ॥२३१॥ इगलक्ख सत्तसहसा, अडसय गुणसीइ न
इसालवणं ॥ पुव्वावरदीहंतं, जामुत्तरअडसीइजुइयं ॥ २३२ ॥ बहिगयदंता दी
हा, पणलक्खण सयरिसहस छ गुणठा ॥ इयरे तिलक्ख छप्प,ससहस सयछसि
सगवीसा ॥२३३॥ खित्ताणुमाणउ से,स सेलनईविजय वणमुहायामो ॥ चउ

लक्कु दीहवासा, वासविजयविखरो उइमो ॥ २३४ ॥ खित्तंकगुणधुवंके, दोसय बारुत्तरेहिं पविभत्ते ॥ सव्वछ वासवासो, हवेइ इह पुण इय धुवंका ॥ २३५ ॥ धुरि चउद लक्क छुसह,स दो सगनउया धुवं तहा मझे ॥ छुसय अ डुत्तर सतस,ठि सहसबवीसलरका य ॥ २३६॥ गुणवीस सयं बत्ती,स सहस गुणयाल लरक धुवमंते ॥ नइगिरिवणमाण विसु, ठ खित्तसोलंसपिहु विजया ॥२३७॥ नवसहसा ठसय तिहु, त्तरा य ठ च्चेव सोलनाया य ॥ विजयपिहुत्त नइगिरि, वणविजयसमासचउलरका ॥२३८॥ पुव्वंव पुरी य तरू, परमुत्तरकुरु सु धाइ महधाइ ॥ रुक्का तेसु सुदंसण, पियदंसणनामया देवा ॥ २३ए ॥ धुव रासीसु य मिलिया, एगो लरको य अडसयरि सहसा ॥ अठसया बायाला, परिहितिगं धायईसंके ॥२४०॥ कालोदहि सव्वठवि, सहसुंमो वेलविरहिउ त ठ ॥ सुठियसम कालमहा, कालसुरा पुव्वपछिमउ ॥२४१॥ लवणंमिव जहसं

नव, ससिरविदीवा इहंपि नायव्वा ॥ नवरं समंतउ ते, कोसड्ढुच्चा जल
स्सुवरिं ॥२४२॥ पुक्खरदलबहिजगइ,व संठिउ माणुसुत्तरो सेलो ॥ वेलंधरगि
रिमाणो, सीह निसाई निसढवन्नो ॥२४३॥ जह खित्तनगाईणं, संठाणो धाय
ए तहेव इहं ॥ दुगुणो य भद्दसालो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥२४४॥ इह बाहि
रगयदंता, चउरो दीहत्ति वीस सय सहसा ॥ तेयालीससहस्सा, गुणवीसहि
या सया दुन्नि ॥२४५॥ अभिंतर गयदंता, सोलसलक्खा य सहसछव्वीसा ॥
सोलहिय सयं चेगं, दीहत्ते हुंति चउरोवि ॥२४६॥ सेसा पमाणउ जह, जंबूदी
वाउ धाइए भणिया ॥ दुगुणा समा य ते तह, धायइसंडाउ इह नेया॥२४७॥
अडसीलक्खा चउदस, सहसा तह नवसया य इगवीसा॥ अभिंतर धुवरासी,
पुव्वत्त विहीइ गणियव्वो ॥२४८ ॥ इगकोडि तेरलक्खा, सहसा चउचत्त सगसय
तियाला ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे,धुवरासी एस मज्झंमि ॥२४९॥ एगा कोडी अडतीं,

सलक्ख चउहत्तरीसहस्सा य ॥ पंचसया पणसठा, धुवरासी पुक्करद्धंते ॥२५०
गुणवीससहस सगसय, चउणउय सवाय विजयविक्खंभो ॥ तह इह बहिवह
सलिला, पविसंति य नरनगस्साहो॥२५१॥इह पउममहापउमो, रुक्का उत्त
रकुरूसु पुव्विंव॥ तेसु य वसंति देवा, पउमो तह पुंमरीउ य ॥२५२॥ पुक्करदल
पुव्वाहर, खंमतो सहसङ्गपिहुकुन्दा ॥ जणियातठाणपुण,गीसव्वाचेव जाणंति ॥
दा गुणहत्तरि पढमे,अड लवणे बीयदीव तइयद्धे॥पिहुपिहु पणसय चाला,इय
नरखित्ते सयलगिरिणो॥२५३॥तेरह सय सगवन्ना,ते पणमेरूहि विरहिया सव्वे
॥ उस्सेहपायकंदो, माणुससेलो वि एमेव ॥२५४॥ धुवरासीसु तिलक्खा, पण
पन्नसहस्स बसय चुलसीया ॥ मिलिया हवंति कमसो, परिहितिगं पुक्करद्धस्स
॥२५५॥ नइदहघणथणियागणि, जिणाइ नरजम्ममरणकालाई ॥ पणयाललक्ख
जोयण, नरखित्तंमुत्तु नो पुरउ ॥२५६॥ चउस्सुवि इसुयारेसु, इक्किक्कं नरन

गामि चत्तारि ॥ कूडावारि जिणन्नवणा, कुलागाराजिणन्नवणपरिमाणा ॥ २५७ ॥
तत्तो ङगुणपमाणा, चउदारा थुत्तवस्मियसुरूवा॥ नंदीसरबावस्मा, चउ कुंमलि रु
यगिचत्तारि ॥२५८॥ बहुसंखविगप्पे रुय, गदीव उच्चत्ति सहस चुलसीई ॥ नर
नगसमरुयगो पुण, विछरि सयठाण सहसंको ॥२५९॥ तस्स सिहरंमि चउदि
सि, बीयसहस्सि गिगु चउति अठ्ठ ॥ विदिसि चक इय चत्ता, दिसिकुमरि
कूड सहस्सुच्चा ॥२६०॥ इय कयवयदीवोदहि, वियारलेसो मएविमइणावि ॥
लिहिउ जिणगणहरगुरु, सुयसुयदेवीपसाएण ॥२६१॥ सेसाण दीवाण तहो
दहीणं, वियारविछारमणोरपारं ॥ सया सुयाउ परिन्नावयंतु, सवंपि सवंनुयइक्क
चित्ता ॥२६२॥ सूरिहि जं रयणसेहरनामएहिं, अप्पछ मेव रइयं नरखित्तविरकं
॥ तं सोहियं पयरणं सुयणाहि लोए, पावेउ तं कुसलरंगमयप्पसिर्द्धिं ॥२६३॥
इति श्री क्षेत्रसमासप्रकरणं संपूर्णम् ॥ इयखित्त समास पकरणस्सबठो० ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीदेवेंद्रसूरिकृतकर्मग्रंथमूलगाथाप्रारंभः ॥ आ
र्यावृत्तम् ॥ सिरिवीरजिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासर्ग वुच्छं ॥ कीरइ जिएण
हेउहिं, जेणंतो भसए कम्मं ॥१॥ पयइ ठिइ रस पएसा, तं चउहा मोअगस्स
दिठंता ॥ मूलपगइठ उत्तर, पगई अडवन्न सयभेअं ॥२॥ इह नाण दंसणा
वर,ण,वेअ मोहाउ नाम गोआणी ॥ विग्घं च पण नव दु अ, ठवीस चउ ति
सय दु पण विहं ॥३॥ मइ सुअ उही मणके, वलाणि, नाणाणि तह मइना
ण ॥ वंजणवग्गह चउहा, मण नयण विणिंदिअ चउक्का ॥४॥ अत्थुग्गह ईहा
वा,यधारणा,करण माणसेहिं छहा ॥ इअ अठवीस भेअं,चउदसहा वीसहा च
सुअं ॥५॥ अक्खर सन्नी सम्मं, साईयं खलु सपज्जवसिअं च ॥ गमिअं अंगप
विठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥६॥ पज्जय अक्खर पय सं,घाया,पडिवत्ति तह
य अणुजगो ॥ पाहुडपाहुड पाहुड, वत्थू पुव्वाय ससमासा ॥७॥ अणुगामि

वड्ढमाणय, पडिवाई यरविहा बहा उही ॥ रिउमइ विउलमई मण, नाणं के
वल मिगविहाणं ॥८॥ एसिंजं आवरणं, पडुव्व चक्कुस्स तं तया वरणं ॥ दंसण
चउ पण निद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ९ ॥ चक्कु दिठि अचक्कू, सेसिंदिय
उहिं केवलेहिं च ॥ दंसण मिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥ सुह
पडिबोहा निद्दा, निद्दा निद्दा य दुक्खपडिबोहा ॥ पयला विउवविठ, स्स, पयल
पयला य चंकमउ ॥ ११ ॥ दिण चिंतिअत्थ करणी, थीणद्धी अद्धचक्कि अद्ध
बला ॥ महुलित्त खग्गधारा, लिहिणं व दुहाउ वेअणिअं ॥ १२ ॥ उसन्नं सु
रमणुए, सायमसायं तु तिरिअ निरएसु ॥ मज्जंव मोहणीअं, दुविहं दंसण च
रण मोहा ॥ १३ ॥ दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिच्छत्तं ॥ सुद्धं अद्ध
विसुद्धं, अविसुद्धं तं हवइ कमसो ॥१४॥ जिअ अजिअ पुस पावा, सव संव
र बंध मुक्क निज्जरणा ॥ जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइ बहुभेअं ॥१५॥ मी

ना न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने ॥ नालिअर दीवमणुणो, मि
छं जिणधम्म विवरीअं ॥ १६ ॥ सोलस कसाय नव नो, कसाय डुविहं चरित्त
मोहणियं ॥ अण अप्पच्चक्खाणा, पच्चक्खाणाय संजलणा ॥१७॥ जा जीव वरि
स चउमा, स पक्खग्गा निरय तिरिय नर अमरा ॥ सम्माणु सव्वविरई, अ
हखाय चरित्त घायकरा ॥१८॥ जल रेणु पुढवि पव्वय, राईसरिसो चउविहो को
हो ॥ तिणि सिलया कठठिअ, सेलथंभो वमोमाणो ॥१९॥ माया वलेहि गो
मु,त्तिमिंढसिंग घणवंसमूलसमा ॥ लोहो हलिह खंजण, कहम किमिराग सा
माणो ॥२०॥ जस्सुदया होइ जिए, हास रइ अरइ सोग भय कुच्छा ॥ सनिमि
त मन्नहा वा, तं इह हासाइ मोहणिअं ॥२१॥ पुरिसिछि तडुभयं पइ, अहि
लासो जव्व सा हवइ सोउ ॥ थी नर नपुं वेउदउ, फुंफुम तण नगरदाहसमो
॥२२॥ सुर नर तिरि निरयाउ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं ॥ बायाल ति

नवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तही ॥ २३ ॥ गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघाय णाणि संघयणा ॥ संठाण वन्न गंध र,स फास,अणुपुव्वि विहगगई ॥ २४ ॥ पिंमपयडित्ति चउदस,परघा उस्सास आय वुज्जोअं ॥ अगुरुलहु तित्थ निमिणो, वघाय मिअ अठपत्तेआ ॥२५॥ तस बायर पजत्तं, पत्तेय थिरं सुभं च सुभगं च ॥ सुसरा इज्ज जसं तस, दसगं थावरदसं तु इमं ॥ २६ ॥ थावर सुहुम अ पज्जं, साहारण अथिर असुभ दुभगाणि ॥ दुसर अणाइज्जा जस, मिअनामे सेअरा वीसं ॥२७॥ तसचउ थिरछक्कं अथि,रछक्क,सुहुमतिग थावरचउक्कं ॥ सुभगतिगाइ विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२८॥ वन्नचउ अगुरुलहु चउ, तसाइ दुति चउर छक्क मिच्चाइ ॥ इअ अन्नावि विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२९॥ गइआइअणुक्कमसो, चउ पण पण ति पण पंच छ छक्कं ॥ पण दुग पण ठ चउ दुग, इअ उत्तरभेअ पणसठी ॥३०॥ अडवीस जुआ तिनवइ,

संतेवा पनर बंधणे तिसयं ॥ बंधण संघाय गहो, तणूसु सामस वस्र चऊ
॥३१॥ इअ सत्त ठी बंधो,दएअ,नय सम्म मीसया बंधे ॥ बंधुद ए सत्ताए,
वीस डवीसठवणसयं ॥ ३२ ॥ नंरय तिरि नर सुरगई, इग विअ तिअ चउ
पणिंदि जाईउ ॥ उराल विउवा हा, र,तेअ कम्मण पण सरीरा ॥ ३३ ॥ बा
हू रु पिठि सिर उर, उअरंऽग उवंग अंगुली पमुहा ॥ सेसा अंगोवंगा, पढ
म तणुतिगस्सुवंगाणि ॥३४॥ उरलाइ पुग्गलाणं, निबद्ध बज्झंतयाण संबंधं ॥
जं कुणइ जउ समंतं, बंधण मुरलाइ तणु नामा ॥३५॥ जं संघायइ उरला,इ
पुग्गले तिणगणं वदंताली ॥ तं संघायं बंधण,मिव तणु नामेण पंचविहं॥३६॥
उराल विउवा हा, र याण सग तेअ कम्मजुत्ताणं ॥ नव बंधणाणि इअर, डु
सहि आणि तिन्नि तेसिं च॥ ३७ ॥ संघयण मठिनिचउ, तं छधा वज्जरिसह ना
रायं ॥ तहय रिसह नारायं, नारायं अद्धनारायं ॥३८॥ कीलिअ छेवठं इह,

रिसहो पट्टो अ कीलिआवज्जं ॥ उभउ मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे ॥३९॥ सम चउरंसं निग्गो, हा. साइ खुज्जाइ वामणं हुंडं ॥ संठाणा वन्न किण्ह, नील लोहिय हलिद्द सिआ ॥४०॥ सुरही दुरही रस पण, तित्त कडु कसाय अंबिला महुरा ॥ फासा गुरु लहु मिउ खर, सी उण्ह सिणिद्ध रुक्खट्ठा ॥ ४१ ॥ नील कसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्खं ॥ सीअं च असुह नवगं, इक्कारसगं सुहं सेसं ॥४२॥ चउहगइव्वणुपुव्वी, गइ पुव्वि दुगं तिगं निआउजुअं ॥ पुव्वी उदउ वक्के, सुह असुह वसु ट्ट विहग गई ॥ ४३ ॥ परघा उदया पाणी, परेसि बलिणंपि होइ दुद्धरिसो ॥ ऊससिण लद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसासनामवसा ॥४४॥ रविबिंबेउ जिअंगं, तावजुअं आयवाउ न उजलणे ॥ जमुसिण फासस्स तहिं, लोहिअवन्नस्स उदउत्ति ॥४५॥ अणुसिण पयासरूवं, जिअंगमुज्जोअए इह उज्जोआ ॥ जइ देवुत्तर विक्किअ, जोइस खज्जोअ माइव्व ॥४६॥ अंगं न

गुरु न लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरु लहु उदया ॥ तिच्छेण तिहुअणस्सवि,
पुज्जो से उदउ केवलिणो ॥४७॥ अंगोवंग निअमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहा
रसमं ॥ उवघाया उव हम्मइ, सतणु अवयवलंबि गाईहिं ॥४८॥ बि ति चउ
पणिंदितस्सा, बायरउ बायराजिआ थूला ॥ निअ निअ पज्जत्ति जुआ, प
ज्जता लद्धिकरणेहिं ॥४९॥ पत्ते अ तणू पत्ते,उदएणं दंतअठिमाइ थिरं ॥ ना
भुवरि सिराइ सुहं, सुभगाउ सव्वजणइठो ॥५०॥ सुसरा महुर सुहझुणी, आ
इज्जा सव्वलोअ गिज्झवउ ॥ जसउ जस कित्तीउ, थावर दसगं विवज्जत्थं ॥
॥५१॥ गोअं दुहुच्च नीअं,कुलाल इव सुघड भुंभलाईअं ॥ विग्घं दाणे लाभे,
भोग व भोगेसु विरिएअ ॥५२॥ सिरि हरिअसमं एअं, जह पडिकूलेण तेण
रायाई ॥ न कुणइ दाणाई अं,एवं विग्घेण जीवो वि ॥५३॥ पडिणीअत्तण नि
न्हव, उवघाय पउस अंतराएणं ॥ अच्चा सायणयाए, आवरण दुगं जिउ ज

यई ॥ ५४ ॥ गुरुन्नत्ति खंति करुणा, वय जोग कसायविजय दाण जुउ ॥ दढ धम्माई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयउ ॥५५॥ उम्मग्ग देसणाम,ग्ग नासणा देवदव्वहरणेहिं ॥ दंसणमोहं जिण मुणि, चेइअ संघाइ पडिणीउ ॥ ५६ ॥ दुविहं पि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विव समणो ॥ बंधइ निरयाउ महा, रंभ परिग्गहरउ रुद्दो ॥५७॥ तिरिआउ गूढहिअउ, सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ ॥ पयई य तणुकसाउ, दाणरुई मज्झिमगुणो अ ॥ ५८ ॥ अविरइमाइ सुराउ, बालतवोऽकाम निज्जरोजयइ ॥ सरलो अगार विल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥५९॥ गुण पेहीमय रहिउ, अज्झयण ज्झावणा रुई निच्चं ॥ पकुणइ जिणाइ भत्तो, उच्चं नीअं इअरहाउ ॥ ६० ॥ जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं ॥ इय कम्मविवागोयं, लिहिउ देविंदसूरीहिं ॥ ६१ ॥ इति कर्मविपाकनामा प्रथमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ १ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥ अथ श्रीद्वितीयकर्मग्रंथप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तम् ॥
तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं ॥ बंधुदयोदीरणया,
सत्ता पत्ताणि खविआणि ॥१॥ मिछे सासणमीसे, अविरय देसे पमत्त अपम
त्ते ॥ निअट्टि अनिअट्टि सुहु,मुवसम खीण सजोगि अजोगि गुणा ॥ २ ॥ अ
भिनव कम्मग्गहणं, बंधो उहेण तह वीस सयं ॥ तित्थयरा हारग डुग, वज्जं
मिछंमि सतर सयं ॥३॥ नरय तिग जाइ थावर,चउ हुंडा यव छिवठ नपु मि
छं ॥ सोलं तो इगहिअसय, सासणि तिरि थीण डुहग तिगं ॥४॥ अण मज्झा
गिइ संघय,ण,चउ नि उज्जोअ कुखगइ त्थित्ति ॥ पणवीसंतो मीसे, चउसयरि
डुहाउअ अबंधा ॥५॥ सम्मे सग सयरि जिणा, उबंधि,वइर नर तिअ बिअ
कसाया ॥ उरल डुगंतो देसे, सत्तठी तिय कसायं तो ॥६॥ तेवठि पमत्ते सो,
ग अरइ अथिर डुग अजस अस्सायं ॥ वुछिज्ज छच्च सत्तव, नेइ सुराउ जया

निठं ॥ ७ ॥ गुणसठि अप्पमत्ते, सुराउ बंधं तु जइ इहा गछे ॥ अन्नह अठाव
न्ना, जं आहारग डुगं बंधे ॥८॥ अडवन्न अपुव्वा इमि, निद्द डुगंतो छपन्न पण
भागे ॥ सुर डुग पणिंदि सुखगइ, तस नव उरल विणु तणु वंगा ॥९॥ समच
उर निमिण जिण व,न्न अगुरु लहु चउ छलंसि तीसंतो ॥ चरमे छवीस बंधो,
हास रई कुछ भय भेउ ॥१०॥ अनिअट्टि भाग पणगे, इगेगहीणो डुवीसविह
बंधो ॥ पुम संजलण चउण्हं, कमेण छेउ सतर सुहुमे ॥११॥ चउ दंसणुच्च ज
स ना,ण विग्घ दसगंति सोलसु छेउ ॥ तिसु साय बंध छेउ, सजोगि बंधंत अ
णंतो अ ॥१२॥ बंधो संमत्तो ॥१॥ उदउ विवाग वेअण,मुदीरण मपत्ति इह डु
वीस सयं ॥ सतर सयं मिछे मी,स,सम्म आहार जिणणुदया ॥ १३ ॥ सुहुम
तिगा यव मिछं, मिछत्तं सासणे इगारसयं ॥ निरयाणु पुव्विणुदया, अण थाव
र इग विगल अंतो ॥१४॥ मीसे सय मणु पुव्वी,णुदया मीसो दएण मीसंतो ॥

चउसय मजए सम्मा,णु पुव्वि खेवा बिअ कसाया ॥ १५ ॥ मणुतिरिणु पुव्वि
विउव,ठ,डुहग अणाइज्जदुग सतर छेउ ॥ सगसीइ देसि तिरि गइ, आउ नि
उज्जोअ ति कसाया ॥१६॥ अठछेउ इगसी, पमत्ति आहार जुअल पक्खेवा ॥
थीण तिगा हारग दुग, छेउ छ सयरि अपमत्ते ॥ १७ ॥ समत्तं तिमसंघय,ण,
तिअग छेउ बिसत्तरि अपुव्वे ॥ हासाइ छक्क अंतो, छसठि अनिअट्टि वेअ तिगं
॥ १८ ॥ संजलण तिगं छ छेउ,सठी सुहुमम्मि तुरिअ लोभंतो ॥ उवसंत गुणे
गुण स,ठि रिसह नाराय दुग अंतो ॥१९॥ सगवन्न खीण डु चरिमि, निद्द डु
गंतो अचरिमि पणवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण,चउ छेउ सजोगि बायाला ॥२०॥
तिबुदया उरला थिर, खगइ दुग परित्त तिग छ संठाणा ॥ अगुरु लहु वन्न
चउ निमि,ण तेअ कम्माइग संघयण॥२१॥सूसर दूसर साया, साए गयरं च
तीस वुछेउ ॥ बारस अजोगि सुभगा, इज्ज जसन्नयर वेअणिअं ॥ २२ ॥ तस

तिग पणिंदि मणुआ,उ गइ जिणु च्चंति चरिम समयंतो॥उदउ सम्मत्तो॥२॥उद
उवुदीरणया,परम पमत्ताइ सग गुणेसु॥पाठांतरे॥परम पमत्ताइसगतिगुणा॥२३
पाठांतरगाथा ॥ जं वेअणिआहारदु, गथीणतिगनराउअडपमत्तता॥गुणयाल
सजोगिउदी, एणं तु अणुदीरगु अजोगी ॥२४॥ एसा पयडी तिगुणा,वेअणि
आहार जुअल थीण तिगं ॥ मणुआउ पमत्तंता, अजोगि अणुदीरगोभय
वं॥२५॥उदीरणा सम्मत्ता॥३॥ सत्ता कम्माण ठिई, बंधाइअ लद्ध अत्त लाभा
णं ॥ संते अडयाल सयं, जा उवसमु विजिणु बिअ तइए ॥२६ ॥ अपुव्वाइअ
चउक्के, अण तिरि निरयाउ विणु बिआलसयं ॥ सम्माइ चउसु सत्तग, खयं
मि इग चत्तसय महवा ॥२७॥ खवगंतु पप्प चउसुवि, पणयालं निरय तिरि सु
राउ विणा ॥ सत्तग विणु अडतीसं, जा अनिअट्टी पढम भागो ॥२८॥ थावर
तिरि निरया यव, दुग थीण तिगे ग विगल साहारं ॥ सोल खउ दुविस सयं,

विअंसि विअ तिअ कसायंतो ॥२ए॥ तइआइसु चउदस ते,र बार ब पण च उ तिहिअ सय कमसो ॥ नपु इत्थि हासछग पुस, तुरिअ कोहो मय माय ख ओ ॥३०॥ सुहुमि हुसय लोहंतो, खीण डु चरिमेगसय डु निद्द खओ ॥ नवनव इ चरिम समए, चउ दंसण नाण विग्घंतो ॥३१॥ पणसीइसजोगि अजो,गि डु चरिमे देव्व खगइ गंध डुगं ॥ फासठ वन्न रस तणु, बंधण संघाय पण निमि णं ॥ ३२ ॥ संघयण अथिर संठा,ण छक्क अगुरुलहु चउ अपजत्तं ॥ सायं च असायं वा, परित्तुवंगातिग सुसर निअं ॥३३॥ विसयरि खओ अचरिमे, तेरस मणुअ तस तिग जसाइज्जं ॥ सुभग जिणुच्च पणिंदिअ, सायासा एगयर छेओ ॥३४॥ नर अणुपुव्वि विणा वा,बारस चरिम समयंमि जो खविउ ॥ पत्तो सिद्धिं देविं,द वंदियं नमह तं वीरं ॥३५॥सत्ता सम्मत्ता ॥४॥ इति कर्मस्तवाख्यो द्विती यः कर्मग्रंथः संपूर्णः ॥ बंधविहाणविमुक्कं, वंदिअ सिरिवद्धमाण जिणचंदं॥ गइ

आईसु वुच्छं, समासउ बंधसामित्तं ॥१॥ गइइंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणे
य ॥ संजमदंसणलेसा, भवसम्मे सन्निआहारे ॥ २ ॥ जिण सुर विउवाहारग,
देवाउअनिरय सुहुम विगल तिगं ॥ एगिंदि थावरा यव, नपु मिच्छं हुंडछेवट्ठं ॥३॥
अण मज्झागिइ संघय,ण, कुखगइ निअ इत्थि दुहग थीण तिगं ॥ उज्जोअ तिरि
दुगं तिरि, नराउ नर उरल दुग रिसहं ॥४॥ सुर इगुण वीस वज्जं, इगसउ उ
हेण बंधहिं निरया ॥ तित्थविणा मिच्छि सयं, सासणि नपु चउविणा छनुइ ॥५॥
विणु अण छवीस मीसे, बिसयरि सम्मंमि जिण नराउ जुआ ॥ इअ रयणाइ
सु भंगो, पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥ ६ ॥ अजिण मणु आउ उहे, सत्तमिए नर
दुगुच्च विणु मिच्छे ॥ इग नवई सासाणे, तिरिआउ नपुंस चउवज्जं ॥ ७ ॥ अण
चउवीस विरहिया, सनर दुगुच्चाय सयरि मीस दुगे ॥ सतरसउ उहि मिच्छे,
पज तिरिआ विणु जिणाहारं ॥८॥ विणु निरय सोल सासणि, सुराउ अण ए

गतीस विणु मीसे ॥ ससुराउ सयरि सम्मे, बीअ कसाए विणा देसे ॥ ९ ॥ इ
अ चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण उहु देसाइ ॥ जिण इक्कारस हीणं,
नव सय अपजत्त तिरिअ नरा ॥१०॥ निरयव्व सुरा नवरं, उहे मिच्छे इगिंदि
तिग सहिआ ॥ कप्प दुगे विअ एवं, जिणहीणो जोइ भवण वणे ॥ ११ ॥ रय
णुव सणं कुमारा, इ, आणयाइ उजोअ चउरहिआ ॥ अपज्ज तिरिअव नव स
य, मिगिंदि पुढवि जल तरु विगले ॥१२॥ छनवइ सासणि, विणु सुहु, म तेर के
इ पुण बिंति चउनवइ ॥ तिरिअ नरा उहि विणा, तणु पज्जत्तिं न जंति जउ ॥
॥१३॥ उहु पणिंदि तसेगइ, तसे जिणिक्कार नर तिउच्च विणा ॥ मणवय जोगे
उहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से ॥१४॥ आहार छग विणोहे, चउदससउ मिच्छि
जिण पणगहीणं ॥ सासणि चउ नवइ विणा, तिरिअ नराउ सुहुम तेर ॥१५॥
अण चउवीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जोगिणो सायं ॥ विणु तिरि न

राउ कम्मे, वि ; एवमाहारडुगि उहो ॥ १६ ॥ सुरउदो वेउवे, तिरिअ नराउ र
हिउं तम्मिस्से ॥ वेअ तिगा इम विअ तिअ, कसाय नव डु चउ पंच गुणा
॥१७॥ संजलण तिगे नव दस, लोभे चउ अजइ डु ति अनाण तिगे ॥ बार
स अचखु चखुसु, पढमा अहखाइ चरिम चउ ॥१८॥ मणनाणी सग जया
इ, समइअ छेअ चउ डुन्नि परिहारो॥केवल डुगि दो चरिमा,अजयाइ नवमइ
सु उहि डुगे ॥१९॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिछ तिगि देसे
॥ सुहुमि सठाणं तेरस, आहारग निअ निअ गुणोहो ॥२०॥ परमुवसमि वट्टं
ता, आउ न बंधंति तेण अजयगुणे ॥ देवमणुआउ हीणो, देसाइसु पुण सुरा
उविणा ॥२१॥ उहे अठारसयं, आहार डुगूणमाइ लेसतिगे ॥ तं तिछोणं मि
छे, साणाइसु सबहिं उहो ॥२२॥ तेऊ निरय नवूणा, उक्कोअ चउ निरय बार
विणु सुक्का ॥ विणु निरय बार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिछे ॥२३॥ सव गुण

नवसन्निसु, उंहु अनवा असन्नि मिछिसमा ॥ सासणि असन्नि सन्निव, कम्म णनंगो अणाहारे ॥२४॥ तिसु डुसु सुक्काइ गुणा, चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं ॥ देविंदसूरि रइअं, नेयं कम्मबयं सोउं ॥२५॥ इति बंधस्वामित्वाख्यस्तृतीयः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥३॥ ॥ छ ॥ ॥छ॥ ॥ छ ॥ ॥छ॥

नमिअ जिणं जिअमग्गण, गुणठाणुवउग जोग लेसाउ ॥ बंध प्पबहू नावे, संखिज्जाई किमवि वुछं ॥१॥ नमिअ जिणं वत्तवा, चउदस जिअठाणएसु गुणठाणा ॥ जोगुवउगो लेसा, बंधोदउ दीरणा सत्ता ॥२॥ (पाठांतरं) चउदसजियठाणेसु, चउदसगुणठाणगाणिजो गाय ॥ उवउगलेसबंधो, दउदीरणसंत अठप ए॥२॥तह मूल चउद मग्गण, ठाणेसु बासठि उत्तरेसु यवि ॥ जिय गुण जोगुवउ गा, लेस प्पबहुं च ठाणा॥३॥पाठांतरं ॥ चउदस मग्गणठाणे, सुमूलपएसु बिसठि इयरेसु ॥ जियगुणजोगुवउगा, लेसप्पबहुत्तठाणा ॥ ३ ॥ चउदस गुणेसु

जिअ,जो,गु वउग लेसाय बंधहेऊ य ॥ बंधाइअ चउ अप्पा, बहुं च तो नाव संखाइं ॥ ४ ॥ (पाठांतरं) चउदसगुणठाणेसु, जियजोगुवउग लेसबंधाय ॥ बंधुद दीरणाउ, संतप्पबहुत्तदसठाणा ॥ ४ ॥ दार गाहाउ ॥ अथ जीवस्थानानि उच्यन्ते ॥ इह सुहुम बायरेगिं, दि बि ति चउ असन्नि सन्नि पंचिंदी ॥ अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउदस जिअठाणा ॥ ५ ॥ बायर असन्नि विगले, अपज्जि पढम बिअसन्नि अपजत्ते ॥ अजय जुअ सन्निपज्जे, सवगुणा मिछ सेसेसु ॥ ६ ॥ अपजत्त छक्कि कम्मु,र,ल मीस जोगा अपज्ज सन्नीसु ॥ ते सवि उवमीस एसु, तणु पज्जेसु उरलमन्ने ॥ ७ ॥ सव्वे सन्नि पजत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु ॥ बायरि सविउवि डुगं, पज सन्निसु बार उवउगा ॥ ८ ॥ पज चउरिंदि असन्निसु, डु दंसडुअनाण दससु चक्खु विणा ॥ सन्निअपज्जे मण ना,ण,चक्खु केवल डुग विहूणा ॥ ९ ॥ सन्नि

इगि छ लेस, अप, ज बायरे पढम चउ तिसेसेसु ॥ अथ बंधादीनि चत्वारि
द्वाराणि प्रारभ्यन्ते ॥ सत्तट्ठ बंधुदीरण, संतु दया अट्ठ तेरससु ॥ १० ॥
सत्तट्ठ छेग बंधा, संतु दया सत्त अट्ठ चत्तारि ॥ सत्तट्ठ छ पंच दुगं,
उदीरणा सन्निपज्जत्ते ॥ ११ ॥ गइ इंदिए अ काए, जोए वेए कसाय नाणे
सु ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥१२॥ सुर नर तिरि निर
य गइ, इग बिअ तिअ चउ पणिंदि छक्काया ॥ भूजल जलणानिल वण, त
सा य मण वयण तणु जोगा ॥१३॥ वेअ नरि त्थि नपुंसग, कसाय कोह मय
माय लोभत्ति ॥ मइ सुअवहि मण केवल, विभंग मइ सुअ नाण सागारा
॥१४॥ सामाइअ छेअ परिहा, र, सुहुम, अहखाय देस जय अजया॥ चक्खु अ
चक्खू ओही, केवल दंसण अणागारा ॥१५॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा
य सुक्क भविअरा ॥ वेअग खइगुवसम, मि, छ मीस सासाण सन्निअरे ॥१६॥

आहारे अर नेआ, सुर निरय विभंग मइसु ओहि डुगे ॥ सम्मत्त तिगे पम्हा,
सुक्का सन्नीसु सन्निडुगं ॥१७॥ तमसन्नि अपजजुअं, नरे सबायर अपज्ज ते
ऊए ॥ थावर इगिंदि पढमा, चउ बार असन्नि डुडु विगले ॥१८॥ दस चरिम
तसे अजया, हारग तिरि तणु कसाय डु अनाणे ॥ पढमति लेसा जविअर,
अचक्खु नपु मिच्छि सव्वेवि ॥१९॥ पज्ज सन्नि केवल डुग, संजम मणनाण देस
मण मीसे ॥ पण चरिम पज्ज वयणे, तिय ठवि पज्जिअर चक्खुंमि ॥२०॥ थी न
र पणिंदि चरमा, चउ अणाहारे डुसन्नि ठ अपज्जा ॥ ते सुहुम अपज्ज विणा,
सासणि इत्तो गुणे वुठं ॥२१॥ पण तिरि चउ सुर निरए, नर सन्नि पणिंदि भ
व तसि सव्वे ॥ इग विगल भूदगवणे, डु डु एगं गइ तस अभव्वे ॥ २२ ॥ वेअ
ति कसाय नव दस, लोभे चउ अजइ डु ति अनाण तिगे ॥ बारस अचक्खु
चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चउ ॥ २३ ॥ मणनाणि सग जयाई, समइअ

छेअ चउ दुन्नि परिहारे ॥ केवल दुगि दो चरिमा, जयाइ नव मइसु ओहि दुगे
॥२४॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छ तिगि देसे ॥ सुहुमे स्स
ठाण तेर,स,जोग आहार सुक्काए ॥२५॥ असन्निसु पढम दुगं, पढम तिले
सासु छच्च दुसु सत्त ॥ पढमं तिम दुग अजया, अणहारे मग्गणासु गुणा ॥
॥२६॥ सच्चे अर मीस अस,च्च मोस,मणवय विउव्वि आहारा ॥ उरलं मीसा
कम्मण, इअ जोगा कम्म अणहारे ॥२७॥ नर गइ पणिंदि तस तणु, अचक्खु
नर नपु कसाय सम्मदुगे ॥ सन्नि छलेसा हारग, भव मइ सुअ ओहि दुगि स
वे ॥२८॥ तिरि इत्थि अजय सासण, अनाण उवसम अभव्व मिच्छेसु ॥तेराहार
दुगूणा, ते उरलदुगूण सुर निरए ॥२९॥ कम्मुरलदुगं थावरि, ते सविउव्वि दुग
पंच इग पवणे ॥ छ असन्नि चरिम वइजुअ,तेविउव्वि दु गूण चउविगले ॥३०॥
कम्मुरलमीस विणु मण, वय समइअ छेअ चक्खु मणनाणे ॥ उरल दुग कम्म

पढमं,तिम,मण वय केवल डुगंमि ॥३१॥ मणवय उरला परिहा,र,सुहुमि नव
तेउ मीसि सविउवा ॥ देसे सविउवि डुगा, सकम्मुरल मीस अहखाए॥३२॥
ति अनाण नाण पण चउ, दंसण बार जिअलक्खणु वउगा ॥ विणु मण नाण
डु केवल, नव सुर तिरि निरय अजएसु ॥३३॥ तस जोअ वेअ सुक्का, हार न
र पणिंदि सन्नि नवि सवे ॥ नयणे अरपण लेसा, कसाय दस केवल डुगूणा
॥३४॥ चउरिंदि असनि डु अना,ण,डुदंस इग बि ति थावरि अचक्खु ॥ ति
अनाण दंसण डुगं, अनाण तिगि अनवि मिछ डुगे ॥३५॥ केवलडुगं निअ
डुगं, नव ति अनाणविणु खइअ अहखाए ॥ दंसण नाण तिगं दे,सि मीसि
अन्नाण मीसंतं ॥३६॥ मण नाण चक्खु वजा, अणहारे तिन्नि दंस चउ नाणा
॥ चउ नाण संजमो वस,म वेअगे उहि दंसेअ ॥३७॥ दो तेर तेर वारस, म
णेकमा अठ डु चउ चउ वयणे ॥ चउ डु पण तिन्नि काए, जिअ गुण जोगोव

उगन्ने ॥३८॥ तसु लेसासु सगाणं, एगिंदि असन्नि नूदगवणेसु ॥ पढमा चउ
रो तिन्निउ, नारय विगलग्गि पवणेसु ॥३९॥ अहखाय सुहुम केवल, डुगि सु
क्का गवि सेस गणेसु ॥ नर निरय देव तिरिआ, थोवा डु असंखणंतगुणा ॥
॥४०॥ पण चउ ति डु एगिंदी, थोवा तिन्नि अहिआ अणंत गुणा ॥ तस थो
व असंखग्गी, नू जला निल अहिअ अणंता ॥४१॥मण वयण काय जोगी,
थोवा असंख गुणा अणंतगुणा ॥ पुरिसा थोवा इत्ती, संखगुणाणंतगुण कीवा
॥४२॥ माणी कोही माई, लोभी अहिअ मणनाणिणो थोवा ॥ उहि असंखा
मइ सुअ,अहिय सम असंख विभंगा ॥ ४३ ॥ केवलिणोणंतगुणा, मइ सुअ
अन्नाणिणंतगुण तुल्ला॥सुहुमा थोवा परिहा,र संख अहखाय संखगुणा॥४४॥
छेआ समइअ संखा,देस असंखगुणडणंत गुण अजया॥थोव असंख डुणंता,
उहि नयण केवल अचक्खू ॥४५॥ पत्ताणु पुवि लेसा,थोवा दोसंखणंत दो अ

हिआ ॥ अभवि इअर थोवदुअणंता, सासण थोवो वसमसंखा ॥ ४६ ॥ मीसा सं
खा वेअग, असंख गुण खइअ मिच्छ दु अणंता ॥ सन्नि इअर थोवणंता, अण
हार थोवेअर असंखा ॥४७॥ सव्व जिअठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्ज
सन्नि दुगं ॥ सम्मे सन्नी दुविहो, सेसेसु सन्नि पज्जत्तो ॥४८॥ मिच्छ दुगिअ जइ
जोगा, हार दुगूणा अपुव्व पण गेउ ॥ मणवय उरल सविउव्वि, मीसी सविउ
वि दुग देसे ॥४९॥ साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहार मीस विणु इअरे ॥ कम्मुरल
दुगंता इम, मण वयण सजोगि न अजोगि ॥ ५० ॥ ति अनाण दुदंसा इम,
दुगे अजय देसि नाण दंस तिगं ॥ ते मीसि मीस समणा, जयाइ केवल दु अं
त दुगे ॥५१॥ सासण भावे नाणं, विउव्व गाहारगे उरल मिस्सं ॥ नेगिंदिसु
सासाणो, नेहाहि गयं सुअ मयंपि ॥५२॥ छसु सव्वा तेउ तिगं, इगि छसु सुक्का
अजोगि अल्लेसा ॥ बंधस्स मिच्छ अविरइ, कसाय जोगत्ति चउ हेऊ ॥५३॥ अ

अभिगहिअ मणभिगहिआ, भिनिवेसिअ संसइअ मणा भोगा ॥ पण मिच्छ बा
र अविरइ, मण करणानिअमु छ जिअवहो ॥५४॥ नव सोल कसाया पन,
र जोग इअ उत्तरा उसगवना ॥ इग चउ पण ति गुणेसु, चउ ति दु इग पच्च
उ बंधो ॥५५॥ चउ मिच्छ मिच्छ अविरइ, पच्चइआ साय सोल पणतीसा ॥ जो
ग विणु ति पच्चइआ, हारग जिण वज्ज सेसाउ ॥५६॥ पणपन्न पन्न तिअ छहि,
अचत्त गुणचत्त छ चउ दुगवीसा ॥ सोलस दस नव नव स,त्त हेउ णो नउ अ
जोगम्मि ॥५७॥ पणपन्न मिच्छि हारग, दुगूण सासाणि पन्न मिच्छविणा ॥ मीस
दुग कम्म अण विणु, तिचत्त मीसे अह छ चत्ता ॥५८॥ सदुमीस कम्म अज
ए, अविरइ कम्मुरलमीस बिकसाए ॥ मुत्तु गुण चत्त देसे, छवीस साहार दु
पमत्ते ॥५९॥ अविरइ इगार तिकसा,य वज्ज अपमत्ति मीस दुग रहिआ ॥ च
उवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अविउव्वि आहारा ॥६०॥ अ छहास सोल बायरि,

सुहुमे दस वेअ संजलण ति विणा ॥ खीणु वसंति अजोगा, सजोगि पुव्वुत्त
सग जोगा ॥६१॥ अपमत्तंता सत्त,ठ मीस अपुव्व बायरा सत्त ॥ बंधइ छस्सु
हुमो ए,ग सुवरिमाबंधगा जोगी ॥ ६२ ॥ आसुहुमं संतुदए, अठवि मोह वि
णु सत्त खीणंति ॥ चउ चरिम दुगे अठ्ठ, संते उवसंति संतुदए ॥ ६३ ॥ उइरं
ति पमत्तंता, सगठ मीसठ वेअ आउ विणा ॥ छग अपमत्ताइ तउ, छ पंच सु
हुमो पणु वसंतो ॥६४॥ पण दो खीण दु जोगी, णुदीरगु अजोगि थोव उव
संता ॥ संख गुण खीण सुहुमा, निअहि अपुव्व सम अहिआ ॥६५॥ जोगि अ
पमत्त इयरे, संख गुणादेस सासणा मीसा ॥ अविरइ अजोगि मिछा, असंख
चउरो दुवेणंता ॥६६॥ उवसम खय मीसोदय, परिणामा दु नव टारइगवीसा
॥ तिअ भेअसन्नि वाइअ, सम्मं चरणं पढम भावे ॥६७॥ बीए केवल जुअलं,
सम्मं दाणाइ लद्धि पण चरणं ॥ तइए सेसुव उगा, पण लद्धी सम्म विरइ दु

गं ॥ ६८ ॥ अन्नाण मसिद्धत्ता, संजम लेसा कसाय गइ वेआ ॥ मिच्छे तुरिए
भवा, भवत्त जिअत्त परिणामे ॥ ६९॥ चउ चउ गईसु मीसग, परिणामुदएहिं
चउसु खइएहिं ॥ उवसम जुएहिं वा चउ, केवलि परिणामुदय खइए ॥ ७० ॥
खय परिणामे सिद्धा, नराण पण जोगु वसम सेढीए ॥इअ पनर संनिवाइअ,
भेआ वीसं असंभविणो ॥७१॥ मोहो वसमो मीसो, चउघाइसु अट्ठ कम्मसु
असेसा ॥ धम्माइ पारिणामिअ, भावे खंधा उदइ एवि ॥ ७२ ॥ सम्माइ चउ
सु तिग चउ, भावा चउ पणु वसामगुवसंते ॥ चउखीण पुव्वे ति,न्निसेस गुण
ठाणगे गजिए ॥७३॥ संखिज्जेग मसंखं, परित्तजुत्त निअ पय जुअं तिविहं ॥
एव मणंतंपि तिहा, जहन्न मज्जुकसा सवे ॥ ७४ ॥ लहु संखिज्जं दुच्चिअ, अउ
परं मज्झिमंतु जागुरुअं ॥ जंबूदीवपमाणय, चउपल्ल परूवणाइ इमं ॥७५॥ प
ल्लाणवट्ठिअ सिला,ग पडिसिलागा महासिलागक्खा ॥ जोअण सहसो गाढा,

सवेइ अंता ससिह भरिआ ॥७६॥ तो दीवुदहिसु इक्कि,क्क सरिसवं खिवि अ
निठिए पढमे ॥ पढमं व तदंतं चिअ,पुण भरिए तंमि तह खीणे ॥७७॥ खिप्प
इ सिलाग पल्ले,गु सरिसवोइय सिलाग खिवणेणं ॥ पुण्णो बीउ अ तउ,पुव्वंपि
व तंमि उद्धरिए ॥७८॥ खीणे सिलागि तइए, एवं पढमेहिं बीअयं भरसु ॥ ते
हिं अ तइअं तेहिं अ, तुरिअंजा किरफुडा चउरो ॥७९॥ पढमति पल्लुद्धरिआ,
दीवुदही पल्ल चउ सरिस वाय ॥ सव्वो वि एस रासी,रूवूणो परमसंखिज्जं॥८०॥
रूव जुअंतु परित्ता, ऽसंखं लहु अस्सरासि अब्भासे ॥ जुत्ता संखिज्जं लहु,
आवलिआ समय परिमाणं ॥८१॥ बि ति चउ पंचम गुणणे, कम्मासग संख
पढम चउ सत्त ॥ णंता ते रूवजुआ, मज्झारूवूण गुरुपच्छा ॥ ८२ ॥ इय सुत्तुत्तं
अन्ने, वग्गिअ मिक्कसि चउत्थय मसंखं ॥ होइ असंखासंखं, लहुरूवजुअं तु
तं मज्झं ॥८३॥ रूवूण माइमं गुरु, तिवग्गिउ तत्थिमे दसक्खेवे ॥ लोगागासपए

सा, धम्माधम्मेगजिअ देसा ॥८४॥ ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभागा जोग छेअ पडिभागा ॥ उस्सप्पिणि समयाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु ॥ ८५ ॥ पुण तंमि ति वग्गिअए, परित्तणंतं लहु तस्स रासीणं ॥ अब्भासे लहु जुत्ता, णंतं अभव जिअमाणं ॥८६॥ तव्वग्गे पुण जायइ, णंता णंत लहु तंच तिक्खुत्तो ॥ वग्गसु तह विनतं हो,इ णंत खेवे खिवसु छ इमे ॥८७॥ सिद्धा निगोअ जीवा, वणस्सई काल पुग्गला चेव ॥ सव्व मलोग नहं पुण, तिवग्गिउं केवल दुगंमि ॥८८॥ खित्ते णंताणंतं, हवेइ जिट्ठं तु ववहरइ मज्झं ॥ इय सुहमत्थ विआरो, लिहिउ देविंदसूरीहिं ॥ ८९ ॥ इति षडशीतिकाख्यश्चतुर्थः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ॥ ४ ॥ अथ शतकनामा पंचमः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते ॥ नमिअ जिणं धुव बंधो, दय सत्ता धाइ पुन्न परिअत्ता ॥ सेअर चउह विवागा, वुच्छं बंधविह सामी अ ॥ १ ॥ वन्न चउ तेअ कम्मा, गुरु लहु निमिणो वघाय

भय कुछा ॥ मिच्छ कसाया वरणा, विग्घं धुववंधि सगचत्ता॥१॥तणु वंगा गिइ
संघय,ण जाइ गइ खगइ पुवि जिणु सासं ॥ उज्जो आयव परघा, तसवीसा
गोअ वेयणियं ॥ २ ॥ हासाइ जुअल दुग वे,अ आउ तेउत्तरी अधुव बंधो ॥
भंगा अणाइ साई, अणतं संतुत्तरा चउरो ॥४॥ पढम बिआ धुव उदइसु, धु
ववंधिसु तइअ वज्ज भंगतिगं ॥ मिच्छंमि तिन्नि भंगा, दुहावि अधुवा तुरिअ
भंगा ॥५॥ निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेअ कम्म चउवन्ना ॥
नाणंतराय दंसण, मिछं धुव उदय सगवीसा ॥६॥ थिर सुभि अर विणु अधुव,
बंधी मिछ विणु मोह धुवबंधी ॥ निद्दोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवु
दया ॥ ७ ॥ तस वन्न वीस सगते,अ,कम्म धुव बंधि सेस वेय तिगं ॥ आगिइ
तिग वेअणिअं, दु जुअल सग उरल सास चऊ ॥८॥ खगई तिरि दुग नीअं,
धुव सत्ता सम्ममी स मणुअ दुगं ॥ विउव्विकार जिणाउ, हारस गुच्चा अधुवस

त्ता ॥९॥ पढम तिगुणेसु मिच्छं, निअमा अजयाइ अठ गे भज्जं ॥ सासाणे ख
लु सम्मं, सत्तं मिच्छाइ दसगेवा ॥१०॥ सासणे मीसेसु धुवं, मीसं मिच्छाइ नव
सु भयणाए ॥ आइ दुग अण नियमा, भइआ मीसाइ नवगम्मि ॥११॥ आ
हार सत्तगं वा, सव्व गुणे वि ति गुणे विणा तित्थं ॥ नो भय संते मिच्छो, अंत
मुहुत्तं भवे तित्थे ॥१२॥ केवल जुअला वरणा, पण निद्दा बारसाइम कसाया
॥ मिच्छंति सव्व घाई, चउ नाण ति दंसणा वरणा ॥१३॥ संजलण नो कसाया,
विग्घं इअ देस घाइअ अघाइ ॥ पत्तेअ तणु ठाऊ, तस वीसा गोअ दुग व
न्ना ॥१४॥ सुर नर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वंग वइर चउरंसं ॥ परघासग
तिरिआऊ, वन्न चउ पणिंदि सुभखगइ ॥१५॥ बायाल पुन्न पगइ, अपढम
संठाण खगइ संघयणा ॥ तिरि दुग असाय नीअं, उवघाय इग विगल निरय
तिगं ॥१६॥ थावर दस वन्न चउ, घाय पणयाल सहिअ बासीई ॥ पाव पय

डित्ति दोसु वि, वसाइगहा सुहा असुहा ॥१७॥ नाम धुव बंधि नवगं, दंसण पण नाण विग्घपरघायं ॥ भय कुछ मिछ सासं, जिण गुण तीसा अपरियत्ता ॥१८॥ तणु अठ वेअ दु जुअल,कसाय उजोअ गोय दुग निद्दा ॥ तस वीसा उ परित्ता, खित्तविवागाणुपुवीउ ॥ १९ ॥ घणघाइ दु गोअ जिणा, तसिअर तिगसुभग दुभग चउ सासं ॥ जाइ तिग जिअ विवागा, आऊ चउरो भव विवागा ॥ २० ॥ नाम धुवोदय चउ तणु, वघाय साहारणियजोअतिगं ॥ पुग्गल विवागि बंधो, पयइ ठिइ रस पएसत्ति ॥ २१ ॥ मूल पयडीण अड स, त्त छेग बंधेसु तिन्नि भूगारा ॥ अप्पतरा तिअ चउरो, अवठिआ नहु अवत्तवो ॥२२॥ एगादहिगे भूउ, एगाई ऊणगम्मि अप्पतरो ॥ तम्मत्तो अवठिय उ, पढमे समए अवत्तवो ॥२३॥ नव छ चऊदंसे दुदु, ति दु मोहे दु इगवीस सत्तरस ॥ तेरस नव पण चउ ति दु, इक्को नव अठ दस दुन्नि ॥२४॥ ति पण

छ अठ नवहिया, वीसा तीसेगतीस इग नामे ॥ छस्सग अठ तिबंधो, सेसे
सु ठाणमिक्किक्कं ॥२५॥ वीसयर कोडि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥ ती
सयर चउसु उदही, निरय सुराउंमि तित्तीसा ॥२६॥ मुत्तुं अकसाय ठिइ, बार
मुहुत्ता जहन्न वेयणिए ॥ अठ ठ नाम गोए, सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥२७॥ वि
ग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे ॥ पढमा गिइ संघयणे, द
स दुसु चरिमेसु दुग वुढ्ढी ॥२८॥ चालीस कसाएसु, मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि
सिय महुरे ॥ दसदो सढ्ढ समहिया, ते हालिद्द बिलाईणं ॥२९॥ दस सुह विह
गइ उच्चे, सुरदुग थिर छक्क पुरिस रइ हासे ॥ मिच्छे सत्तरि मणु दुग, इत्थी सा
एसु पन्नरस ॥३०॥ भय कुच्छ अरइ सोए, विउव्वि तिरि उरल निरय दुग नीए ॥
तेअ पण अथिर छक्के, तस चउ थावर इग पणिंदि ॥ ३१ ॥ नपु कुखगइ सा
सचउ, गुरु कक्खड रुक्ख सीय दुग्गंधे ॥ वीसं कोडा कोडी, एवइआबाह वाससया

॥३२॥ गुरु कोडि कोडि अंतो, तित्थाहाराण भिन्न मुहु बाहा ॥ लहु ठिइ सं
ख गुणूणा, नर तिरियाणाउ पल्ल तिगं ॥३३॥ इग विगल पुव्व कोडी, पलिया
संखंस आउ चउ अमणा ॥ निरुवक्कमाण छमासो, अबाह सेसाण भवंतंसो ॥
॥३४॥ लहु ठिइ बंधो संजल,ण लोह पण विग्घ नाण दंसेसु ॥ भिन्न मुहुत्तं
ते अ,ठ जसुच्चे बारसय साए ॥३५॥ दो इग मासो पक्खो, संजलण तिगे पुम
ठ वरिसाणि ॥ सेसाणुक्कोसाउ, मिच्छत्तठिइ ए जलद्धं ॥३६॥ अय मुक्कोसो गिं
दिसु, पलियाऽसंखं सहीण लहु बंधो ॥ कमसो पणवीसाए, पन्नासय सहस
संगुणिउ ॥३७॥ विगल असन्निसु जिट्ठो, कणिट्ठउ पल्लसंख भागूणो॥ सुर नि
रयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुड्ड भवं ॥३८॥ सव्वाणवि लहु बंधे, भिन्न मु
हु अ बाह आउ जिट्ठेवि ॥ केइ सुराउ समजिण, मंत मुहु बिंति आहारं ॥
॥३९॥ सत्तरस समहिआ किर,इ गाणु पाणंमि हुंति खुड्डभवा ॥ सगतीस स

य तिहुत्तर, पाणू पुण इग मुहुत्तंमि ॥४०॥ पणसट्ठि सहस पण सय, छत्तीसा
इग मुहुत्त खुड्डभवा ॥ आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एग खुड्डभवे ॥ ४१ ॥ अ
विरय सम्मो तित्थं, आहार दुगा मराउ अपमत्तो ॥ मिछादिठी बंधइ, जिठ
ठिइ सेस पयडीणं ॥४२॥ विगल सुहुमाउग तिगं, तिरि मणुयाऽसुर विउवि नि
रय दुगं ॥ एगिंदि थावरा यव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥ तिरिउरल दुगु
ज्जोअं, छिवठ सुरनिरय सेसचउ गइआ ॥ आहार जिण मपुव्वो, नियट्टि संज
लण पुरिस लहू ॥४४॥ सायजसु च्चावरणा, विग्घं सुहुमो विउवि छ असन्नि ॥
सन्नीविआ उ बायर, पज्जेगिंदीउ सेसाणं ॥४५॥ उक्कोस जहन्नीयर, भंगासा
ई अणाइ धुव अधुवा ॥ चउहा सग अजहन्ना, सेसतिगे आउ चउसु दुहा
॥४६॥ चउभेउ अजहन्नो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं ॥ सेस तिगिसाइ
अधुवो, तह चउहा सेस पयडीणं ॥ ४७ ॥ साणाइ अपुवंतो, अयरंतो कोडि

कोडिउ नहिगो ॥ बंधो नहु हीणो नय, मिछे नवियरसान्निंमि ॥४८॥ जइ लहु बंधो बायर, पज्ज असंख गुण सुहुम पज्जहिगो ॥ एसि अपज्जाण लहू, सुहुमे अर अपज्ज पज्ज गुरु ॥४९॥ लहु बिअ पज्ज अपज्जो, अपज्जि अर बिअ गुरु अहिगो एवं ॥ ति चउ असन्निसु नवरं, संख गुणा बिअ अमण पज्जे ॥ ५० ॥ तो जइ जिठो बंधो, संख गुणो देस विरय हस्सिअरो ॥ सम्म चउ सन्नि चउरो, ठिइ बंधाणु कम संखगुणा ॥ ५१ ॥ सवाणवि जिठठिइ, असुहा जं साइ संकिलेसेणं ॥ इअरावि सोहिउ पुण, मुत्तं नर अमर तिरिआउ ॥५२॥सुहुम निगोआइ खण,प्पजोग बायरपविगल अमणामणा ॥ अपज्ज लहु पढम ङ गुरु, पजहस्सि अरो असंखगुणो ॥ ५३ ॥ असमत्त तमुक्कोसो, पज्ज जहन्निअर एव ठिइ ठाणा ॥ अपजेयर संख गुणा, परमपज बिए असंख गुणा ॥ ५४ ॥ पइखिण मसंख गुणविरि, य अपज्ज ठिइ असंख

लोग समा ॥ अज्झवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंख गुणा ॥ ५५ ॥
अथोत्कृष्टस्थित्यंतरबंधमाह ॥ तिरि निरय तिजोयाणं, नरनवजुअ सच
उपल्ल तेसठं ॥ थावर चउ इग विगला, यवेसु पणसीइ सय मयरा ॥ ५६ ॥
अपढम संघयणा गिइ, खगई अण मिछ दुनग थीण तिगं ॥ निअ नपु इत्थि
छतीसं, पणिंदि सुअबंध विइ परमा ॥५७॥ विजयाइसु गेविज्जे, तमाइ दहि
सय छतीस तेसठं ॥ पणसीइ सयय बंधो, पल्लतिगं सुर विउवि दुगे ॥ ५८ ॥
समया दसंख कालं, तिरि दुग नीएसु आउ अंत मुहू ॥ उरलि असंख पर
हा, साय ठिइ पुव कोडूणा ॥ ५९ ॥ जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदि
तस चउगे ॥ बत्तीसं सुह विहगइ, पुम सुभग तिगुच्च चउरंसे ॥६०॥ असुहख
गइ जाइ आगिइ, संघयणा हारनिरयुजो य दुगं ॥ थिर सुभ जस थावर द
स, नपु इत्थी दु जुअल मसायं ॥६१॥ समयादंत मुहुत्तं, मणु दुग जिण वइर

उरलुवंगेसु ॥ तित्ती सयरा परमो, अंत मुहू लहु विआउ जिणा ॥ ६२ ॥ इति स्थितिबंधः ॥ तिव्वो असुह सुहाणं, संकेत विसोहि उविवज्जयउ ॥ मंदरसोगिरि महिरय, जल रेहा सरिस कसाएहिं ॥६३॥ चउ ठाणाइ असुहो, सुहन्नहा विग्घ देस आवरणा ॥ पुम संजलणिग ङु ति चउ, ठाण रसा सेस डुगमाइ ॥ ॥६४॥ निबुइक्खुरसो सहजो, ङु ति चउ जाग कढि इक्क जागं तो ॥ इग ठाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥६५॥ तिव्वमिग थावरायव, सुर मिच्छा विगल सुहुम निरय तिगं ॥ तिरि मणुआउ तिरिनरा, तिरि डुग छेवठ सुर निरया ॥६६॥ विउवि सुराहारग डुग, सुख गइ वन्न चउ तेय जिण सायं ॥ समचउ परघा तस दस, पणिंदि सासु च्च खवगाउ ॥ ६७ ॥ तमतमगा उज्जोयं, सम्मसुरा मणुय उरल डुग वइरं ॥ अपमत्तो अमराउ, चउ गइ मिच्छाउ सेसाणं ॥६८॥ थीण तिगं अण मिच्छं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिच्छो ॥ बिय तिय

कसाय अविरय,देस पमत्तो अरइ सोए॥६९॥अपमाइ हारग डुगं,डुनिद्द असु
वन्न हासरइ कुच्छा ॥ जय मुवघाय मपुव्वो, अनियट्टि पुरिस संजलणे ॥ ७० ॥
विग्घावरणे सुहुमो, मणु तिरिआ सुहुम विगल तिग आउ ॥ वेउव्वि छक्क म
मरा, निरया उज्जोय उरल डुगं ॥७१॥ तिरि डुग नियं तमतमा, जिण मविर
य निरय विणिग थावरयं ॥ आसुहु मायवसम्मो, वसाय थिर सुह जसा सियरा
॥७२॥ तस वन्न तेअचउ मणु, खगइ डुग पणिंदि सास परघुच्चं ॥ संघयणा गि
इ नपु थी, सुभगि अरति मिच्छ चउ गइआ ॥७३॥ चउ तेअ वन्न वेअणि, अ
नाम णुक्कोस सेस धुवबंधी ॥ घाईणं अजहन्नो, गोए डुविहो इमो चउहा ॥७४॥
सेसंमि डुहा इग डुग, णुघाइ जा अनवणंत गुणिआणू ॥ खंधा उरलो चि अ
व,ग्गणाउ तहअगहणतिरिया ॥७५॥ एमेव विउव्वाहा, र तेअ भासाणु पाण
मण कम्मे ॥ सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणं गुल असंखंसो ॥७६॥ इक्किक हिया

सिद्धा, णंतंसो अंतरेसु अग्गहणा ॥ सव्वठ जहन्नुचिया, नियणंतं साहिआ
जिठा ॥७७॥ अंतिम चउ फास दुगं, पंचवन्नरस कम्म खंध दलं ॥ सव जि
यणंत गुण रस, अणुजुत्त मणंतय पएसं ॥७८॥ एग पएसा गाढं, निअ सव
पएसउ गहेइ जिउ ॥ थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिउ ॥७९॥ वि
ग्घावरणे मोहे, सवोवरि वेअणीइ जेणप्पे ॥ तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिई विसे
सेण सेसाणं ॥८०॥ निअ जाइ लद्ध दलिआ, णंतंसो होई सव घाईणं ॥ बज्झं
तीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइ समयं ॥८१॥ सम्मदेस सव विरइ, उअण
विसंजोअ दंस खवगेअ ॥ मोह सम संत खवगे, खीण सजोगि अर गुण से
ढी ॥८२॥ गुणसेढी दल रयणा, णुसमयमुदया दसंख गुणणाए ॥ एअगुणा
पुण कमसो, असंख गुण निज्जरा जीवा ॥८३॥ पलिआ संखंसमुहू, सासण
इअर गुण अंतरं हस्सं ॥ गुरु मिच्छि बे छसठी, इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥८४॥ उ

द्धार अद्ध खित्तं, पलिय तिहा समय वाससय समए ॥ केसव हारो दीवो, दहि आउ तसाय परिमाणं ॥८५॥ दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सुहुमो ॥ होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परट्टो ॥ ८६ ॥ उरलाइ सत्तगेणं, एग जिउ मुअइ फुसिअ सव्व अणु ॥ जित्तिअ कालिसथूलो, दव्वे सुहुमो सगन्नयरा ॥ ८७ ॥ लोग पएसो सप्पिणि, समयाअणुभाग बंध ठाणा य ॥ जह तह कम मरणेणं, पुट्ठा खित्ताइं थूलियरा ॥८८॥ अप्पयर पयडिबंधी, उक्कड जोगी अ सन्नि पज्जत्तो ॥ कुणइ पए सुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥८९॥ मिछ अजय चउ आउ, बि ति गुण विणुमोहि सत्त मिछाइ ॥ छण्हं सतरस सुहुमो, अजया देसा बि ति कसाए ॥९०॥ पण अनिअट्टि सुखगई, नराउ सुर सुभग तिग विउवि दुगं ॥ सम चउरंस मसायं, वइरं मिछो व सम्मोवा ॥९१ ॥ निद्दा पयला दु जुअल, भय कुछा तिछ संमगो सुजई ॥ आहार दुगं सेसा,

उक्कोस पएस गामिओ ॥९२॥ सुमुणी दुन्नि असन्नी, नरय तिग सुराउ सुर वि
उव्वि दुगं ॥ सम्मो जिणो जहन्नं, सुहुम निगोआइ खणि सेसा ॥ ९३ ॥ दंसण
छग भय कुच्छा, बि ति तुरिअ कसाय विग्घ नाणाणं ॥ मूल छगेणुक्कोसो, चउ
ह दुहा सेसि सव्वहं ॥ ९४ ॥ सेढि असंखिज्जंसे, जोगट्ठाणाणि पयडि ठिइ भे
आ ॥ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभाग ठाण असंख गुणा॥९५॥तत्तो कम्म पएसा,
अणंत गुणिया तउ रसच्छेया ॥ जोगा पयडि पएसं, ठिइ अणुभागं कसाया
उ ॥९६॥ चउदस रज्जू लोगो, बुद्धिकउ सत्त रज्जु माण घणो ॥ तद्दीहेग पए
सा, सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥९७॥ अण दंस नपुंसि त्थी, वेअ छक्कं च पुरिस
वेअं च ॥ दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ९८ ॥ अण मिच्छ मीस
सम्मं, तिआउ इग विगल थीण तिगु जोअं ॥ तिरि निरय थावर दुगं, साहा
रायव अड नपुंसि त्थी ॥ ९९ ॥ छग पुम संजलणा दो, निद्दा विग्घा वरण खए

नाणी॥ देविंदसूरि लिहिअं,सयगमिणं आय सरणठा ॥१००॥ इति शतकना
मा पंचमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ५ ॥
॥ अथ श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते॥सिद्धपएहिं महत्थं, बंधोद
य संत पयडि ठाणाणं ॥ वुछं सुण संखेवं, नीसंदं दिठि वायस्स ॥१॥ कइ बंधं
तो वेअइ, कइ कइ वासंत पयडि ठाणाणि ॥ मूलुत्तर पगईसु, भंग विगप्पा मु
णेअवा ॥२॥ अठ विह सत्त छब्बं, घएसु अठे च उदय संतंसा ॥ एग विहे ति
विगप्पा, एग विगप्पा अबंधंमि ॥३॥ सत्तठ बंध अठुद, यसंत तेरस सुजीव ठा
णेसु ॥ एगंमि पंच भंगा, दो भंगा हुंति केवलिणो ॥४॥ अठसु एग विगप्पो, छ
स्सु विगुण सन्निएसु छ विगप्पा ॥ पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय संत कम्माणं ॥५॥
पंच नव इन्नि अठा, वीसा चउरो तहेव बायाला ॥ दुन्निय पंच य भणिया, प
यडीउ आणुपुवीए ॥६॥ बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच ॥ बंधो चरमे

वि उदय, संतंसा हुंति पंचेव॥७॥ बंधस्स य संतस्स य, पगइ ठाणाइ तिन्नि तु
ल्लाइं॥ उदयठाणाइ डुवे, चउ पणग दंसणा वरणे ॥८॥ बीयावरणे नव बं, ध
एसु चउ पंच उदय नव संता ॥ छच्चउ बंधे चेवं, चउ बंधुदये छ लंसाय ॥९॥
उवरय बंधे चउ पण, नवंस चउ रुदय छच्च ऊसंता ॥ वेयणियाउ अ गोए, वि
भज्ज मोहं परं वुछं ॥१०॥ गोअम्मि सत्त भंगा, अठय भंगा हवंति वेयणिए
॥ पण नव नव पण भंगा, आउ चउक्केवि कमसोउ ॥११॥ बावीस इक्कवीसा,
सत्तरसं तेरसे व नव पंच ॥ चउ तिग डुगं च इक्कं, बंधठाणाणि मोहस्स ॥१२॥
एगं च दोव चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा ॥ उहेण मोहणिज्जे, उदए ठा
णाणि नव हुंति ॥१३॥ अठय सत्तय छच्चउ, तिग डुग एगाहिआ भवे वीसा ॥
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा ॥१४॥ संतस्स पयडिठाणा, णि ताणि
मोहस्स हुंति पन्नरस ॥ बंधोदय संते पुण, भंग विगप्पे बहू जाण ॥१५॥ छब्बा

वीसे चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे दोदो ॥ नव बंधगे वि डुणिउ, इक्किक्क अउ परं नंगा ॥१६॥ दस बावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा ॥ गइअ नव सत्तरसे, तेरं पंचाइ अठेव ॥१७॥ चत्तारि आइ नव बंध, एसु उक्कोस सत्त मुदयंसा ॥ पंच विह बंधगे पुण, उदयो डुसहं मुणेअव्वो ॥१८॥ इत्तो चउ बंधाइ, इक्किकुदया हवंति सव्वे वि ॥ बंधो चरमे वि तहा,उदया नावे विवाहुज्जा ॥१९॥ इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगं चेव ॥ एए चउवीस गया, बार डुगिक्कम्मि इक्कारा ॥२०॥ नव तेसीइ सएहिं, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणुत्तरि सीआला, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥ २१ ॥ नव पंचाण उसए, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणत्तरि एगुत्तरि, पय विंद सएहि विन्नेआ ॥२२॥ तिन्नेवय बावीसे, इगवीसे अठवीस सत्तरसे ॥ छच्चेव तेर नव बंधएसु पंचेव ठाणाणि ॥२३॥ पंचविह चउविहेसु, छ छक्क सेसेसु जाण पंचेव ॥

पत्तेअं पत्तेअं, चत्तारि अ बंधु वुच्छेए ॥२४॥ दस नव पन्नरसाई, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥ भणिआणि मोहणिज्जे, इत्तो नामं परं वुच्छं ॥२५॥ तेवीस पन्नवीसा, छव्वीसा अठवीस गुणतीसा ॥ तीसेगतीस मेगं, बंध ठाणाणि नामस्स ॥२६॥ चउ पणवीसा सोलस, नव बाणउई सयाय अडयाला ॥ एयालुत्तरछया, ससयाइक्किक्कि बंध विही ॥२७॥ वीसिगवीसा चउवी,स गाउ एगाहियाय इगतीसा ॥ उदय ठाणाणि भवे, नव अठय हुंति नामस्स ॥२८॥ इक्क बयालिक्कारस, तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा ॥ बारस सत्तरससया, णहि गाणि बिपंच सीईहिं ॥२९॥ अउणत्ती सिक्कारस, सयाणि हिय सतर पंच सठीहिं ॥ इक्किक्क गंच वीसा, दहुदयंतेसु उदयविही ॥३०॥ ति डुनउई गुण नउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई ॥ अठय छप्पन्नत्तरि, नव अठय नाम संताणि ॥३१॥ अठय बारस बारस, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥ उहेणाएसेणय, जउ ज

हा संभवं विन्नजे ॥३२॥ नव पणगोदय संता, तेवीसे पणवीस छवीसे ॥ अठ
चउरठवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसंमि ॥३३॥ एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय
अठ संतंमि ॥ उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि ॥३४॥ तिविगप्प
पगइ ठाणे, हिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु ॥ भंगापउ जियवा, जउ जहा संभ
वो भवइ ॥३५॥ तेरस सुजीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगप्पो ॥ इक्कंमिति
डु विगप्पो, करणं पइ इउ अविगप्पो ॥३६॥ तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते ग
म्मि भंगमिक्कारा ॥ वेअणिअआउ गोए, विन्नजमोहं परं वुछं ॥३७॥ पज्जत
ग सन्निअरे, अठ चउक्कं च वेयणिय भंगा ॥ सत्तय तिगं च गोए, पत्तेअं जीव
ठाणेसु ॥३८॥ पज्जता पज्जत्तग, समणा पज्जत्त अमण सेसेसु ॥ अठावीसं दस
गं, नवगं पणगं च आउस्स ॥३९॥ अठसु पंचसु एगे, एग डुगं दसय मोह
बंध गए ॥ तिग चउ नव उदय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥ पण डु

ग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ॥ पण छप्पणगं छछ, पणगं
अठ ठ दसगंति ॥४१॥ सत्तेव अपज्जत्ता, सामी सुहुमा य बायरा चेव ॥ विगि
लिंदिआउ तिन्निउ, तह य असन्नी अ सन्नी अ ॥४२॥ नाणंतराय ति विहम,
वि दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु ॥ मिछा साणे बीए, नव चउ पण नवय संतं
सा ॥४३॥ मिस्साइ नियट्टीउ, छ चउपण नवय संत कम्मंसा ॥ चउ बंध तिगे
चउ पण, नवंसु दुसु जुअल छस्संता ॥४४॥ उवसंते चउपण नव, खीणे चउ
रुदय छच्च चउसत्ता ॥ वेअणिअ आउ गोए, विभज्ज मोहं परं वुछं ॥४५॥ च
उ छस्सु दुन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणि अ भंगा ॥ गोए पण चउ दो
तिसु, एगठसु दुन्नि इक्कंमि ॥४६॥ अठछाहिगवीसा, सोलस वीसं च बारस छ
दोसु ॥ दो चउसु तीसु इक्कं, मिछाइसु आउए भंगा ॥४७॥ गुणठाणगेसु अठ
ग, इक्किक्कं मोह बंध ठाणं तु ॥ पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो ॥४८॥

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥ छाई नव उच्च विरई, देसे पंचाइ अठेव ॥४ए॥ विरए खउवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुवंमि ॥ अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोवडुवेव उदयंसा ॥५०॥ एगं सुहुम सरागो, वेएइअ वेअगा न वे सेसा ॥ नंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायवं ॥५१॥ इक्कग छडिक्कियारि, क्कारसइक्कारसेव नव तिन्नि ॥ एए चउवीस गया, बारडुगं पंच इक्कंमि ॥५२॥ बारस पणसठिसया, उदय विगप्पेहिं मोहिआ जीवा ॥ चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥५३॥ अठग चउ चउ चउर, ठगाय चउरो अ हुंति चउवीसा ॥ मिछाइअ पुवंता, बारस पणगंच अनिअट्टी ॥५४॥ अठठीवत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना ॥ चोआल दोसुवीसा, मिछामाईसु सामन्नं ॥५५॥ जोगोवउग लेसा, इएहिं गुणिआ हवंति कायवा ॥ जे जछ गुणठाणे, हवंति ते तछ गुणकारा ॥५६॥ तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुवे ॥ इक्कार

बायरंमिउ, सुहुमो चउ तिन्नि उवसंते ॥ ५७ ॥ छन्नव छक्क तिग सत, दुगं दुगं तिग दुगं तिअठ चउ ॥ दुग छ चउ दुग पण चउ,दुग चउ चऊ पणग एग चउ ॥५८॥ एगेग मठ इगेग, मठछ छउमठ केवल जिणाणं ॥ एगं चउ एगं चउ,अठ चउ दुछक्क मुदयंसा ॥५९॥ चउ पणवीसा सोलस,नव चत्तालासयाय बाणउइ ॥ बत्तीसुत्तर छया, लसया मिछस्स बंध विही ॥ ६० ॥ अठसया चउसठी, बत्तीस सयाइ सासणे नेआ ॥ अठावीसाईसु, सव्वाणठाहि छन्नउइ ॥६१॥ इग चत्ति गार बत्ती, छसय इगतिसिगार नव नउइ ॥ सत्तरि गंसि गुत्तिस, चउदइगार चउसठि मिछदया ॥६२॥ बत्तीस दुन्नि अठय, बासीइ सयाय पंच नव उदया ॥ बारहिआ तेवीसं, बावन्निकारससयाय ॥६३॥ दो छक्क ठ चउक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया ॥ नेरइआइसु सत्ता,ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥६४॥ इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध ठाणाणं ॥ पण छक्किक्कारुद

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥ गई नव उञ्ज विरई, देसे पंचाइ ञ्जठेव ॥४ए॥ विरए खउवसमिए,चउराई सत्त ब्च पुवंमि ॥ ञ्जनियट्टि बायरे पुण, इक्कोवड्डवेव उदयंसा ॥५०॥ एगं सुहुम सरागो, वेएइञ्ज वेञ्जगा ञ्जवे सेसा ॥ ञ्जंगाणं च पमाणं, पुवुद्दिठेण नायवं ॥५१॥ इक्कग बडिक्कियारि,कारसइक्कारसेव नव तिन्नि ॥ एए चउवीस गया, बारञ्जगं पंच इक्कंमि ॥५२॥ बारस पणसठिसया, उदय विगप्पेहिं मोहिञ्जा जीवा ॥ चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंद सएहि विन्नेञ्जा ॥५३॥ ञ्जठग चउ चउ चउर, ठगाय चउरो ञ्ज हुंति चउवीसा ॥ मिछाइञ्ज पुवंता, बारस पणगंच ञ्जनिञ्जट्टी ॥५४॥ ञ्जठठीबत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना ॥ चोञ्जाल दोसुवीसा,मिछामाईसु सामन्नं ॥५५॥ जोगोवञ्जोग लेसा, इएहिं गुणिञ्जा हवंति कायवा ॥ जे जञ्ज गुणठाणे, हवंति ते तञ्ज गुणकारा ॥५६॥ तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुवे ॥ इक्कार

वायरंमिउ, सुहुमो चउ तिन्नि उवसंते ॥ ५७ ॥ छन्नव छक्क तिग सत्त, दुगं दुगं
तिग दुगं तिअट्ठ चउ ॥ दुग छ चउ दुग पण चउ,दुग चउ चऊ पणग एगं च
उ ॥५८॥ एगेग मट्ठ इगेग, मट्ठ छउमत्थ केवल जिणाणं ॥ एगं चउ एगं च
उ,अट्ठ चउ दुछक्क मुदयंसा ॥५९॥ चउ पणवीसा सोलस,नव चत्तालासयाय
बाणउइ ॥ बत्तीसुत्तर छाया, लसया मिछस्स बंध विही ॥ ६० ॥ अट्ठसया चउ
सठी, बत्तीस सयाइ सासणे भेआ ॥ अट्ठावीसाईसु, सवाणठाहि छन्नउइ
॥६१॥ इग चत्ति गार बत्ती, छसय इगतिसिगार नव नउइ ॥ सत्तरि गंसि गुत्ति
स, चउदइगार चउसठि मिछुदया ॥६२॥ बत्तीस दुन्नि अट्ठय, बासीइ सयाय
पंच नव उदया ॥ बारहिआ तेवीसं, बावन्निक्कारससयाय ॥६३॥ दो छक्क ठ च
उक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया ॥ नेरइआइसु सत्ता,ति पंच इक्कारस चउक्कं
॥६४॥ इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अट्ठ बंध ठाणाणं ॥ पण छक्किक्कारुद

या, पण पण बारसय संताणि ॥ ६५ ॥ इय कम्मपगइ ठाणा, णि सुठु बंधुदय संत
कम्माणं ॥ गइआएहिं अठसु, चउप्पयारेण नेआणि॥६६॥ गइ इंदिए अ काए,
जोए वेए कसाय नाणे अ ॥ संयम दंसण लेसा, भव संमे सन्नि आहारे ॥६७॥
संतपयं परूवणया, दव्व पमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालंतरं च भावो, अप्पा
बहुयं च दाराइं ॥६८॥ उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताउ नविज्जइ विसेसो ॥ मुत्तूणय
इगयालं, सेसाणं सव्व पयडीणं ॥६९॥ नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिज्ज
मिच्छत्तं ॥ सम्मत्त लोभ वेआ, उआणि नव नाम उच्चं च ॥७०॥ मणुयगइ जा
इ तस बा, यरं च पज्जत्त सुभग आइज्जं ॥ जसकित्ती तित्थयरं, नामस्स हवंति
नव एया ॥७१॥ तित्थयरा हारग विर, हिआउ अज्जेइ सव्व पयडीउ ॥ मिच्छत्तवे
अगोसा, साणो गुणवीस सेसाउ ॥७२॥ छायाल सेस मीसो, अविरय सम्मो
तिआल परिसेसा ॥ तेवन्न देस विरउ, विरउ सगवन्न सेसाउ ॥ ७३ ॥ इगु स

ठि मपमत्तो, बंधइ देवाउ अस्सइअरोवि ॥ अठावन्न मपुव्वो, छप्पन्नं वावि छ
वीसं ॥७४॥ बावीसा एगूणं, बंधइ अठारसंत अनिअट्टी ॥ सत्तर सुहुम स
रागो, सायममोहो सजोगित्ती ॥७५॥ एसोउ बंध सामि, त उहु गइ आइए
सुवि तहेव ॥ उहा उसा दिज्जइ, जह जहा पयडि सप्नावो ॥७६॥ तिछयर देव
निरिआ, उअंच तिसु तिसु गईसु बोधव्वं ॥ अवसेसा पयडीउ, हवंति सव्वासु
विगईसु ॥७७॥ पढम कसाय चउक्कं, दंसण तिग सत्तगा वि उवसंता ॥ अवि
रय सम्मत्ताउ, जाव नियठित्ति नायव्वा ॥ ७८ ॥ सत्तठ नवय पनरस, सोलस
अठारसे व इगुवीसा ॥ एगाहि डु चउवीसा, पणवीसा बायरे जाण ॥ ७९ ॥
सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोहपयडीउ ॥ उवसंत वीअरागे, उवसंता हुं
ति नायव्वा ॥८०॥ पढम कसाय चउक्कं, इत्तो मिछत्त मीस सम्मत्तं ॥ अविरय
सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥८१॥ अनिअट्टि बायरेथी,ए गिद्धि ति

ग निरय तिरिअ नामाउ ॥ संखिज्ज इमे सेसे, तप्पाउग्गाउ खीयंति ॥ ८२ ॥ इ
त्तो हणइ कसाय, ठगंपि पच्छा नपुंसगं इत्थी ॥ तो नोकसाय छक्कं, छुहइ संज
लणकोहम्मि ॥ ८३ ॥ पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए ॥ मायं
च छुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥८४॥ खीण कसाय दु चरिमे, निद्दं प
यलं च हणइ छउमत्थो ॥ आवरणमंतराए, छउमत्थो चरम समयंमि ॥ ८५ ॥
देवगइ सहगयाउ, दु चरिम समयम्मि भविअ खीअंति ॥ सविवागे अर ना
मा, नीआ गोअंपि तत्थेव ॥ ८६ ॥ अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ मुच्चगोअ
नवनामे ॥ वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न मिक्कारे ॥८७॥ मणुअ गइ जा
इ तस बा,यरं च पज्जत्त सुभग आइज्जं ॥ जस कित्ती तित्थयरं, नामस्स हवंति
नव एआ ॥ ८८ ॥ तच्चाणुपुव्वि सहिया, तेरस भव सिद्धिअस्स चरमंमि ॥ सं
तं सग मुक्कोसं, जहन्नयं बारस हवंति ॥८९॥ मणुअ गइ सहगयाउ, भव खि

त्त विवाग जिअ विवागाउ ॥ वेअणिअ अन्न रुच्चं, चरम समयंमि खीयंति
॥९०॥ अह सुइअ सयल जग सिह, र मरुअ निरुवम सहाव सिद्धि सुहं ॥
अनियण मव्वावाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥९१॥ दुरहिगम निउण परम,
ठ रुइर बहु भंग दिठि वायाउ ॥ अछा अणुसरिअवा, बंधोदय संत कम्मा
णं ॥९२॥ जो जठ अपडिपुन्नो, अठो अप्पा गमेण बंधोति ॥ तं खमिऊण ब
हुसुआ, पूरेऊणं परि कहंतु ॥ ९३ ॥ गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणु
सारीए ॥ टीगाइ नियमिआणं, एगूणा होइ नउईउ ॥९४॥ ॥ इति श्री
सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥
अथ श्रीरत्नाकरसूरिकृतरत्नाकरपंचविंशिकाप्रारंभः॥ उपजातिछंदः॥श्रेयः श्रि
यां मंगलकेलिसद्म नरेंद्रदेवेंद्रनतांघ्रिपद्म॥सर्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान चिरं जय
ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगत्त्रयाधार कृपावतार दुर्वारसंसारविकारवैद्य ॥

श्रीवीतराग त्वयि मुग्धभावाद्विज्ञ प्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥ किं
बाललीलाकलितो न बालः पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ॥ तथा यथार्थं
कथयामि नाथ निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥३॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च
न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ॥ शुभो न भावोऽप्यभवद्भवेऽस्मिन् विभो
मया भ्रांतमहो मुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो दुष्टेन लोभाख्यम
होरगेण॥ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण मायाजालेन बद्धोऽस्मिन्कथं भजे त्वाम् ॥५॥
कृतं मयामुत्र हितं न चेह लोकेऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् ॥ अस्मादृशां
केवलमेव जन्म जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्तं त्व
दास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥ द्रुतं महानंदरसं कठोरमस्मादृशां देव तदश्मतो
ऽपि ॥७॥ त्वत्तः सुदुःप्रापमिदं मयाप्तं रत्नत्रयं भूरि भवभ्रमेण ॥ प्रमादनिद्रा
वशातो गतं तत् कस्याग्रतो नायक पूत्करोमि ॥८॥ वैराग्यरंगः परवंचनाय ध

मोंपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत् कियद्ब्रुवे हास्यक
रं स्वमीश ॥९॥ परापवादेन मुखं सदोषं नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥ चेतः परा
पायविचिन्तनेन कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥१०॥ विडंबितं यत्स्मरघस्मरा
र्त्तिदशावशात्स्वं विषयांधलेन ॥ प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव सर्वज्ञ सर्वं स्वय
मेव वेत्सि ॥११॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहितागमोक्तिः
॥ कर्त्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगादवांछि हे नाथ मतिभ्रमो मे ॥ १२ ॥ विमुच्य दृग्
लक्ष्यगतं भवंतं ध्याता मया मूढधिया हृदंतः ॥ कटाक्षवक्षोजगभीरनाभिकटी
तटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥ लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे राग
लवो विलग्नः ॥ न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये धौतोऽप्यगात्तारक कारणं किम् ॥१४
अंगं न चंगं न गणो गुणानां न निर्मलः कोपि कलाविलासः ॥ स्फुरत्प्रधान प्र
भुता च कापि तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥१५॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि

गंतं वयो नो विषयाभिलाषः ॥ यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे स्वामिन्महामोह
विडंबना मे ॥ १६ ॥ नाऽत्मा न पुण्यं न भवो न पापं मया विटानां कटुगीरपी
यं ॥ अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के परिस्फुटे सत्यपि देव धिङ् माम् ॥१७॥न दे
वपूजा न च पात्रपूजा न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं
समस्तं कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥१८॥ चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनुकल्प
द्रुचिंतामणिषु स्पृहार्त्तिः ॥ न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि जिनेश मे पश्य विमूढ
भावं ॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोगकीला धनागमो नो निधनागमश्च ॥
दारा न कारा नरकस्य चित्ते व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥२० ॥ स्थितं न सा
धोर्हृदि साधुवृत्तात् परोपकारान्न यशो ऽर्जितंच ॥ कृतं न तीर्थोद्धरणादि कृत्यं
मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु न दुर्जनानां
वचनेषु शांतिः ॥ नाऽध्यात्मलेशो मम कोपि देव तार्यः कथंकारमयं भवा

ध्यः ॥ २२ ॥ पूर्वं भवेऽकारि मया न पुण्यमागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥ यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ॥ २३ ॥ किंवा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ॥ जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूपनिरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥ शार्दूलविक्रीडितं छंदः ॥ दीनोद्धार धुरंधर स्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपापात्रं नात्रजने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियम्॥ किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलयश्रेयस्करं प्रार्थये ॥ २५ ॥ इति श्रीवीतरागस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीरत्नाकरसूरिकृता रत्नाकरपंचविंशतिका समाप्ता ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अर्थ ॥ ज्ञान अने आनंद तेहिज स्वरूप छे जेनुं, वली ओदारिकादिक रूपथकी रहित छे, तथा रक्षक छे अने सर्वथी उत्कृष्ट तेज छे जेनुं एवा श्रीपरमेश्वर परमात्माने म्हारो नमस्कार हो ॥ १ ॥ ॥ जेना स्वरूपनें ध्यान रूपिणी दृष्टियें करीनें मननी शुद्धिने धरता योगीश्वर देखे छे, ते परमेश्वरने हुं स्तवुं छुं ॥ २ ॥ ॥ सर्व प्राणी

चिदानंदस्वरूपाय, रूपातीताय तायिने ॥ परमज्योतिषे तस्मै, नमः श्रीपरमात्मने ॥ १ ॥ पश्यन्ति योगिनो यस्य, स्वरूपं ध्यानचक्षुषा ॥ दधाना मनसः शुद्धिं, तं स्तुवे परमेश्वरम् ॥ २ ॥ जन्तवः सुखमिछन्ति, तुः सुखं तच्चिवे भवेत् ॥ तद्ध्यानात्तन्मनःशुद्ध्या कषायविजयेन सा ॥ ३ ॥

सर्विंद्रिय मात्र सुखनी वांछा करे छे, ते संपूर्ण सुख तो जीवने मोक्षमां छे, ते मोक्षनी प्राप्ति ध्यानथी थाय छे, अने ध्यान मननी शुद्धिथी थाय छे, अने मनःशुद्धि कषाय जीतवाथी थाय छे ॥ ३ ॥ ॥ ते कषायनुं जीतवुं पांच इंद्रियना जीतवाथी थाय छे, अने ते इंद्रियजय रूडा आचारथी थाय छे, ते रूडो आचार भला उपदेशथी होय छे, ते उपदेश

मनुष्यने गुणनो कारणभूत होय ॥ ४ ॥ ॥ उपदेशथी रूडी बुद्धि थाय, रुडी बुद्धि
थी सारा गुणोनो उदय थाय, ते माटे उपदेश सांभलवा संभलाववा माटे आ आचा
रोपदेशनामें ग्रंथ प्रारंभीयें छेयें ॥ ५ ॥ ॥ रूडा आचारना विचारें करीने भलो

जयेन स्यात्, सदाचारादसौ भवेत् ॥ स जायते तूपदेशान्नृणां गुणनिबन्धन
म् ॥ ४ ॥ सुबुद्धिश्चोपदेशेन, ततोऽपि च गुणोदयः ॥ इत्याचारोपदेशाख्य,
ग्रन्थः प्रारभ्यते मया ॥ ५ ॥ सदाचारविचारेण, रुचिरश्चतुरोचितः ॥ देवा
नन्दकरो ग्रन्थः, श्रोतव्योऽयं शुभात्मभिः ॥ ६ ॥ पुद्गलानां परावृत्त्या, दुर्लभं
जन्म मानुषम् ॥ लब्ध्वा विवेकेन धर्मे, विधेयः परमादरः ॥ ७ ॥ ॥ ॥

अने पंमितने जणवा वांचवा योग्य तथा देवताने आनंदकारी एवो आ ग्रंथ ते पुण्य
वंत मनुष्यें सांभलवो ॥ ६ ॥ ॥ पुद्गल परावर्त्तंकरी पामवो दुर्लभ एवो आ मनुष्य
नो भव छे, ते पामी करीने विवेकेंकरी मनुष्यें धर्मने विषे घणो आदर करवो ॥ ७ ॥

धर्म जे छे, ते सांजव्यो, पोते जाण्यो, पोतें कीधो, बीजाने कराव्यो, अने अनुमोद्यो थको निश्चें सात कुलनें पवित्र करे छे ॥ ७ ॥ ॥ धर्म, अर्थ, अने काम ए त्रण साध्या विना मनुष्यनो जन्म ते पशुनी परें निःफल जाणवो, ते त्रणमां पण उत्तम धर्म छे, केमके, धर्म विना बीजा बे न पामीयें ॥ ए ॥ ॥ एक मनुष्यनो जव, बीजो

धर्मः श्रुतोऽपि दृष्टोऽपि,कृतोऽपि कारितोऽपि च ॥ अनुमोदितो नियतं,पुनात्या सप्तमं कुलम्॥७॥विना त्रिवर्गं विफलं पुंसो जन्म पशोरिव ॥ तत्र स्याडुत्तमो धर्मस्तं विना न यतः परौ ॥ ए ॥ मानुष्यमार्यदेशश्च, जातिः सर्वाङ्गपाटवम् ॥ आयुश्च प्राप्यते तत्र, कथं चित्कर्मलाघवात् ॥ १० ॥ प्राप्तेषु पुण्यतस्ते

आर्यदेश, त्रीजी उत्तमजाति, चोथी इंड्रियोनी सहढता, पांचमुं महोटुं आयुष्य, एटलां वानां केम पामीयें! जो कांइक कर्म हलवां होय तो पामीयें ॥ १० ॥ ॥ ए सर्वे वानां पुण्यथकी पामे थके पण श्रीवीतरागना वचन उपर श्रद्धा आववी डुर्लन्न छे,

ते श्रद्धा आव्या पछी रूडा गुरुनो योग जो मोहोटुं नाग्य होय तो पामीयें ॥ ११ ॥ ए सर्व वस्तु पामी, पण जेम राजा न्यायें करी शोने, फूल सुगंधें करी शोने, नोज न घृतेंकरी शोने, तेम नला आचारें करी शोनवुं एवी सामग्री पामवी डुर्लन्न छे॥१२॥

पु, श्रद्धा नवति डुर्लन्ना ॥ ततः सद्गुरुसंयोगो, लन्यते गुरुनाग्यतः ॥ ११ ॥ लब्धं हि सर्वमप्ये तत्सदाचारेण शोनते ॥ न्यायेनेव नृपः पुष्पं, गन्धेनाज्येन नोजनम् ॥ १७ ॥ शास्त्रे दृष्टेन विधिना, सदाचारपरो नरः ॥ परस्पराविरोधेन, त्रिवर्गं साधयेन्मुदा ॥ १३ ॥ तुर्ये यामे त्रियामाया, ब्राह्मे काले कृतोद्यमः ॥ मुञ्चेन्निद्रां सुधी पञ्च, परमेष्ठिस्तुतिं पठन् ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

माटे जेवो विधि शास्त्रमां दीठो, तेवा विधियें करी जे सदाचारमां तत्पर रहे, ते प्राणी, मांहोमांहे विरोध विना त्रिवर्गनें हर्षें करी साधे ॥ १३ ॥ ॥ जे पंमित छे,ते रात्रिने चोथे पोहोरे ब्राह्मकाले एटले बे घडी पाछली रात्रें उठवानो उद्यम करीने नवकारनी

स्तुति नणतो थको निड्रानो त्याग करे ॥१४॥ ॥ सदा सर्वदा शय्याथी उठतां डाबी अथवा जमणी, जे नासिका वहेती होय, ते तरफनो पग उठती वखत प्रथम धरतीउपर आपे ॥१५॥ ॥ पछी रात्रें सूतानां वस्त्र मूकीनें बीजां वस्त्र पहेरीने नला स्थानकें बेसीनें

वामा तु दक्षिणा वापि, या नाडी वहते सदा ॥ शय्योत्थितस्तमेवादौ, पादं दद्याद्भुवस्तले ॥१५॥ मुक्त्वा शयनवस्त्राणि, परिधायापराणि च ॥ स्थित्वा सुस्थानके धीमान् ध्यायेत्पञ्चनमस्क्रियाम् ॥१६॥ उपविश्य च पूर्वाशाभिमुखो वाप्युदङ्मुखः ॥ पवित्राङ्गः शुचिस्थाने, ज्यपेन्मन्त्रं समाहितः ॥ १७ ॥ अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ॥ ध्यायेत्पञ्चनमस्कारान् , सर्वपापैः प्र

बुद्धिवंत जीव प्रथम नवकारनुं ध्यान करे ॥१६॥ ॥ ते पूर्वदिशि संमुख अथवा उत्तर दिशि संमुख, पवित्र शरीरें पवित्र स्थानकें बेसी मन स्थिर राखीने श्रीनवकार मंत्रनो जाप करे ॥ १७ ॥ ॥ अपवित्र अथवा पवित्रपणें सुखियो अथवा दुःखियो थको

पण जे प्राणी नवकार प्रत्यें ध्यावे, ते प्राणी सर्व पापथकी मूकाय ॥ १८ ॥ ॥ अंगुलीने टेरवे जे नवकारनो जाप करे, जे मेरु उलंघीने जाप करे, वली जे संख्यारहित जाप करे, तेनुं प्राये अल्प फल होय ॥ १९ ॥ ॥ जाप त्रण प्रकारें थाय, एक उत्कृष्टो, बीजो मध्यम अने त्रीजो अधम, ए त्रण भेद जाणवा. तेमां कमलादिकना

मुच्यते ॥ १८ ॥ अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं, जप्तं यन्मेरुलङ्घनैः ॥ संख्याहीनं च यज्जप्तं, तत्प्रायोऽल्पफलं भवेत् ॥ १९ ॥ जपो भवेत्त्रिधोत्कृष्ट, मध्यमाधमभेदतः ॥ पद्मादिविधिना मुख्यो, मध्यः स्याज्जपमालया ॥ २० ॥ विना मौनं विना संख्यां, विना चेतोनिरोधनम् ॥ विना स्थानं विना ध्यानं, जघन्यो

विधियें जे गुणे, ते प्रथम मुख्य एटले उत्कृष्ट जाप जाणवो, तथा नोकरवालीयें गुणे, ते बीजो मध्यम जाप जाणवो ॥ २० ॥ ॥ तथा मौन धारण कर्या विना, संख्या विना, मन स्थिर राख्या विना, स्थानक विना अने ध्यान विना जे गुणे, ते त्रीजो ज

घन्य जाप जाणवो ॥ ११ ॥ ॥ तेवार पढी उपाशरे अथवा पोताना घरने विषे ज
इने पोतानां पाप शुद्ध करवाने अर्थे पंमित पुरुष, पडिक्कमणुं करे ॥ १२ ॥ ॥ एक
रात्रिपडिक्कमणुं, बीजुं दैवसिकपडिक्कमणुं, त्रीजुं पाखी पडिक्कमणुं चोथुं चौमासी पडिक्क

जायते जपः ॥ ७१ ॥ ततो गत्वा मुनिस्थान, मथवात्मनिकेतने ॥ निजपाप
विशुद्ध्यर्थं, कुर्यादावश्यकं सुधीः ॥ ७२ ॥ रात्रिकं स्याद्दैवसिकं, पाक्षिकं चातु
र्मासिकम् ॥ सांवत्सरं चेति जिनैः, पंचधावश्यकं कृतम् ॥ ७३ ॥ कृतावश्यक
कर्मा च, स्मृतपूर्वकुलक्रमः ॥ प्रमोदमेदुरस्वान्तः, कीर्तयेन्मङ्गलस्तुतिम्
॥ ७४ ॥ मङ्गलं जगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रजुः ॥ मङ्गलं यूलिजजाद्या,

मणुं अने पांचमुं संवछरी पडिक्कमणुं, ए जगवंतें पांच प्रकारें पडिक्कमणुं करवुं कह्युं छे
॥१३॥ ॥ पडिक्कमणरूप कर्म करीनें पोतानो कुलक्रम संजारतो हर्षें करी पुष्ट छे चित्त
जेनुं एवो जन ते मांगलिकनी स्तुति जणे ॥१४॥ ॥ मंगलिक श्रीजगवंत महावीर

सामीजी, मंगलिक श्रीगौतमस्वामीजी, श्रीथूलभद्रादिक साधुजी, अने मंगलिक जैनधर्म मंगलिक करो॥२५॥ ॥ श्रीऋषभादिक चोवीश तीर्थंकर, भरतादिक बार चक्रवर्त्ती तथा वासुदेव अने बलदेव, ए सर्वे मंगलिक करो ॥ २६ ॥ ॥ नाभिराजा, सिद्धार्थ राजा आदिक चोवीश जिनना पिता, जेमणें अखंड राज्य पाल्यां छे, ते मुजने जय

जैनो धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥ २५ ॥ नाभेयाद्या जिनाः सर्वे भरताद्याश्च चक्रिणः ॥ कुर्वन्तु मङ्गलं सर्वे, विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ २६ ॥ नाभिसिद्धार्थ भूपाद्या, जिनानां पितरः समे ॥ पालिताखंडसाम्राज्या, जनयन्तु जयं मम ॥ २७ ॥ मरुदेवीत्रिशलाद्या, विख्याता जिनमातरः ॥ त्रिजगज्जनितानन्दा, मङ्गलाय भवन्तु मे ॥ २८ ॥ श्रीपुंडरीकेन्द्रभूति, प्रमुखा गणधारिणः ॥ श्रु

आपो ॥२७॥ ॥ मरुदेवीजी, त्रिशला प्रमुख जे जगतमां प्रसिद्ध, जेमणें त्रण जगने आनंद आप्यो एवी जिनजोनी चोवीश माताउ ते मुजने मंगलिक माटे हो ॥ २८ ॥ पुंडरीक गणधर, गौतम गणधर आदे देईनें चौदशें बावन गणधर बीजा पण श्रुतकेव

ली साधु, चौद पूर्वधर ते मुजनें मंगलिक प्रत्यें आपो ॥ २९ ॥ ॥ ब्राह्मी, चंदनबाला दिक जे महोटी साधवीयो अखंम शीलनी लीला जेमनी बे एवी ते सर्वे मुजने मंगलिक प्रत्यें आपो ॥ ३० ॥ ॥ चक्रेश्वरी देवी, सिद्धायिका प्रमुख चोवीश देवी जे स

तकेवलिनोऽपीह, मङ्गलानि दिशन्तु मे ॥ २९ ॥ ब्राह्मीचन्दनबालाद्या, महासत्यो महत्तराः ॥ अखंमशीललीलाद्या यछंतु मम मंगलम् ॥ ३० ॥ चक्रेश्वरीसिद्धायिकामुख्यः शासनदेवताः ॥ सम्यग्दृशां विघ्नहरा रचयन्तु जयश्रियम् ॥ ३१ ॥ कपर्दिमातंगमुख्या यक्षा विख्यातविक्रमाः ॥ जैनविघ्नहरा नित्यं दिशन्तु मंगलानि मे ॥ ३२ ॥ यो मङ्गलाष्टकमिदं पटुधीरधीते, प्रातर्नरः

म्यग्दृष्टि जीवोना विघ्ननी हरनारी ते जयलक्ष्मी रचो अथवा करो ॥ ३१ ॥ ॥ कपर्दि, मातंग प्रमुख चोवीश यक्ष प्रसिद्ध पराक्रमना धणी जिनशासनना विघ्नना हरनार बे, ते मुजने सदा मंगलिक आपो ॥ ३२ ॥ ॥ जे नली बुद्धिनो धणी, पुण्यें नावित बे मननी

त्तृनि जेनी, सौन्नाग्य न्नाग्य सहित एवो अने गया ठे सर्व विघ्न जेनां एवो पुरुष ए पूर्वें कह्या जे मंगलिकना आठ श्लोक तेने प्रन्नाते न्नणे, ते मनुष्य जगतने विषे नित्यें घणां मंगलिक पामे ॥३३॥ ॥ तेवार पठी देरासरें जाय, त्यां कीधी ठे निसिहीनी क्रिया जेणें

सुकृतन्नावितचित्तवृत्तिः ॥ सौन्नाग्यन्नाग्यकलितो धुतसर्वविघ्नो, नित्यं स म ङ्गलमलं लन्नते जगत्याम् ॥ ३३ ॥ ततो देवालये यायात् कृतनैषेधिकीक्रियः ॥ त्यजन्नाशातनाः सर्वास्त्रिः प्रदक्षिणयेज्जिनम् ॥ ३४ ॥ विलासहासनिष्ठीवा निद्राकलहदुःकथाः ॥ जिनेंद्रन्नवने जह्यादाहारं च चतुर्विधम् ॥ ३५ ॥ नम स्तुभ्यं जगन्नाथेत्यादिस्तुतिवदंवदः ॥ फलमक्षतपूगं वा ढौकयेद्वीजिनाग्रतः

एवो ते समस्त देरासरनी आशातनाउने टालतो श्री न्नगवंतनें त्रण प्रदक्षिणा दीये ॥ ३४ ॥ ॥ स्त्री साथे विलास, हास्य, श्लेष्म, त्याग, निद्रा, कलह, माठी कथा अने चार प्रकारनो आहार न्नगवंतने देहेरे ठांमे ॥ ३५ ॥ ॥ 'नमो जिनाय' इत्यादिक स्तु

तीनां पद भणतो थको फल, अक्षत अथवा सोपारी श्रीभगवंतने आगल मूके ॥३६॥ गले हाथें न जाय राजाने, देवने, गुरुने, नैमित्तिक जे आयुष्य जाणे ते ज्योतिषीने गले हाथें न जोवा. फलें करीनें फलनी प्राप्ति थाय ॥३७॥ ॥ जमणे पासें पुरुष, डाबे पासें स्त्री ऊनी रहीने भगवंत प्रत्यें वांदे. जघन्य नव हाथथी मांडी साठ हाथ अव

॥ ३६ ॥ रिक्तपाणिर्न पश्येत्तु राजानं दैवतं गुरुम् ॥ नैमित्तिकं विशेषेण फलेन फलमादिशेत् ॥ ३७ ॥ दक्षवामांगभागस्थो नरनारीजनो जिनम् ॥ वन्देता वग्रहं मुक्त्वा षष्टिं नव कराञ्चिभो ॥३८॥ ततः कृतोत्तरासंगः स्थित्वा सद्योग मुद्रया ॥ ततो मधुरया वाचा कुरुते चैत्यवन्दनम् ॥ ३९ ॥ उदरे कूर्परौ न्य स्य कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा भवेदियम्

ग्रह मूकी एटले भगवंतथी वेगला रहीने वांदे ॥ ३८ ॥ ॥ तेवार पछी उत्तरासण करे, ते करीने भली योगमुद्रायें रहीनें पछी मीठी वाणीयें करी चैत्यवंदन करे ॥३९॥ ॥ पे ट उपर बे कोणी मूकीनें कमलना डोडानें आकारें मांहे मांहे दश आंगुली भेली क

रीयें ते योगमुंश होय ॥ ४० ॥ ॥ पछी पोतानें घेर जईने प्रनात समयनी क्रिया
करे, पछी नोजन, वस्त्र तथा घरना माणसनी चिंता करे ॥ ४१ ॥ ॥ बांधवने तथा
दास प्रमुखनें पोत पोताना कार्यने विषे थापीनें आठ बुद्धिना गुणें सहित थको वली
पोशालें एटले उपासरे जाय ॥४२॥ ॥ एक गुरुनी सेवा, बीजो धर्म सांनलवो, त्रीजो
॥ ४० ॥ पश्चान्निजालयं गत्वा कुर्यात्प्रानातिकीं क्रियाम् ॥ विदधीत गेहचि
न्तां नोजनाछादनादिकाम् ॥ ४१ ॥ अनादिस्वस्वकार्येषु बंधून् कर्मकरान
पि ॥ पुण्यशालां पुनर्यायादष्टनिर्धीगुणैर्युतः ॥ ४२ ॥ शुश्रूषा श्रवणं चैव
ग्रहणं धारणं तथा ॥ ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥ ४३ ॥
श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति डुर्मतिम् ॥ श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा
ग्रहण करवो, चोथो धारवो, पांचमो "विचारवो" उठो ऊहापोह करवो, सातमो अर्थ
जाणवो, अने आठमो तत्त्वज्ञान ए आठ बुद्धिना गुण जाणवा ॥ ४३ ॥ ॥ शास्त्र
सांनल्या थकी धर्मनो जाण थाय, सांनलवाथी डुष्टमतिनुं गंमवुं थाय, सांनल्या थकी

ज्ञान पामे, सांजल्याथी वैराग्य पामे. ॥ ४४ ॥ ॥ बे हाथ, बे पग अने मस्तक ए पंचांग खमासमण गुरु अने बीजा साधुने देईनें गुरुनी आशातना टाळतो थको धर्म सांजलवा बेसे ॥ ४५ ॥ ॥ मस्तकें बे हाथ लगाडीने बे ढिंचणें करी धरती प्रत्ये विधि

वैराग्यमेव च ॥ ४४ ॥ पंचाङ्गप्रणिपातेन गुरून् साधूनपरानपि ॥ उपविशेन्नमस्कृत्य त्यजन्नाशातना गुरोः ॥ ४५ ॥ उत्तमाङ्गेन पाणिभ्यां जानुभ्यां च भुवस्तले ॥ विधिना स्पृशतः सम्यक्पंचाङ्गप्रणतिर्भवेत् ॥ ४६ ॥ पर्यस्तिकां न बध्नीयान्न च पादौ प्रसारयेत् ॥ पादोपरि पदं नैव दोर्मूलं न प्रदर्शयेत् ॥ ४७ ॥ न पृष्ठे न पुरो वापि, पार्श्वयोरुभयोरपि ॥ स्थेयान्नालापयेदन्य, मा

सहित सम्यक् प्रकारें फरसीयें,ते पंचांग नमस्कार कहीयें ॥ ४६ ॥ ॥ गुरुपासें बेसतां पग न बांधीयें, पग लांबा पसारीयें नही, पग उपर पग न चडावीयें, बे कांख उंची करीने नही देखाडीयें ॥ ४७ ॥ ॥ गुरुनी पाछळ बेसे नही,आगळ बेसे नही, जमणे

तथा भावे ए बे. पासें पण बेशे नही. बीजा आव्या माणसने गुरुना बोलाव्या विना प्रथम पोतें न बोलावे ॥ ४८ ॥ ॥ भावभेद जाणवामां निपुण एवो पंमित जे छे ते गुरुना मुख उपर दृष्टि राखतो मन एकाग्र करीनें धर्मशास्त्रने सांभले ॥ ४९ ॥ पोताना मनना संदेह टाले, वखाण ऊठ्या पछी पंमित होय ते देव गुरुना गुण गानारने एटले गतं पूर्वमात्मना ॥ ४८ ॥ सुधीर्गुरुमुखन्यस्तदृष्टिरेकाग्रमानसः ॥ शृणुयाद्धर्मशास्त्राणि भावभेदविचक्षणः ॥४९॥ अपाकुर्यात्स्वसंदेहान् जाते व्याख्यानके सुधीः ॥ गुर्वर्हद्गुणगातृभ्यो, दद्याद्दानं निजोचितम् ॥ ५० ॥ अकृतावश्यको दत्ते गुरूणां वन्दनानि च ॥ प्रत्याख्यानं यथाशक्ति विदध्याद्विरतिप्रियः ॥ ५१ ॥ तिर्यग्योनिषु जायन्ते विरतादानिनोऽपि ह ॥ गजाश्वादिभवे भोगा भाट भोजकनें यथा शक्तियें पोताने आपवा योग्य दान आपे ॥ ५० ॥ ॥ जेणें पडिक्कमणुं नथी कीधुं, ते गुरुनें पगें वांदणा आपे, पछी जेने विरति पणुं वाहालुं छे, ते नोकारसी प्रमुख यथाशक्तियें पच्चरकाण करे ॥ ५१ ॥ ॥ विरति विना जे दातार होय

ते पण तिर्यंचनी योनिमां जइ ऊपजे. हाथी घोडानो भव पामे. त्यां भोग भोगवता पण बंधनमां पड्या थका रहे ॥ ५१ ॥ ॥ जे दातार होय ते नरकें न जाय, जे पच्चखाण सहित होय ते तिर्यंचमां न जाय, जे दयावंत होय, ते आयुष्यहीन न होय, अने जे सत्यवादी होय तेनो माठो स्वर न होय ॥ ५२ ॥ ॥ तपस्या जे छे ते सर्व

न् भुञ्जाना बन्धनान्वितान् ॥५१॥ न दाता नरकं याति न तिर्यग् विरतो भवेत् ॥ दयालुर्नायुषा हीनः सत्यवक्ता न दुःस्वरः ॥ ५३ ॥ तपः सर्वाक्षसारंगवशीकरणवागुरा ॥ कषायतापमृद्वीका कर्माजीर्णहरीतकी ॥ ५४ ॥ यद्दूरं यद्दुराराध्यं यत्सुरैरपि दुष्करम् ॥ तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम्

इंद्रियरूप जे मृगलां तेने वश करवाने जालसमान छे, तथा कषायरूप ताप टालवाने द्राक्षा समान छे, अने कर्मरूप अजीर्ण टालवाने हरडे समान छे ॥ ५४ ॥ ॥ जे वस्तु वेगली होय, दूर होय के दुःखें आराध्य होय, तथा जे देवताने पण दुर्लभ

होय, ते सर्व तपस्यायें करी सधाय छे. ते तपने पोताना गुणें करी उल्लंघन करी जाय एवुं बीजुं साधन नथी ॥ ५५ ॥ ॥ हवे बजारमां जइ धर्मनो विधियें करीने पंडित, द्रव्य कमावानो पोत पोतानो व्यापार करे ॥ ५६ ॥ ॥ मित्रना उपकारने अर्थें, बंधु एटले नाइना उदयने अर्थें, उत्तम पुरुष लक्ष्मी उपार्जन करे, केवल पो

॥ ५५ ॥ चतुष्पथं ततो यायात् कृतधर्मविधिः सुधीः ॥ कुर्यादर्थार्जनोपायं व्यवसायं निजं निजम् ॥५६॥ सुहृदामुपकाराय बन्धूनामुदयाय च ॥ अर्ज्यते विभवः सद्भिः स्वोदरं को बिभर्ति न ॥ ५७ ॥ व्यवसायभवा वृत्तिः सोत्कृष्टा मध्यमा कृषिः ॥ जघन्या भुवि सेवा तु भिक्षा स्यादधमाधमा ॥ ५८ ॥ ॥

तानुं पेट तो कोण नथी भरतो? ॥ ५७ ॥ ॥ व्यापारनी आजीविकायें पेट भराय, ते उत्कृष्ट आजीविका जाणवी, खेतिवाडी करी आजीविका चलाववी ते मध्यम जाणवी, पारकी सेवा करी आजीविका चलाववी, ते पृथिवीने विषे जघन्य जाणवी,

अने भिक्षा मागी पेट भरवुं ते अधमाधम आजीविका जाणवी ॥ ५८ ॥ ॥ ते माटे नीच व्यापार पोतें न करे, बीजा पासें न करावे, लक्ष्मी पुण्यथी प्राप्त थाय पण पापथी क्यारें पण वधे नही ॥ ५९ ॥ ॥ घणा आरंभरूप महापाप जेमां छे, लोकमां जेनी निंदा थाय छे, तथा जे उभयलोक विरुद्ध होय, ते कर्म आचरे नही ॥ ६० ॥

व्यवसायमतो नीचं न कुर्यान्नापि कारयेत् ॥ पुण्यानुसारिणी संपत् न पापाद्वर्द्धते क्वचित् ॥ ५९ ॥ बह्वारंभमहापापं जने चेज्जनगर्हितम् ॥ इहामुत्रविरुद्धं यत् तत्कर्म्म न समाचरेत् ॥ ६० ॥ लोहकारचर्मकारमद्यकृत्तैलिकादिभिः ॥ सत्यप्यर्थागमे कामं व्यवसायं परित्यजेत् ॥ ६१ ॥ एवं चरन् प्रथमयामविधिं

लोहार साथें, मोची अथवा चमार साथें, मद्यना करनार साथें अने तेली आदिक साथें जो घणुं धन प्राप्त थतुं होय तो पण व्यापार न करे ॥ ६१ ॥ ॥ ए प्रकारें प्रथम पोहोरनो सर्व विधि प्रत्यें करतो, श्रद्धायुक्त, भला विनयनो धणी, न्यायें करी

गोजतो, विज्ञानने मान आपवुं तथा लोकने रीजववुं तेनेविषे सावधान, एवो श्रा
नक इह लोक अने परलोकसंबंधि पोताना बे जन्म सफल करे ॥ ६२ ॥ ॥ इति श्री
रत्नसिंहसूरि,तत् शिष्य श्रीचारित्र सुंदरगणिना विरचित आचारोपदेशग्रंथमां प्रथमपो

समग्रं श्राद्धो विध्दशुविनयो नयराजमानः ॥ विज्ञानमानजनरंजनसावधा
नो जन्म द्वयं विरचयेत्सफलं स्वकीयम् ॥ ६२ ॥ इति श्रीरत्नसिंहसूरिशिष्य
श्रीचारित्रसुन्दरगणिविरचिते आचारोपदेशे प्रथमप्रहरवर्गः ॥ १ ॥ अ
थ स्वमन्दिरे यायात् द्वितीये प्रहरे सुधीः ॥ निर्जन्तुभुवि पूर्वाशाभिमुखः स्ना
नमाचरेत् ॥ १ ॥ सप्रणालं चतुष्पादं स्नानार्थं कारयेद्वरम् ॥ तद्भृते जले य

होरवर्गनो बालावबोध संपूर्ण ॥ १ ॥ ॥हवे बीजे पोहोरें ते पंमित पोताने घरे जइ जीव
रहित धरतीने विषे पूर्वदिशि संमुख बेशीने स्नान करे ॥१॥ ॥ नला परनाला सहित
बाजोठ स्नानने अर्थे करावे.ते जष्ण पाणी बाजोठमां रह्याथी जीवनी हिंसा न थाय॥२॥

॥ रजस्वलास्त्रीनो अथवा चंमालनो स्पर्श थयो होय अथवा घरमां सूतक थयुं होय, तथा स्वजनादिकनुं मृत्यु थयुं होय तो मस्तकथी मांमीने सर्वांगें स्नान करे ॥ ३ ॥ अन्य अवसरें मस्तक वर्जीने बीजुं शरीर पखाले, एटखुं विशेष जाणवुं, तथा कांइक उष्ण एवा थोडे पाणीयें करी पुण्यवंत जीव देवपूजाने अर्थे स्नान करे ॥ ४ ॥ ॥

स्माज्जंतुबाधा न जायते ॥ २ ॥ रजस्वलाया मलिनस्पर्शे जाते च सूतके ॥ मृतस्वजनकार्ये च सर्वाङ्गस्नानमाचरेत् ॥ ३ ॥ अन्यथा शीर्षवर्जं च वपुः प्रक्षालयेत्परम् ॥ कवोष्णेनाल्पपयसा देवपूजाकृते कृती ॥ ४ ॥ चन्द्रादित्यकरस्पर्शात्पवित्रं जायते जगत् ॥ तदाधारं शिरो नित्यं पवित्रं योगिनो विडुः ॥ ५ ॥ दयासाराः सदाचारास्ते सर्वे धर्महेतवे ॥ शिरःप्रक्षालनान्नि

चंडमा अने सूर्यना किरण स्पर्शथी सर्व जगत् पवित्र थाय बे, ते जगत्नो आधार मस्तक बे माटे ते मस्तक निरंतर पवित्र बे, एम योगीश्वर कहे बे ॥५॥ ॥ जीवदया बे सारजूत जेमां एवा सर्व आचार धर्मनां कारण बे, ते माटे मस्तक धोवाथी नित्य

मस्तकना जीवनें उपद्रव होय तेथी अधर्म थाय, माटे मस्तक स्नान नित्य करवुं वर्ज्य छे ॥६॥ ॥ मस्तक क्यांहि अपवित्र न होय. केमके! सदा ते लुगडाथी वीटयुं रहे, वली निर्मल तेजनो धरनार एवो आत्मा जे जीव, तेनी स्थिति एटले रहेवुं ते निरंतर मस्तकें छे, माटे क्यारें पण मस्तक अपवित्र थतुं नथी ॥७॥ ॥ स्नानने अर्थे पाणी नाख्या

त्यं तज्जीवोपद्रवो भवेत् ॥ ६ ॥ नापवित्रं भवेच्छीर्षं नित्यं वस्त्रेण वेष्टितम् ॥ अप्यात्मनः स्थितेः सत्वनिर्मलद्युतिधारिणः ॥ ७ ॥ स्नानायेति जलोत्सर्गाद् घ्नंति जन्तून बहिर्मुखान् ॥ मलिनं कुर्वते जीवं शोधयंति वपुर्हि ते ॥८॥ विहाय पोतकं वस्त्रं परिधाय जिनं स्मरन् ॥ यावज्जलार्द्रौ चरणौ तावत्तत्रावतिष्ठते

थी जीव हणाय छे, एवा स्नान धर्मेथी मिथ्यात्वी जनो पोताना जीवने मलीन करे छे, अने शरीरने पवित्र करे छे ॥ ८ ॥ ॥ स्नान करेलुं पोतीयुं मूकीने वीजुं वस्त्र पहेरीने जिनेश्वरनुं स्मरण करतो छतो ज्यांसुधी भीना पग होय त्यां सुधी त्यांज उभो रहे ॥९॥

अन्यथा जीना पग उपर मल लागे, तेवारें वली पग अपवित्र थाय, तथा ते जीजेला पगे जीव लागे तेमनी घात थाय, तेथी महोटुं पाप लागे ॥ १० ॥ ॥ घरना देरासर पासें जइने धरती पूंज्या पछी धोयेलां पूजानां वस्त्र पहेरीने आठ पडनो मुखकोश बांधे ॥ ११ ॥ ॥ देव पूजाने अवसरें एक मन, बीजुं वचन, त्रीजी काया, चोथुं

॥ ए ॥ अन्यथा मलसंश्लेपादपवित्रौ पुनः पदौ ॥ तल्लीनजीवघातेन भवेदा पातकं महत् ॥ १० ॥ गृहचैत्यांतिकं गत्वा भूमिसंमार्जनादनु ॥ परिधाय च वस्त्राणि मुखकोशं दधात्यथ ॥ ११ ॥ मनोवाक्कायवस्त्रेषु भूपूज्योपकरस्थितौ॥शुद्धिः सप्तविधा कार्या देवतापूजनक्षणे॥१२॥पुमान् परिदधेन्न स्त्रीवस्त्रं

वस्त्र, पांचमी भूमि, उठां पूजानां उपकरण अने सातमी स्थिति स्थैर्य, ए सात वानां देव पूजवाने अवसरें शुद्ध करवां ॥ १२ ॥ ॥ पूजा करती वखतें क्यारें पण पुरुषें स्त्रीनुं वस्त्र पहेरवुं नही, अने स्त्रीयें पुरुषनुं वस्त्र न पहेरवुं. जो पहेरे, तो कामनी त

या रागनी वृद्धि थाय ॥१३॥ ॥ भारीयें करी पाणी लावी ते पाणीयें करी भगवंतनी अंग पखाल करीने अंगलूहणे करी भगवंतनुं शरीर लूकुं करे. तेवार पछी अष्ट प्रकारनी पूजा करे, ते कहे छे ॥ १४ ॥ ॥ कस्तूरी केशर कपूर तेणेकरी मिश्रित करेलुं एवुं

पूजाविधौ क्वचित् ॥ न नारी नरवस्त्रं तु कामरागविवर्धनम् ॥ १३ ॥ भृंगारानीतनीरेण संस्नाप्यांगं जिनस्य तु ॥ रूक्षीकृत्य सुवस्त्रेण पूजां कुर्यात्ततोऽष्टधा ॥ १४ ॥ सच्चन्दनेन घनसारविमिश्रितेन कस्तूरिकाद्रवयुतेन मनोहरेण ॥ रागादिदोषरहितं महितं सुरेन्द्रैः श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पतिमर्चयामि ॥ १५ ॥ जातीजपाबकुलचम्पकपाटलाद्यैर्मन्दारकुन्दशतपत्रवरारविन्दैः ॥ संसारनाश

मनोहर चंदन तेणें करीने, राग द्वेषादिके रहित अने जेने चोशठ इंद्रें पूज्या एवा जे श्रीभगवंत त्रण जगतना स्वामी तेने हुं अर्चुं छुं ॥१५॥ इति प्रथमा चंदनपूजा ॥१॥ ॥ तेवार पछी जाइना फूल, जासूलना फूल, बोलसिरि, चंपक, पाडल, मंदार, मचकुंद, सो

पांखडीनां कमल, तथा बीजा पण फूलें करी, संसारना नाश करनार, करुणायें
करी प्रधान, एवा जगवंतने हुं पूजुं बुं ॥ १६ ॥ इति द्वितीया पुष्पपूजा ॥ २ ॥
काला अगरनो करेलो साकर सहित घणा कपूरें करी सहित घणा यत्नें कस्यो बहु
हर्ष आपनारो एवो धूप जक्तियें करी म्हारा पोताना पापनो नाश करवाने अर्थें हुं

करणं करुणाप्रधानं पुष्पैः परैरपि जिनेन्द्रमहं यजामि ॥ १६ ॥ कृष्णागुरुप्रचु
रितं सितया समेतं कर्पूरपूरमहितं विहितं सुयत्नात् ॥ धूपं जिनेंद्रपुरतो गुरु
तोषपोषं जक्त्योत्क्षिपामि निजडुष्कृतनाशनाय ॥ १७ ॥ ज्ञानं च दर्शनमथो
चरणं विचिन्त्य पुंजत्रयं च पुरतः प्रविधाय जक्त्या॥चोक्षाक्षतैः कणगणैरपरै

जगवंत आगल उखेवुं बुं ॥ १७ ॥ इति तृतीया धूप पूजा ॥३॥ ॥ ज्ञान दर्शन अने
चारित्र ए त्रण जाव मनमां चिंतवी त्रण ढगला आखे स्वब चोखायेंकरी तथा बीजा
पण सारा कण धान्य तेणेकरी जगवंत आगल करीने ते जगवंत श्रीआदीश्वर प्रत्यें

अक्तें करीहुं पूजुंछुं॥ १८॥इति चतुर्थी अक्त पूजा॥४॥ ॥नला एवां नालियेर, फनस, आमलां, बीजोरां, जंबीर, सोपारी अने आंबां प्रमुख फलेंकरीने स्वर्गादिक देवलोका दिक घणां फलना देनार एवा श्रीदेवाधिदेव एटले सर्व देव थकी अधिक देव जे श्रीन

रपीढ् श्रीमन्तमादिपुरुषं जिनमर्चयामि ॥ १८ ॥ सन्नालिकेरपनसामलबीज पूरजंबीरपूगसहकारमुखैः फलैस्तैः ॥ स्वर्गाद्यनल्पफलदं प्रमदाप्रमोदं दे वाधिदेवमशुभप्रशमं महामि ॥ १९ ॥ इति फलपूजा ॥ सन्मोदकैवर्टकमंरुक शालिदालिमुख्यैरसंख्यरसशालिभिरन्नभोज्यैः ॥ क्षुत्तृड्व्ययाविरहितं स्व हिताय नित्यं तीर्थाधिराजमहमादरतो यजामि ॥ २० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥

गवंतते प्रत्यें हर्ष करी हुं पूजुं छुं ॥ १९ ॥ इति पंचमी फल पूजा ॥५॥ ॥ नला एवा लाडवा, वडां, मांका, चोखा, दाल प्रमुख घणा रससहित शोभतां एवां नैवेद्य तेणेक रीने भूख अने तृषानी पीडा रहित एवा भगवंत तीर्थंकरने पोताना हितने अर्थे नि

त्य प्रत्यें हुं आदरेंकरी पूजुं बुं ॥२०॥ ॥इति षष्ठी नैवेद्य पूजा ॥ टाल्यो डे पापनो स मूह जेणें, नित्यें उदयवंत, त्रण विश्वने एटले त्रण जगतने जोवानी कला तेणेकरी सहित एवा नगवंत प्रत्यें नक्तियें करी मह्हारुं तम जे अज्ञान ते शमाववामाटे शमताना समुड्र एवा नगवंत प्रत्यें नक्तियें करी हुं दीपक करुं बुं ॥ २१ ॥ ॥इति सप्तमी दीपक

विध्वस्तपापपटलस्य सदोदितस्य विश्वावलोकनकलाकलितस्य नक्त्या ॥ उ द्द्योतयामि पुरतो जिननायकस्य दीपं तमःप्रशमनाय शमांबुराशेः॥२१॥ इति दीपकपूजा ॥ तीर्थोदकैर्धुतमलैरमलस्वनावं शश्वन्नदीह्रदसरोवरसागरोत्थैः ॥ डुर्वारमारमदमोहमहाहिताक्ष्र्यं संसारतापशमनाय जिनार्चयामि ॥ २२ ॥

पूजा ॥हे जिन! निरंतर निर्मल डे स्वनाव जेमनो, कंदर्प तथा आठ मद अने मोह रूप सर्पतेने हणवाने गरुड समान एवा तमने नदी, ड्रह,सरोवर अने समुड्र तेना निर्मल पाणीयें करी संसारनो ताप शमाववाने अर्थे हुं पूजुं बुं ॥ २२ ॥ ॥ इत्यष्टमी जल

पूजा॥एपूजाना महोटां आव काव्यनीस्तुति ते जणीने ए पूर्वे कह्यो जे जलो विधि, ते विधियें करी जे पूजा करे, ते पुण्यवंत श्रावक देवताना तथा मनुष्यना अखंम सुख पूर्ण जोगवीने थोडा कालमां मोक्षना सुख प्रत्यें पामे ॥ २३ ॥ ॥ इति पूजाष्टकम् ॥

इति जलपूजा ॥ पूजाष्टकस्तुतिमिमामसमामधीत्य योऽनेन चारुविधिना वितनोति पूजाम् ॥ भुक्त्वा नरामरसुखान्यविखंमितानि धन्यः सुवासमचिराल्लभते शिवेऽपि ॥२३॥ इति पूजाष्टकम् ॥ शुचिप्रदेशे निःशल्ये कुर्याद्देवालयं सुधीः ॥ सौधे यातां वामजागे सार्द्धहस्तोच्चभूमिके ॥ २४ ॥ पूर्वाशाभिमुखोऽर्चासु उत्तराभिमुखोऽथवा ॥ विदिशासंमुखो नैव दक्षिणां वर्जयेद्दिशाम् ॥ २५॥

घरमां जातां ते माबे हाथे दोढ हाथ उंची धरतीने विषे शल्य रहित एवा पवित्र स्थानकें पंमितजन देरासर करे ॥ २४ ॥ ॥ पूजानो करनार पूर्वदिशि साहामो अथवा उत्तरदिशि साहामो बेसे; पण विदिशिनी साहामो न वेसे; अने दक्षणदिशि वर्जे ॥

॥ २५ ॥ ॥ पूर्वदिशि साह्मामो बेसी पूजा करे तो लक्ष्मी पामे, अग्निखुणें संताप पामे, दक्षिण दिशियें मरण पामे, अने नैरुते खुणे उपद्रव उपजे ॥ २६ ॥ ॥ पश्चिम दिशियें पुत्रनुं दुःख होय, वायु खुणे संतान न होय, उत्तर दिशियें घणो लाभ थाय,

पूर्वस्यां लभते लक्ष्मीमग्नौ संतापसंभवः ॥ दक्षिणस्यां भवेन्मृत्युर्नैर्ऋते स्यादुपद्रवः ॥ २६ ॥ पश्चिमायां पुत्रदुःखं वायव्यां स्यादसंततिः ॥ उत्तरस्यां महालाभ ईशान्यां धाम्नि नो वसेत् ॥ २७ ॥ अंघ्रिजानुकरांसेषु मस्तके च यथाक्रमम् ॥ विधेया प्रथमं पूजा जिनेन्द्रस्य विवेकिभिः ॥२८॥ सचंदनं च काश्मीरं विनार्चा न विरच्यते ॥ ललाटकंठहृदये जठरे तिलकं पुनः ॥ २९ ॥ ॥

ईशान खुणे घरने विषे न रहे ॥ २७ ॥ ॥ बे पग, बे ढीचण, बे हाथ, बे खभा अने एक मस्तक ए नवे अंगें अनुक्रमें भावा पाधाथी विवेकी श्रावकें श्रीजिनेंद्रनी प्रथम पूजा करवी ॥२८॥ ॥ भला चंदन अने सारा केशर विना पूजा न करवी, वली ल

लाटें, कंठें, हृदयें अने पेट उपर श्रीजगवंतने तिलक करे ॥२ए॥ ॥ प्रजातें पवित्र वास करे, बे पोहोरें फूलनी पूजा करे, तेम सांजें धूप दीप करी पूजा करे एम पंफि तें त्रिकाल पूजा करवी ॥ ३० ॥ ॥ पूजा करतां एक फूलना बे कटका न करवा, क

प्रजाते शुद्धवासेन मध्याह्ने कुसुमैस्तथा ॥ संध्यायां धूपदीपाभ्यां विधेयार्चा मनीषिन्निः ॥ ३० ॥ नैकं पुष्पं द्विधा कुर्यान्न छिन्द्यात्कलिकामपि ॥ पत्रकुड्मलजे देन हत्यावत्पातकं नवेत् ॥ ३१ ॥ हस्तात्प्रस्खलितं पुष्पं लग्ने पादेऽथवा नु वि ॥ शीर्षोपरि धृतं यच्च तत्पूजार्हं न कर्हिचित् ॥३२ ॥निर्गन्धमुग्रगन्धं च त त्याज्यं कुसुमं समम् ॥ स्पृष्टं नीचजनैर्दष्टं कीटैः कुवसनैर्धृतम् ॥ ३३ ॥ ॥

ली पण ठेदवी नही, पत्रथी फूल जूडं न करवुं. एम करवाथी हत्या सरखुं पाप लागे ॥ ३१ ॥ ॥ हाथथी पडी गयेलुं, जेने पग लाग्यो, जे चूमियें पड्युं, तथा जे मस्तक उपर राख्युं, एवुं जे फूल ते पूजायोग्य कहेवाय नही ॥ ३२ ॥ ॥ गंध रहित, उग्र

गंधवालुं, नीच मनुष्यें फरश्युं, कीडे मंस्युं, माठे वस्त्रें लावेलुं, एवुं फूल गंमवुं पू
जामां लेवुं नही ॥ ३३ ॥ ॥ जगवंतने माबे पासें धूप देवो, जलनो कुंज संमुख
ढोववो, नागरवेलनां पान फल ते जगवंतना हाथनें विषे देवां ॥३४॥ ॥१ स्नात्र,
२ चंदन, ३ दीवो, ४ धूप, ५ फूल, ६ नैवेद्य, ७ जल, ८ ध्वजा, ए वासक्षेप, १० अ

वामांगे धूपदाहः स्याज्जदपात्रं तु संमुखे ॥ हस्ते दद्याज्जिनेन्द्रस्य नागवल्लीदलं
फलम् ॥ ३४॥ स्नात्रैश्चन्दनदीपधूपकुसुमैर्नैवेद्यनीरध्वजैर्वासैरक्षतपूगपत्रसहि
तैः सत्कोशवृद्ध्या फलैः ॥ वादित्रध्वनिगीतनृत्यनुतिभिश्छत्रैर्वरैश्चामरै, र्नूषा
निश्च किलैकविंशतिविधा पूजा नवेदर्हताम् ॥ ३५ ॥ इत्येकविंशतिविधां रच

क्षत,११ सोपारी,१२ तांबूल,१३ देव जंमारमां वृद्धि करवी,१४ फल,१५ वाजित्रध्वनि,
१६ गीतगान, १७ नाटक, १८ स्तुति,१ए छत्र, २० जलां चामर,२१ जलां आजरण,
ए एकवीश प्रकारें करीने श्रीअरिहंत देवनी पूजा होय ॥३५॥ ॥ ए एकवीश प्रकारें

॥ए४॥

करी जे नगवंतनी पूजा ठे तेने रूडा जीव नला पर्वने दिवसें करे, अथवा तीर्थे जइने करे, अने प्रथम कही जे उत्तम आठ प्रकारनी पूजा ते नित्य करवी, तथा बीजी पण वली जे जे नली वस्तु होय तें नावें करी पूजामां जोडीयें ॥ २६ ॥ ॥ तेवार पठी विशेष यकी धर्म पामवानी इबाएं अपवित्र मार्ग प्रत्यें मूकतो, धौतवस्त्र

यन्ति पूजां नव्याः सुपर्वदिवसेऽपि च तीर्थयोगे ॥ पूर्वोक्तचारुविधिनाष्टविधां च नित्यं यद्यद्वरं तदिह नाववशेन योज्यम् ॥ ३६ ॥ ग्रामचैत्यं ततो यायाद्विशो पाद्धर्मलिप्सया ॥ त्यजन्नशुचिमध्वानं धौतवस्त्रेण शोनितः ॥ ३७ ॥ यास्या मीति हृदि ध्यायंश्चातुर्थं फलमश्नुते ॥ उत्थितो लनते षाष्ठं त्वाष्टमं पथि च

पहेरवे करी शोनतो गामना देरासरने विषे जाय ॥ ३७ ॥ ॥ देरासरें जइशुं एम मनमां धरतो यको चोथनुं एटले एक उपवासनुं फल पामे, अने जेवारें देरासरें जावाने ऊठे तेवारें ठठ्ठनुं फल थाय, देरासरने मार्गे जातां अठ्ठम फलनो लान थाय ॥ ३८ ॥ ॥

देरासरने दीठे थके दशमनो एटले चार उपवासनो लाभ थाय, देरासरने बारणे गया थकां डुवादसनो लाभ थाय, देरासरनी मांहे प्रवेश करे त्यारें पन्नर उपवासनो लाभ थाय, भगवानने पूजतां मासखमणनो लाभ थाय ॥ ३ए ॥ ॥ पठी त्रणवार निसिही कहीने पंभित होय ते देरासरमां प्रवेश करे, तिहां देरासरनी चिंता प्रत्यें करीने पठी व्रजन् ॥ ३७ ॥ दृष्टे चैत्ये च दशमं द्वारे द्वादशकं लभेत् ॥ मध्ये पक्षोपवासस्य मासस्य च जिनार्चने ॥ ३ए ॥ तिस्रो नैपेधिकीः कृत्वा चैत्यं तत्प्रविशेत्सुधीः ॥ चैत्यचिंतां विधायाथ पूजयेच्छ्रीजिनं मुदा ॥ ४० ॥ मूलनायकमभ्यर्च्य अष्टार्हत्प्रतिमाः पराः ॥ पूजयेच्चारुपुष्पौघैः शिष्टाश्चांतर्बहिःस्थिताः ॥ ४१ ॥ अवग्रहाद्बहिर्गत्वा वन्देतार्हन्तमादरात् ॥ विधिना पुरतः स्थित्वा रचयेच्चैत्य

हर्षें करी श्रीभगवंतने पूजे ॥ ४० ॥ ॥ प्रथम आठ प्रकारें भला फूलना समूहें करी श्रीमूलनायकजीनी प्रतिमा पूजीने पठी अनुक्रमें बीजी आठ बाहिरनी प्रतिमा प्रत्यें पूजे ॥ ४१ ॥ ॥ पठी अवग्रहथी बाहेर जइने आदरथी श्रीअरिहंतने वांदे, पठी

विधियें सहित आगल रहीने चैत्यवंदन करे ॥ ४२ ॥ ॥ एक नमोत्थुणेंकरी प्रथम
जघन्य चैत्यवंदन जाणवुं, बे नमोत्थुणेंकरी बीजुं मध्यम चैत्यवंदन जाणवुं, पांच न
मोत्थुणेंकरी त्रीजुं उत्तम चैत्यवंदन जाणवुं. बीजां पण त्रण प्रकारें चैत्यवंदन छे,
ते कहे छे ॥ ४३ ॥ ॥ नमोत्थुणंनो पाठ योगमुद्रायें जणीजें, तथा जावंति चेइआइं
वन्दनम् ॥ ४२ ॥ एकशस्तु जघन्या स्याद् शाभ्यां नवति मध्यमा ॥पञ्चनि
स्तूत्तमा ज्ञेया जायते सा त्रिधा पुनः ॥४३ ॥ स्तुतिपाठे योगमुद्रा जिनमुद्रा
तु वन्दने ॥ मुक्ताशुक्तिकमुद्रा तु प्रणिधाने प्रयुज्यते ॥ ४४ ॥ उदरे कूर्परौ
न्यस्य कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा नवेदियम्
॥ ४५ ॥ पुरोंगुलानि चत्वारि पश्चादूनानि तानि तु ॥ अवस्थितिः पादयोर्या
ए पाठ जिनमुद्रायें जणवो, तथा जयवीयरायनो पाठ मुक्ताशुक्ति मुद्रायें जणीयें ॥४४॥
पेटने विषे कुणी थापीने कमलना डोडाने आकारें बे हाथ करीने मांहोमांहे आं
गली भेलियें ए प्रथम योगमुद्रा होय ॥ ४५ ॥ ॥ चार अंगुल आगली आंगलीनी

देरासरने दीठे थके दशमनो एटले चार उपवासनो लाज थाय, देरासरने बारणे गया थकां डुवादसनो लाज थाय, देरासरनी मांहे प्रवेश करे त्यारें पन्नर उपवासनो लाज थाय, जगवानने पूजतां मासखमणनो लाज थाय ॥ ३ए ॥ ॥ पबी त्रणवार निसिही कहीने पंमित होय ते देरासरमां प्रवेश करे, तिहां देरासरनी चिंता प्रत्यें करीने पबी व्रजन् ॥ ३ए ॥ दृष्टे चैत्ये च दशमं द्वारे द्वादशकं लजेत् ॥ मध्ये पक्षोपवासस्य मासस्य च जिनार्चने ॥ ३ए ॥ तिस्रो नैषेधिकीः कृत्वा चैत्यं तत्प्रविशेत्सुधीः ॥ चैत्याचिंतां विधायाथ पूजयेच्छ्रीजिनं मुदा ॥ ४० ॥ मूलनायकमभ्यर्च्य अष्टार्हत्प्रतिमाः पराः ॥ पूजयेच्चारुपुष्पौघैः शिष्टाश्चांतर्बहिःस्थिताः ॥ ४१ ॥ अवग्रहाद्बहिर्गत्वा वन्देतार्हन्तमादरात् ॥ विधिना पुरतः स्थित्वा रचयेच्चैत्यहर्षें करी श्रीजगवंतने पूजे ॥ ४० ॥ ॥ प्रथम आठ प्रकारें जला फूलना समूहें करी श्रीमूलनायकजीनी प्रतिमा पूजीने पबी अनुक्रमें बीजी आठ बाहिरनी प्रतिमा प्रत्यें पूजे ॥ ४१ ॥ ॥ पबी अवग्रहथी बाहेर जइने आदरथी श्रीअरिहंतने वांदे, पबी

विधियें सहित आगल रहीने चैत्यवंदन करे ॥ ४१ ॥ ॥ एक नमोत्थुणेंकरी प्रथम जघन्य चैत्यवंदन जाणवुं, बे नमोत्थुणेंकरी बीजुं मध्यम चैत्यवंदन जाणवुं, पांच नमोत्थुणेंकरी त्रीजुं उत्तम चैत्यवंदन जाणवुं. बीजां पण त्रण प्रकारें चैत्यवंदन छे, ते कहे छे ॥ ४३ ॥ ॥ नमोत्थुणंनो पाठ योगमुद्रायें जणीजें, तथा जावंति चेइआइं

वन्दनम् ॥ ४२ ॥ एकद्वास्तु जघन्या स्याद् द्वाभ्यां जवति मध्यमा ॥पञ्चभिस्तूत्तमा ज्ञेया जायते सा त्रिधा पुनः ॥४३ ॥ स्तुतिपाठे योगमुद्रा जिनमुद्रा तु वन्दने ॥ मुक्ताशुक्तिकमुद्रा तु प्रणिधाने प्रयुज्यते ॥ ४४ ॥ उदरे कूर्परौ न्यस्य कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा जवेदियम् ॥ ४५ ॥ पुरोंगुलानि चत्वारि पश्चादूनानि तानि तु ॥ अवस्थितिः पादयोर्या

ए पाठ जिनमुद्रायें जणवो, तथा जयवीयरायनो पाठ मुक्ताशुक्ति मुद्रायें जणीयें ॥४४॥ पेटने विषे कुणी थापीने कमलना डोडाने आकारें बे हाथ करीने मांहोमांहे आंगली मेलियें ए प्रथम योगमुद्रा होय ॥ ४५ ॥ ॥ चार अंगुल आगली आंगलीनी

बाजुयें पग पोहोळा राखीयें, अने पाछला पानीना नाग तरफ चार अंगुलथी कांइक ठंगा पग पोहोळा राखीयें, ए रीतें जे पगनुं थापवुं, ते बीजी जिनमुद्रा कहीयें ॥ ४६ ॥ बे गोठणनी वच्चें रहेला तथा मोती पाकवानी बे छीपो जेम जोडेली होय तेनी जेवा आकार वाला अने पोताना कपालने लगाडेला जेमां बे हाथ होय; ए

जिनमुद्रेयमीरिता ॥ ४६ ॥ मुक्ताशुक्तिसमाकारौ जानुगर्भस्थितौ समौ ॥ ललाटलग्नौ हस्तौ यौ मुक्ताशुक्तिरियं मता ॥ ४७ ॥ नत्वा जिनवरं यायाजदन्ना वश्यकीं गृहम् ॥ अश्नीयाद्बन्धुभिः सार्धं नक्ष्यानक्ष्यविचक्षणः ॥ ४८ ॥ अधौतपादः क्रोधान्धो वदन् दुर्वचनानि यत्॥ दक्षिणाभिमुखो भुंक्ते तस्याद्धाक्ष

मुक्ताशुक्ति नामक मुद्रा ज्ञानी पुरुषोयें मानेली छे ॥४७॥ ॥ भगवंतने नमीनें आवसहि कहेतो थको पोताना घर प्रत्यें जाय, त्यां जइने ते माह्यो श्रावक नक्ष अनक्षने ओळखतो थको पोताना बांधवो सार्थें जमे ॥४८॥ ॥ पग धोया विना, रीशें अंध थको,

मुखमांथी माठां वचन बोलतो थको जे दक्षिण दिशिनी साहामो बेसी जमे ते राक्षस भोजन कहीयें ॥ ४९ ॥ ॥ अंग पवित्र करी शुभस्थानकें, निश्चल आसने बेठो थको, देव गुरुने संभारतो थको जे जमे ते भोजनने मनुष्यनुं भोजन कहीयें ॥ ५० ॥ ॥ स्नान, तथा देवपूजा करीने, पूज्य जे पोताना माता पिता आदि तेने नमीने, हर्ष सहित

सभोजनम् ॥ ४९ ॥ पवित्रांगः शुभे स्थाने निविष्टो निश्चलः शनैः ॥ स्मृत देवगुरुर्भुङ्क्ते तत्स्यान्मानुषभोजनम् ॥ ५० ॥ स्नात्वा देवान् समभ्यर्च्य नत्वापूज्य जनान्मुदा ॥ दत्वा दानं सुपात्रेभ्यो भुंक्ते भुक्तं तदुत्तमम् ॥५१॥ भोजने मैथुने स्थाने वमने दन्तधावने ॥ विण्मूत्रोत्सर्गकाले च मौनं कुर्यान्महाम

सुपात्रने दान देइने जे जमवुं तेने उत्तम देवभोजन जाणवुं ॥ ५१ ॥ ॥ महोटी बुद्धिना धणीयें एक भोजन करतां, बीजुं स्त्रीसेवा करतां, त्रीजा वमनने विषे, चोथुं दातण करतां, पांचमी वडीनीत करतां, छठ्ठी लघुनीत करतां, एटले स्थानकें बोलवुं

नही ॥ ५१ ॥ ॥ अग्निखुण, नैरुतखुण अने दक्षिणदिशि आ त्रणदिशा भोजनमां
वर्ज्य छे, तथा रविना अस्तवेलायें, उदय वेलायें, ग्रहण पर्व होय त्यारें अथवा आप
णा ज्ञाति बांधवमां शव ज्यां सुधी पड्युं होय त्यां सुधी जमवुं नही ॥ ५२ ॥ ॥ जे
छते द्रव्यें भोजनादिकने विषे कृपणपणुं करे, ते मूर्खबुद्धिवालो जाणवो. ते देवने काजें धन
तिः ॥ ५२ ॥ आग्नेयीं नैर्ऋतिं भुक्तौ दक्षिणां वर्जयेद्दिशाम् ॥ सांध्ये ग्रहणका
ले च स्वजनादेः शवस्थितौ ॥५३॥ कार्पण्यं कुरुते यो हि भोजनादौ धने स
ति ॥ मन्ये मन्दमतिस्सोत्र देवाय धनमर्जति ॥ ५४ ॥ अज्ञातभाजने नाद्याद्
जातिभ्रष्टगृहेऽपि च ॥ अज्ञातानि निषिद्धानि फलान्यन्नानि संत्यजेत् ॥५५॥
बालस्त्रीभ्रूणगोहत्याकृतामाचारलोपिनाम् ॥ स्वगोत्रभेदिनां पंक्तौ जानन्नोपवि
कमावे छे? ॥५४॥ ॥ अजाण्या थाली प्रमुख भाजनमां जमवुं नही, जे ज्ञाति थकी
भ्रष्ट थयो होय तेने घेर जमवुं नही. अजाण्यां, भगवंतें निषेध्यां एवां फल तथा अन्न
छांडे, त्याग करे ॥५५॥ ॥ जे पंडित होय ते, १ बाल, २ स्त्री, ३ गर्भ, ४ गो, एनी

त्याना करनार, आचारना लोपनार, अथवा पोताना कुलनो त्याग करनार एटला
नी पंक्तिमां जाणतो थको जमवा बेसे नही ॥ ५६ ॥ ॥ मदिरा, मांस, माखण,
मधु, पांच जातिनां उंबरनां जाडनां फल, अनंतकाय, सर्व जातिनां अजाण्यां फल त
था रात्रे जोजन ए सर्वदा वर्ज्य छे ॥ ५७ ॥ ॥ काचो गोरस ते छास दहि इत्यादि

शेत्सुधीः ॥ ५६ ॥ मद्यं मांसं नवनीतं मधूदुंबरपञ्चकम् ॥ अज्ञातकायमज्ञा
तफलं रात्रौ च जोजनम् ॥५७॥ आमगोरससंयुक्तं द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥ द
ध्यद्वोषितयातीतं कुथितान्नं च वर्जयेत् ॥ ५८ ॥ जन्तुमिश्रं फलं पुष्पं पत्रं चा
न्यदपि त्यजेत् ॥ संधानमपि संसक्ति जिनधर्मपरायणः ॥ ५९ ॥ ॥ ॥

तेणें करी सहित कठोल चीज, सडी गयेलुं अन्न, बे दिवस उपरांतनुं दही तथा को
होयुं कुत्सित अन्न ए सर्व वर्जन करे ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीजिन धर्मने विषे रक्त थयेलो
श्रावक फल फूल तथा पान अने बीजा पण जे पदार्थ जीवादिसहित होय ते सर्व

त्यागे, न खाय; तथा अथाणा प्रमुख बावीश अनक्ष्य वर्जे ॥ ५ए ॥ ॥ नोज
न करतां तथा वडीनीत करतां घणो वखत लगाडे नही, तथा पाणी पीवुं, अने स्ना
न करवुं, ए बे वानां स्थिरतायें हलवे हलवे करीयें ॥ ६० ॥ ॥ नोजननी आदिमां
पाणी पीवुं ते विष सरखुं ने, तथा नोजननें अंतें पाणी पीवुं ते शिला सरखुं ने, अने

नोजनं विड्विमोक्षं च कुर्यादतिचिरं नहि॥वारिपानं तथा स्नानं पुनः स्थिरतया
सृजेत्॥ ६० ॥ नोजनादौ विषसमं नोजनान्ते शिलोपमम्॥ मध्ये पीयूषसदृशं
वारिपानं नवेत्त्रिधा ॥६१॥ अजीर्णे नोजनं जह्यात् कालेऽश्नीयाच्च साम्यतः॥
नुक्तोत्थितो वक्त्रशुद्धिं पत्रपूगादिनिः सृजेत् ॥ ६२ ॥ विवेकवान्न ताम्बूलम

नोजननी वचमां पाणी पीवुं ते अमृत सरखुं ने. ए रीतें पाणी पीवानुं फल जाणवुं
॥६१॥ ॥ अजीर्ण होय तेवारें नोजन न करवुं,जेवुं रुचे तेवुं नोजन कालें करे. जमी
उठ्या पनी मुख धोइने पान सोपारीयें करी मुख शुद्ध करे ॥ ६२ ॥ ॥ विवेकी पुरुष

मार्गें चालतो थको तंबोल न खाय, तथा पुण्यवंत होय ते आखी सोपारी वगेरेने दांतें करी भांजे नही ॥६३॥ ॥ जम्या पछी भनालाविना निद्रा करे नही, केमके, दिवसें सूवा थकी शरीरने विषे रोगोत्पत्ति थाय ॥ ६४ ॥ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीय

श्रीयाद्विचरन्पथि ॥ पूगाद्यमक्तं दंतैर्दलयेन्न तु पुण्यवित् ॥ ६३ ॥ भोजनादनु नो स्वप्याद्विना ग्रीष्मं विचारवान् ॥ दिवा स्वपयतो देहे जायते व्याधिसंभवः ॥ ६४ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीयवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥ अथ तृतीयवर्गारंभः ॥ ततो गेहे श्रियं पश्यन् विद्वगोष्ठीपरायणः ॥ सुतादिभ्यो ददच्छिक्षां सुखं तिष्ठेद्घटीद्वयम् ॥ १ ॥ आत्मायत्ते गुणग्रामे दैवायत्ते धनादिके ॥ वि

वर्ग संपूर्ण॥२॥तेवार पछी घरनी शोभाप्रत्यें जोतो थको पंडितनी साथे वात चित करतो, पुत्रादिकने शीखामण देतो सुखें समाधें बे घडी पर्यंत घरने विषे रहे ॥ १ ॥ गुणनो समूह पोताने वश छे, अने धनादिक तो भाग्यने हाथें छे, एम समस्त

तत्त्व जाण्यां छे जेणे एवा माणसने गुणनी हाणी न थाय ॥ १ ॥ ॥ कुलहीन मा
णस पण गुणें करी उत्तमता पामे, जेम कचराथी उत्पन्न थयेलुं कमल मस्तकें चडे
छे, अने कचरो छे ते पगें घसाय छे ॥ २ ॥ ॥ उत्तम माणसनी कोइ खाण नथी,
संसारमां उत्तम माणसनुं कोइ कुल नथी, मनुष्य मात्र पोताने स्वभावें गुणेकरीज
ज्ञाताखिलतत्त्वानां नृणां न स्याद्गुणच्युतिः ॥ १ ॥ गुणैरुत्तमतां याति वंशही
नोऽपि मानवः ॥ पंकजं ध्रियते मूर्ध्नि पङ्कः पादेन घृष्यते ॥ २ ॥ न काचिदुत्तमा
नां स्यात् कुलं वान्यगतिः क्वचित् ॥ प्रकृत्या मानवा एव गुणैर्यांति जगन्नु
तिम् ॥३॥ सत्वादिगुणसंपन्नो राज्यार्हः स्याद्यथा नरः ॥ एकविंशतिगुणः स्या
द्धर्मार्हो मानवस्तथा ॥ ५ ॥ अक्षुद्रहृदयः सौम्यो रूपवान् जनवल्लभः ॥ अ
जगतमां स्तववा योग्य थाय छे ॥ ४ ॥ ॥ सत्वादिक गुणें संपन्न पुरुष ते जेम रा
ज्ययोग्य होय, तेम श्रावकना एकवीश गुणें सहित माणस ते धर्मयोग्य होय
॥ ५ ॥ ॥ जेनुं क्षुद्र हृदय न होय ते अक्षुद्र नामा प्रथम गुण, २ सोम्य होय,

३ रूपवंत होय, ४ सर्वलोकने वाहालो होय, ५ क्रूर न होय, ६ संसारथी बीये, ७ मूर्ख न होय, ८ सदा दाक्षिण्यवंत होय ॥ ६ ॥ ॥ ९ लज्जावंत होय, १० दया सहित होय, ११ कोइ उपर राग द्वेष न करे, १२ सौम्य नजर होय, १३ गुणनो रागी होय, १४ भली धर्मकथा सहित होय, १५ भला परिवारवालो होय, १६ दीर्घदृष्टि

क्रूरो भवभीरुश्चाशठो दाक्षिण्यवान् सदा ॥ ६ ॥ अपत्रपी च सदयो मध्यस्थः सौम्य एव च ॥ गुणरागी सत्कथश्च सुपक्षो दीर्घदर्श्यपि ॥ ७ ॥ वृद्धानुगतो विनीतः कृतज्ञः सुहितोऽपि च ॥ लब्धलक्षो धर्मरत्नयोग्य एभिर्गुणैर्भवेत् ॥ ८ ॥ प्रायेण राजदेशस्त्रीभक्तवार्तां त्यजेत्सुधीः ॥ ततो नार्यागमः कश्चित्

ते भलो विचार करनार होय ॥ ७ ॥ ॥ १७ वृद्ध माणसने माननार होय, १८ विनयवंत होय, १९ करेला उपकारनो जाण होय, २० परम हितार्थी होय, २१ सर्व वातना भेदमां समजे ए एकवीश गुणें करी सहित श्रावक धर्मरत्नने योग्य होय ॥८॥ जे पंमित ते प्रायें राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथानो त्याग करे, केम के,

तेथी अर्थप्राप्ति कंइ थती नथी अटलुंज नही, परंतु सामो अनर्थ उपजे ले ॥ए॥ ॥ रूडा मित्र साथें नाइ साथें मांहोमांहे धर्मवार्त्ता करे, जे धर्मनां शास्त्र जाणतो होय तेनी पासें बेसे, तत्त्वना नाव जाणे, विचारे ॥ १० ॥ ॥ जेथकी पापनी बुद्धि उपजे तेनी संगति न करे, कोइ क्रोधने वचनें कहे तोपण पोतें न्यायमार्ग न मूके ॥११॥

प्रत्युतानर्थसंनवः ॥ ए ॥ सुमित्रैर्बन्धुनिः सार्द्धं कुर्याद्धर्मकथामपि ॥ तद्विदा सह शास्त्रार्थरहस्यानि विचारयेत् ॥ १० ॥ पापबुद्धिर्नवेद्यस्माद्वर्जयेत्तस्य संगतिम् ॥ कोपेन वचनेनापि न्यायं मुञ्चेन्न कर्हिचित् ॥ ११ ॥ अवर्णवादकस्यापि न वदेडुत्तमाग्रणीः ॥ पित्रोर्गुरोः स्वामिनोऽपि राजादिषु विशेषतः ॥ १२ ॥ मूर्खैर्डुष्टैरनाचारैर्मलिनैर्धर्मनिन्दकैः ॥ डुःशीलैर्लोनिनिश्चौरैः संगतिं वर्जयेद

जे उत्तम मनुष्य पंमित ते कोइनो अवगुण कहे नही; माता, पिता, गुरु, शेठ अने स्वामीना अवगुण बोले नही, वली विशेषें राजादिकनो अवगुण न बोले ॥ १२ ॥ मूर्खनी, डुष्टनी, अनाचारीनी, मलीननी, धर्मना निंदकनी, कुशीलवालानी, लोनी

नी. चोरनी एटलानी संगति वर्ज्जन करे ॥ १२ ॥ ॥ अजाण्या माणसनी प्रशंसा क रवी, अजाण्या माणसने पोताना घरमां रहेवा स्थानक आपवुं, अजाण्यां कुलसाथें सगाइ करवी, अजाण्या माणसने चाकर राखवो, पोताथी मोह्योटा माणस उपर कोप करवो, पोताथी मोटा वैरी साथे मत्सर राखवो, गुणवान् साथें विवाद करवो, पोता थी मोह्योटो चाकर राखवो, माथें देवुं करीने धर्म करवो, व्याजें उछीनुं उधारुं धन आ

त्तम् ॥ १३ ॥ अज्ञातस्योत्कीर्तनं यत् स्थानदानं तथाविधम् ॥ अज्ञातकुल संबन्धोऽज्ञातभृत्यस्य रक्षणम् ॥ १४ ॥ महत्सु कोपकरणं महता विग्रहस्त था ॥ विवादो गुणिभिः सार्धं स्वोच्चभृत्यस्य संग्रहः ॥ १५ ॥ ऋणं कृत्वा धर्म

पी मागवुं नही, स्वजन साथें विरोध करवो, पारका माणस साथें स्नेह प्रीति राखवी, वंना कियायें न चडे मोक्षने अर्थें. चाकरने दंफीने धन जोगवुं, दारिद्र आवे थके जाइ वांधवनो आश्रय करवो, पोते पोताना गुणनां वखाण करवां, पोतें वात कही पोते ज हसवुं, जे ते वस्तु खावी, ए सर्व आलोकमां तथा परलोकमां विरुद्ध एवां मूर्खनां

लक्षणनो तदन त्याग करवो ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
न्यायें धन उपार्जे, चर्यायें चालतो थको देश विरुद्ध अने कालविरुद्ध कार्यने छांडे,
त्यागे; राजाना वैरीनी संगत न करे, घणा माणस साथें विरोध न करे ॥१९॥ ॥ कुल

कृत्यं कुसीदस्याप्ययाचनम् ॥ विरोधः स्वजनैः सार्धं मैत्री चापि परैर्नरैः ॥
॥ १६ ॥ ऊर्ध्वारोहणमोक्षार्थं मुक्तिर्भृत्यस्य दंडनात् ॥ दौस्थ्ये बंधोराश्रयश्च
स्वयं स्वगुणवर्णनम् ॥ १७ ॥ उक्त्वा स्वयं च हसनं यस्य कस्यापि लक्षणम्॥
एतानि च विरुद्धानि मूर्खचिह्नानि संत्यजेत् ॥ १८ ॥ न्यायार्जितधनश्चर्या
मदेशकालकौ त्यजेत् ॥ राजविद्वेषिभिः संगं विरोधं च गणैः समम् ॥१९॥ अ
न्यगोत्रैर्विवाहं च शीलाचारकुलैः समैः ॥ सुप्रातिवेश्मके स्थाने कृतवेश्मान्वि

अने आचार जे शील ते जेना पोता सरखा होय एवा अन्यगोत्र साथें विवाह करे,
वली भला पाडोशीने स्थानकें घर बनावीने बांधव सहित रहे ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥

उपद्रवना स्थानकनो त्याग करे, तथा आवक योग्य खरच करे, द्रव्यने अनुसारें वस्त्रा
दिक पहेरवां, लोक निंदा करे ते काममां प्रवर्त्ते नही ॥ २१ ॥ ॥ देशने आचा
रें चालतो पोतानो धर्म न मूके, जे पोताने आशरे रह्यो होय तेनुं हित करे, पोतानुं
बल अने निर्बल पणुं जाणे, वली हित अने अहितनी वातने विशेषें जाणे ॥ २२ ॥
तः स्वकैः ॥ २० ॥ उपद्रुतस्य त्यजनं, यथायं च व्ययं चरेत् ॥ वेषं वित्तानुसारें
णाप्रवृत्तो जनगर्हिते ॥२१॥ देशाचारं चरन् धर्ममसुंचन्नाश्रिते हितः ॥ बला
बलं विजानन् स्वं विशेषाच्च हिताहितम् ॥ २२ ॥ वशीकृतेन्द्रियो देवे गुरौ
च गुरुभक्तिमान् ॥ यथावत्स्वजने दीनेऽतिथौ च प्रतिपत्तिकृत् ॥ २३ ॥ एवं
विचारचातुर्यं रचयंश्चतुरैः समम् ॥ कियतीं कामयेद् वेलां शृण्वन् शास्त्राणि
पांच इंद्रियनें वश करे, देव गुरुनें विषे घणी भक्ति राखे, यथा योग्य पणे स्वजननी,
दीननी अने अतिथीनी सेवा करे ॥२३॥ एवा कह्या जे विचार तेनी चतुराई शत्यें करे,
शास्त्रनें सांभलतो अथवा भणतो थको, चतुर माणसनी साथें केटलोएक वखत गमा

वे ॥ २४ ॥ ॥ वलतो द्रव्य कमाववानो उपाय करे परंतु जे भाग्यमां हशे ते मलशे एम कहीनें बेसी न रहे, केमके, उद्यम कर्या विना भाग्यवंत पुरुषनुं भाग्य केवारें फले नही ! माटे उद्यम करवो ॥ २५ ॥ ॥ शुद्ध चोखे व्यवहारें करी व्यापार करतो सदैव रहे; खोटा तोल, खोटा माप, खोटां लेख प्रत्यें वर्जे ॥ २६ ॥ ॥ १ लीहालानुं

वा भणन् ॥२४॥ कुर्वन्नर्थार्जनोपायं न तिष्ठेद्दैवतत्परः ॥ उपक्रमं विना भाग्यं पुंसां फलति न क्वचित् ॥२५॥ शुद्धेन व्यवहारेण व्यवसायं सृजन् सदा ॥ कूट तोलं कूटमानं कूटलेख्यं च वर्जयेत् ॥२६॥ अंगारवनशाकटभाटकस्फोटजीविकाम् ॥ दंतलाक्षारसकेशविषवाणिज्यकानि च ॥ २७ ॥ यंत्रपीडां निर्लांछन

कर्म, २ वन कर्म, ३ गाडानुं कर्म, ४ भाडानुं कर्म, ५ धरती फोडवानुं कर्म, ६ दांत कुवाणिज्य, ७ लाख कुवाणिज्य, ८ घृत तेल मधादिकनुं कुवाणिज्य, ए केश कुवाणिज्य अने १० विष कुवाणिज्य एना व्यापारनो त्याग करे ॥२७॥ ॥११ घाणीयंत्रप्रमुख

१२ बलद समारवा कर्ण कंबल छेदवा, १३ असती ते डुष्टदासी श्वान मार्जार प्रमुख
पापीजीवोनुं पोषण करवुं, १४ दव लगाडवा, अने १५ सर, इह तथा तलावादिकना
शोषण करवा ए पन्नरे कर्मादान पाप जाणीनें छांमवा ॥ २७ ॥ ॥ लोखंम, महुडा
नां फूल, मदिरा, मधु प्रत्यें पण तेमज वली कंदमूल पान प्रमुख वस्तु व्यापार कर

न, मसतीपोषणं तथा ॥ दवदानं सरःशोष इति पंचदश त्यजेत् ॥ २७ ॥ ॥
लोहं मधुकपुष्पाणि मदनं माक्षिकं तथा ॥ वाणिज्याय न गृह्णीयात् कंदान् प
त्राणि वा सुधीः॥२ए॥ न रक्षेत्फाल्गुनादूर्ध्वं न तिलानतसीमपि ॥ गुडटुप्परका
दीनि जन्तुघ्नानि घनागमे ॥३०॥ शकटं वा बलीवर्दान् नैव प्रावृषि वाहयेत् ॥

वाने अर्थें ग्रहण करे नही ॥ २ए ॥ ॥ जे माह्यो श्रावक ते फागुण मास उपरांत
तिल, अलशी, गोल, टोपरा प्रमुखने, घणां जीवोनो घात जाणीने चोमासे न राखे
॥ ३० ॥ गाडी अथवा पोठीया प्रमुख चोमासामां खेडावे नही, तथा जीवनी हिंसा

नुं प्रायें कारण एवुं खेत्रवाडीनुं कर्म न करें ॥ ३१ ॥ ॥ व्याजबी मूल आवते व
स्तु वेचवी, अधिको अधिको लाभ वांछवो नही. केमके, घणुं मूल खावा जतां प्रायें
मूलगा नाणानो पण नाश थाय ॥ ३२ ॥ ॥ कोईने उधारें आपीयें नही, घणो
लाभ थाय तोपण घरेणा राख्या विना लोभेंकरी निश्चें थकी कोइनें व्याजें नाणुं
प्राणिहिंसाकरं प्रायः कृषिकर्म न कारयेत् ॥ ३१ ॥ विक्रीणीयात्प्राप्तमूल्यं वां
छेन्नैवाधिकं ततः ॥ अतिमूल्यकृतां प्रायो मूलनाशः प्रजायते ॥३२॥ उध्धारकं न
प्रदद्यात् सति लाभे महत्यपि ॥ ऋते ग्रहणकाल्लोभान्न प्रदद्याध्दनं खलु ॥ ३३ ॥
जानन्स्तेयाहृतं नैव गृह्णीयाध्दर्ममर्मवित् ॥ वर्जयेत्तत्प्रतीरूपं व्यवहारं विवेक
वान् ॥ ३४ ॥ तस्करैरंत्यजैर्धूर्तैः, मलिनैः पतितैः समम् ॥ इहामुत्र हितं वांछ
आपियें नही ॥ ३३ ॥ ॥ चोरीनी वस्तु आवी जाणीनें धर्मनो जाण पुरुष वर्जे,
तथा सरस निरस वस्तु भेल सेल करवी ते तत्प्रतिरूप व्यापार कहीयें, ते व्यापार
प्रत्यें विचारवान् पुरुष वर्जे ॥ ३४ ॥ ॥ चोरसाथें, चांमालसाथें, धूर्त्तसाथें मलिन

अंतःकरणवाला साथें, पापोयें करी पतित थयेला साथें, आ लोक अने परलोकनेविषे हितनी इच्छा करनार प्राणीयें कोई पण प्रकारना व्यवहारनो त्याग करवो ॥ ३५ ॥ पोतानी वस्तु वेचतो थको असत्य न बोले, सत्य बोले, बीजानी वस्तु लेतो थको संचकार दीधो ते प्रत्यें लोपे नही ॥ ३६ ॥ ॥ जे मल्यो होय ते अणदीठी वस्तुनो न्, व्यवहारं परित्यजेत् ॥ ३५ ॥ विचारवान् विक्रीणानो वदेत् कूटक्रयं नहि ॥ आददानोऽन्यसक्तानि सत्यंकारं न लोपयेत् ॥ ३६ ॥ अदृष्टवस्तुनो नैव साटकं दृढयेत्सुधीः ॥ स्वर्णरत्नादिकं प्रायो नाददीतापरीक्षितम् ॥ ३७ ॥ राजतेजो विना न स्यादनर्थापन्निवारणम् ॥ नृपाननुसरेत्तस्मात् पारवश्यमनाश्रयन् ॥ ३८ ॥ तपस्विनं कविं वैद्यं मर्मज्ञं भोज्यकारकम् ॥ मंत्रकं निजपूज्यं च साटो सहसा निश्चित नही करे. सोनुं, रुपुं अने रत्न ए प्रायें अणपरख्या लेवा नहि ॥ ३७ ॥ ॥ राजाना तेज विना अनर्थ अने आपदानो नाश न होय, माटे राजादिकनो आसरो लेवो, पण परवश पणुं बांधवुं, पोताने वश रेहवुं ॥ ३८ ॥ जे पंडित

होय तेऐ १ तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, मर्मना जाण, रसोइ करनार, मंत्रवादी अने पोताना पूजनीक एटलाने कोपाववुं नही ॥ ३ए ॥ ॥ इव्यनो अर्थि इव्य पेदा करवामां तत्पर थको घणा क्लेश तथा धर्मनुं अतिक्रमण करे नही, नीचनी सेवा प्रत्यें आचरे नही, तथा विश्वासघात करवो ते प्रत्यें आचरे नही ॥ ॥ ४० ॥

कोपयेज्जातु नो बुधः ॥ ३ए ॥ अतिक्लेशं च धर्मातिक्रमणं नीचसेवनम् ॥ विश्वस्तघातकरणं नाचरेदर्थतत्परः ॥ ४० ॥ आदाने च प्रदाने च न कुर्याद्वक्तलोपनम् ॥ प्रतिष्ठां महतीं याति नरः स्ववचने स्थिरः ॥ ४१ ॥ धीरः स्ववस्तुनाशेऽपि पालयेद्धि निजां गिरम् ॥ नाशयेत् स्वल्पलाभार्थे वसुवत्स्यात्स दुःखि

लेवड देवड करतां थकां पोताना बोलनो लोप न करे, पण पोतानुं वचन पाले. केमके, जे माणस पोताना वचने स्थिर होय, ते माणस घणी प्रतिष्ठा प्रत्यें पामे ॥ ४१ ॥ ॥ पंमित होय ते सर्व वस्तुनो नाश थतां पण पोतानी वाचा

प्रत्यें पाळे, थोडा लाभने अर्थे जे पोतानुं बोल्युं न पाळे, ते वसुराजानी परें डुःख
पामे ॥ ४२ ॥ ॥ एवा व्यवहारने विषे दिवसनो चोथो प्रहर गमावे, तेवार पछी
सांझें वाळु करवाने पोताना घर प्रत्यें जाय ॥ ४३ ॥ ॥ एकासणुं, आंबिल, उप
वासनुं जेणें पच्चरकाण कीधुं होय ते पडिक्कमणुं करवाने संध्याकाळे मुनि महाराजने
तः ॥ ४२ ॥ एवं व्यवहारपरो यामं तुर्यं च यापयेत् ॥ वैकालिककृते गच्छेदथो
मंदिरमात्मनः ॥ ४३ ॥ एकाशनादिकं येन प्रत्याख्यानं कृतं भवेत् ॥ आवश्य
ककृते सायं मुनिस्थानमसौ व्रजेत् ॥ ४४ ॥ दिवसस्याष्टमे भागे कुर्याद्वैकालि
कं सुधीः॥ प्रदोषसमये नैव निश्चयान्नैव कोविदः ॥४५॥ चत्वारि खलु कर्माणि
संध्याकाले विवर्जयेत् ॥ आहारं मैथुनं निद्रां स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ ४६ ॥
स्थानकें जाय ॥ ४४ ॥ ॥ दिवसनें आठमे भागे एटले चार घडी दिवस छते वाळु
करे, पण संध्या वेळायें वाळु करें नही, वळी डाह्यो माणस रात्रें सर्वथा जमे नही
॥ ४५ ॥ ॥ १ आहार, २ स्त्रीसेवा, ३ निद्रा अने ४ विशेषे करी स्वाध्याय ए चार

कर्म निश्चेंकरी संध्याकाले वर्जन करे ॥ ४६ ॥ ॥ जो संध्याकाले आहार करे तो व्याधि उपजे, मैथुन सेवा करे तो गर्भ दुष्ट थाय, निद्रा करे तो भूत प्रेत पिशाचनी पीडा थाय, अने जो सझाय करे तो बुद्धिनी हीनता थाय ॥ ४७ ॥ ॥ दिवस चरिमनुं पच्चरकाण वाल्लु कीधा पछी करे; दुविहार, तिविहार, चउविहार प्रत्यें वर्जे, पच्च

आहाराज्जायते व्याधिर्मैथुनाद्गर्भदुष्टता ॥ भूतपीडा निद्रया स्यात् स्वाध्यायाद्बुद्धिहीनता ॥ ४७ ॥ प्रत्याख्यानं दुश्चरिमं कुर्याद्वैकालिकादनु ॥ द्विविधं त्रिविधं वापि चाहारं वर्जयेत्समम् ॥ ४८ ॥ अह्नो मुखेऽवसाने च यो द्वे द्वे घटिके त्यजेत् ॥ निशाभोजनदोषज्ञो विज्ञेयः पुण्यभाजनम् ॥ ४९ ॥ करोति वि

रकाण करे ॥४८॥ ॥ रात्रि भोजन संबंधि दोषना जाण होय ते प्रभातवेलानी तथा सांझ वेलानी बे बे घडी वर्जे. रात्रिभोजनना दोषनो जाण होय ते पवित्र पुण्यनुं ठाम जाणवो ॥ ४९ ॥ ॥ जे सदा सर्वदा रात्रिभोजनने विषे विरति एटले पच्चरका

ण करे, ते पुरुषने धन्य छे, कारण के ते पुरुषनुं अर्धुं आयुष्य अवश्य उपवासमां जा
य, अर्थात् ते पुरुषनुं एक वर्षमां अर्धुं वर्ष उपवासमां जाय ॥ ५० ॥ ॥ जे मनुष्य
दिवसें तथा रात्रिने विषे खातो थको रहे, ते मनुष्य प्रगट पणे शींगडा पूछडा रहित
एवा पशु एटले ढोरसमान जाणवो ॥ ५१ ॥ ॥ रात्रिभोजनना करवाथी ते मनु

रतिं धन्यो यः सदा निशि भोजनात् ॥ सोऽर्द्धं पुरुषायुषस्य स्यादवश्यमुपोषि
तः ॥ ५० ॥ वासरे च रजन्यां च यः खादन्नवतिष्ठते ॥ शृंगपुच्छपरिभ्रष्टः स
स्पष्टं पशुरेव हि ॥ ५१ ॥ उलूककाकमार्जारगृध्रशंबरशूकराः ॥ अहिवृश्चिक
गोधाश्च जायंते रात्रिभोजनात् ॥ ५२ ॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं न श्राद्धं देवता

ष्य घूअड, काक, बिलाड मांजार, गृध, सांवर, सूअर, सर्प, विंछु अने गिरोलीना अव
तार पामे ॥ ५२ ॥ ॥ रात्रें होम न करवो, स्नान न करवुं, श्राद्ध न करवुं, देवपूजा
न करवी, दान पण रात्रें दीधुं निःफल थाय, माटे न करवुं, अने विशेषे भोजन तो

नज करवुं ॥ ५३ ॥ ॥ न्यायमार्गें शोभतो एवो पुरुष जो ए प्रकारें दिवसना चारे प्रहर पूरण करे, तो विनयें करीने माह्यो ते पुरुष अक्षय मोक्षना सुखनो भजनार थाय ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशे तृतीय वर्ग संपूरण ॥ ३ ॥ ॥ थोडे पाणीयें पग, हाथ

र्चनम् ॥ दानं वा विहितं रात्रौ भोजनं तु विशेषतः ॥ ५३ ॥ एवं नयेद्यश्चतुरोऽपि यामान् नयाभिरामः पुरुषो दिनस्य ॥ नयेन युक्तो विनयेन दक्षो भवेदसावच्युतसौख्यभाग् वै ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशे तृतीयवर्गः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थवर्गप्रारंभः ॥ प्रक्षाल्य स्वल्पनीरेण पादौ हस्तौ तथा मुखम् ॥ धन्यंमन्यः पुनः सायं पूजयेच्छ्रीजिनं मुदा ॥ १ ॥ सक्रियासहितं ज्ञानं जायते मोक्षसाधकम् ॥ जानन्निति पुनः सायं कुर्यादावश्यकीं क्रियाम् ॥ २ ॥ ॥

तेमज मुखने पखालीने आत्माने धन्य मानतो वली श्रीजिनेश्वरनी हर्षेकरी पूजा करे ॥ १ ॥ ॥ भली क्रिया सहित जे ज्ञान ते मोक्षनुं साधन थाय, एवुं जाणतो थ

को सांजे पडिक्कमणानी क्रिया प्रत्यें करें ॥ २ ॥ ॥ जेम स्त्री अने भोजनना सुखनो जाण होय ते स्त्रीने भोगव्या विना अनें भोजन खाधा विना मात्र जाणवाथीज सुखी न थाय, तेम क्रिया विना एकलुं ज्ञान फलदायक नथी. क्रिया लोकने विषे फलनी आ पनारी छे,माटे मात्र नाम जाण्याथीज सुखी न थाय जेवारें क्रिया करे तेवारें भोगवी क

क्रियैव फलदा लोके न ज्ञानं फलदं मतम् ॥ यतः स्त्रीभक्ष्यभेदज्ञो न ज्ञानात् सुखितो भवेत् ॥३॥ गुर्वभावे निजगृहे कुर्वीतावश्यकं सुधीः॥ विन्यस्य स्थापना चार्यं नमस्कारावलीमथ ॥४॥ धर्मात्सिद्धि सर्वकार्याणि सिध्यन्तीति विदन् हृदि ॥

हेवाय, तेथी सुखी थाय ॥ ३ ॥ ॥ पंमित पुरुष जो गुरुनो योग न होय,तो पोताना घरने विषे स्थापनाचार्य मांमीने, थापना न होय तो नोकरवाली थापीने पडिक्कमणुं करे ॥ ४ ॥ ॥ धर्मथी सघला कार्यनी सिद्धि पामियें, एवुं हृदयने विषे जाणतो थ को सदा सर्वदा धर्मने विषे चित्त छे जेनुं एवो ते पुरुष धर्मनी वेलाने उल्लंघे नही

॥ ५ ॥ ॥ ते वेला वोल्या पछी अथवा ते वेला आव्यानी पहेलाज जे जपादिक धर्म कर्म करीयें, ते सर्व ऊखर खेत्रने विषे धान्य वाव्यानी परे निःफल थाय ॥ ६ ॥ ॥ पंडित छे ते सघली विधि प्रत्यें पूरण करीने धर्मनी क्रिया प्रत्यें करे; परंतु जे हीन एटले उंछुं अथवा अधिकुं करे ते मंत्रनी विधिनी परे दुःखीयो थाय, तेमज क्रिया आघी

सर्वदा तद्गतस्वान्तो धर्मवेलां न लंघयेत् ॥५॥ अतीतानागतं कर्म्म क्रियते यज्जपादिकम् ॥ वापिते चोपरे क्षेत्रे धान्यवन्निष्फलं भवेत् ॥ ६ ॥ विधिं सम्यक् प्रयुञ्जित कुर्वन्धर्मक्रियां सुधीः ॥ हीनाधिकं सृजन्मंत्रं विधिवद् दूषितो भवेत् ॥ ७ ॥ धर्मानुष्ठानवैतथ्ये प्रत्युतानर्थसंभवः ॥ रौद्ररंध्रादिजनकाद्दुष्प्रयुक्ता

पाछी करतां पण दुःखी थाय ॥ ७ ॥ ॥ धर्म करतां आघी पाछी क्रिया करतां सामो अनर्थ ऊपजे, जेम माठी रीते कीधुं औषधादिक ते उलटुं आकरा चांदा प्रमुख रोगने पेदा करे, तेम धर्म करतां जो क्रिया आघी पाछी करे तो सामो अनर्थ ऊपजे

॥ ८ ॥ ॥ वैयावच्च कीधाथी अक्षय श्रेय मंगलिक थाय, बाहुबली बाहुनुं बल पाम्यो, चक्रवर्ती सरखाने हराव्या, ते वैयावच्चना प्रभावथीज थयुं, एम जाणीने पंमित श्रावक पडिक्कमणुं करीने पछी गुरुनी विसामणा ते वैयावृत्त्य प्रत्यें करे ॥ ९ ॥ वस्त्रें करी मुखें मुखकोश बांधीने अण बोलतो, सर्व अंगना खेद प्रत्यें हरतो पोताना

दिवौषधात् ॥ ८ ॥ वैयावृत्त्ये कृते श्रेयोऽक्षयं मत्वा विचक्षणः ॥ विहितावश्यकः श्राद्धः कुर्याद्विश्रामणां गुरोः ॥ ९ ॥ वस्त्रावृतमुखो मौनी हरन् सर्वांगजं श्रमम् ॥ गुरुं संवाहयेद्यत्नात् पादस्पर्शं त्यजन्निजम् ॥ १० ॥ ग्रामचैत्ये जिनं नत्वा ततो गच्छेत्स्वमंदिरम् ॥ प्रक्षालितपदः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं स्मरेत् ॥ ११ ॥ अर्हन्तः शरणं संतु सिद्धाश्च शरणं मम ॥ शरणं जिनधर्मो मे साधवः शर

पगनो फरस त्यजतो एटले गुरुने पग अण लगाडतो यत्नथी गुरुनी चरणसेवा करे ॥ १० ॥ ॥ गाममां देरासरें भगवंतने नमीने वलतो पोताने घरे जाय, तिहां पग धोइने पंच परमेष्ठी नवकार प्रत्यें गणे ॥ ११ ॥ ॥ मुजने श्रीअरिहंत शरण हो

॥ ५ ॥   ॥ ते वेळा वोळ्या पछी अथवा ते वेळा आव्यानी पहेलाज जे जपादिक धर्म कर्म करीयें, ते सर्व ऊखर खेत्रने विषे धान्य वाव्यानी परे निःफळ थाय ॥ ६ ॥   ॥ पंम्फित छे ते सघळी विधि प्रत्यें पूरण करीने धर्मनी क्रिया प्रत्यें करे; परंतु जे हीन एटले उछुं अथवा अधिकुं करे ते मंत्रनी विधिनी परे डुःखीयो थाय; तेमज क्रिया आघी

सवर्दा तद्गतस्वान्तो धर्मवेळां न लंघयेत् ॥५॥ अतीतानागतं कर्म्म क्रियते य ज्जपादिकम् ॥ वापिते चोषरे क्षेत्रे धान्यवन्निष्फळं न्नवेत् ॥ ६ ॥ विधिं सम्यक् प्रयुञ्जित कुर्वन्धर्मक्रियां सुधीः ॥ हीनाधिकं सृजन्मंत्रं विधिवद् दूषितो न्नवेत् ॥ ७ ॥ धर्मानुष्ठानवैतथ्ये प्रत्युतानर्थसंन्नवः ॥ रौद्ररंध्रादिजनकाद्दुष्प्रयुक्ता

पाछी करतां पण डुःखी थाय ॥ ७ ॥   ॥ धर्म करतां आघी पाछी क्रिया करतां सामो अनर्थ ऊपजे, जेम माठी रीते कीधुं औषधादिक ते उलटुं आकरा चांदा प्रमुख रोगने पेदा करे, तेम धर्म करतां जो क्रिया आघी पाछी करे तो सामो अनर्थ ऊपजे

॥ ८ ॥   ॥ वैयावच्च कीधाथी अक्षय श्रेय मंगलिक थाय, बाहुबली बाहुनुं बल पाम्यो,
चक्रवर्ती सरखाने हराव्या, ते वैयावच्चना प्रनावथीज थयुं, एम जाणीने पंमित
श्रावक पडिक्कमणुं करीने पछी गुरुनी विसामणा ते वैयावृत्त्य प्रत्यें करे ॥ ए ॥
वस्त्रें करी मुखें मुखकोश बांधीने अण बोलतो, सर्व अंगना खेद प्रत्यें हरतो पोताना
दिवौषधात् ॥ ८ ॥ वैयावृत्त्ये कृते श्रेयोऽक्षयं मत्वा विचक्षणः ॥ विहितावश्यकः
श्राद्धः कुर्याद्विश्रामणां गुरोः ॥ ए ॥ वस्त्रावृतमुखो मौनी हरन् सर्वांगजं
श्रमम् ॥ गुरुं संवाहयेद्यत्नात् पादस्पर्शं त्यजन्निजम् ॥ १० ॥ ग्रामचैत्ये जिनं
नत्वा ततो गच्छेत्स्वमंदिरम् ॥ प्रक्षालितपदः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं स्मरेत् ॥ ११ ॥
अर्हन्तः शरणं संतु सिद्धाश्च शरणं मम ॥ शरणं जिनधर्मो मे साधवः शर
पगनो फरस त्यजतो एटले गुरुने पग अण लगाडतो यत्नथी गुरुनी चरणसेवा
करे ॥ १० ॥   ॥ गाममां देरासरें जगवंतने नमीने वळतो पोताने घरे जाय, तिहां
पग धोइने पंच परमेष्ठी नवकार प्रत्यें गणे ॥ ११ ॥   ॥ मुजने श्रीअरिहंत शरण हो

॥ ५ ॥ मुजने श्रीसिद्ध शरण होय, मुजने श्रीकेवलिप्रज्ञापित जिनधर्म शरण होय, वली मुजने सदैव श्रीसाधु शरण होय ॥ ११ ॥ मंगलिकनो करनार, दुःखथी राखनार, जे शील रूप संनाहने पहेरीने कंदर्पने उतावलो वेगे करीने जीततो हवो, ते श्री थुलिभद्रने नमस्कार हो ॥ १२ ॥ ॥ गृहस्थ थकां पण जेने महोटी शीलनी लीला

एं सदा ॥ १२ ॥ नमः श्रीथूलिभद्राय कृतभद्राय तायिने ॥ शीलसन्नाहमा विभ्रद् यो जिगाय स्मरं रयात् ॥ १३ ॥ गृहस्थस्यापि यस्यासन् शीललीला महत्तराः॥नमः सुदर्शनायास्तु दर्शनेन कृतश्रिये ॥ १४ ॥ धन्यास्ते कृतपुण्यास्ते मुनयो जितमन्मथाः ॥ आजन्मनिरतीचारं ब्रह्मचर्यं चरंति ये ॥ १५ ॥

थइ, नर्मुं समकित तेणे करी कीधी छे शोभा जेणे एवा श्रीसुदर्शन शेठने नमस्कार हो ॥१४॥ ॥ जेमणे कंदर्प जीत्यो छे, वली जनमथी मांडी अतिचारना दोष रहित जे शील प्रत्यें पाले छे, ते धन्य पुण्यना करनार यति जाणवा ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

अशक्त अने घणां अनवद्यकर्म करनारो,सर्व प्रकारें नथी जीती इंद्रिय जेणे एवो पुरुष, एक दिवस पण उत्तम एवा शीलने धारण करवाने समर्थ थातो नथी ॥ १६ ॥ ॥ रे संसार समुद्र! मदयुक्त छे नेत्रो जेनां एवी स्त्रीयोरूप डुस्तर खराबा जो वच्चे न आवे,तो तारो पार पामवानो मार्ग बहु वेगळो नथी॥ १७॥ ॥ जूठुं बोलवुं,साहस पणुं,माया ते

निःसत्वो भूरिकर्मा हि सर्वदाप्यजितेन्द्रियः॥ नैकाहमपि यः शक्तः शीलमाधातुमुत्तमम् ॥ १६ ॥ संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ॥ अंतरा डुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥ १७ ॥ अनृतं साहसं माया मूर्खत्वमतिलोभिता॥ अशौचं निर्दयत्वं च स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः॥ १८॥ या रागिणि विरागिणी

कपट, मूर्खपणुं, घणो लोभ, अपवित्र पणुं, दया रहित पणुं ए दोष स्त्रीना स्वभावेज होय छे ॥ १८ ॥ ॥ जे स्त्री रागी पुरुषउपर पण वैरागी थाय, ते स्त्रीने कोण भोगवे? जे पंडित होय ते मुक्ति रूपिणि स्त्रीनेज भोगवे; केमके, मुक्ति रूपिणी स्त्री जे

छे, ते वैरागी ऊपर रागिणी छे ॥१ए॥ ॥ एवो स्त्रीनो असार पणो चिंतवतो थोडी
वेला तो समाधिवंत थको निद्रा करे, पण बुद्धिवंत धर्मना पर्वने विषे मैथुन एटले
स्त्रीनो नोग न करे ॥ २० ॥ ॥ वली बुद्धिवंत होय ते घणी वेला पर्यंत निद्रानुं से

स्त्रियस्ताः कामयेत कः ॥ सुधीस्तां कामयेन्मुक्तिं या विरागिणि रागिणी ॥
॥ १ए ॥ एवं ध्यायन् नजेन्निद्रां स्वल्पं कालं समाधिमान् ॥ नजेन्न मैथुनं
धीमान् धर्मपर्वसु कर्हिचित् ॥ २० ॥ नातिकालं निषेवेत प्रमीलां जातु चित्सु
धीः ॥ अत्युद्रिक्ता नवेदेषा धर्मार्थसुखनाशिनी ॥ २१ ॥ अत्याहारोऽल्पनि
द्रश्च अल्पारंनपरिग्रहः ॥ नवत्यल्पकषायी यो ज्ञेयःसोऽल्पनवभ्रमः ॥ २२ ॥

वन न करे, केमके, घणी ऊंघ करे तो धर्म, अर्थ अने सुख तेनो नाश करनारी थाय
॥ २१ ॥ ॥ जे स्वल्प आहार करे, स्वल्प निद्रा लीए, स्वल्प आरंन करे, जेने
स्वल्प परिग्रह होय, अने जेने क्रोध थोडो, होय, तेनुं संसारमां नमवुं पण स्वल्पज जाणवुं

॥ २२ ॥ ॥ निद्रा, आहार, भय, स्नेह, लज्जा, काम, विषय, कलह, क्रोध, ए जेट
ला वधारीयें, तेटला वधे छे, अने जेटला प्रमाणे घटाडीयें तेटला घटी पण जाय
॥ २३ ॥ ॥ विघ्नरूप वेल छेदवाने कुहाडा सरखा एवा श्रीनेमिनाथ भगवानने नि
द्राने वखते मनमां स्मरतां पुरुष माठे स्वप्ने पराभव पामे नही ॥२४॥ ॥ अश्वसेन
निद्राहारभयस्नेहलज्जाकामकलिक्रुधः ॥ यावन्मात्रा विधीयन्ते तावन्मात्रा भ
वन्त्यमी ॥ ७३ ॥ विघ्नव्रातलतानेमिं श्रीनेमिं मनसि स्मरन् ॥ स्वापकाले न
रो नैव दुःस्वप्नैः परिभूयते ॥ ७४ ॥ अश्वसेनावनीपालवामादेवीतनूरुहम् ॥
श्रीपार्श्वं संस्मरन्नित्यं,दुःस्वप्नान्नैव पश्यति ॥७५॥ श्रीलक्ष्मणांगसंभूतं महसेन
नृपांगजं ॥ चंद्रप्रभं स्मरंश्चित्ते सुखं निद्रां लभेत वै ॥ ७६ ॥ सर्वविघ्नाहिगरुडं
राजा अने वामा राणीनो पुत्र श्रीपार्श्वनाथ स्वामी तेने नित्य स्मरतो मातुं स्वप्न न देखे
॥२५॥ तेमज लक्ष्मणा राणीनो तथा महसेन राजानो पुत्र एवो श्रीचंद्रप्रभ स्वामी
तेने चित्तमां स्मरतां सुखें निद्रा पामे ॥ २६ ॥ ॥ सर्व विघ्न रूप सर्पने हणवाने

गुरुड समान, सर्व सिद्धिना आपनार एवा श्रीशांतिनाथ प्रत्यें मनमां ध्यातो थको मनुष्य चोर प्रमुखथी जय न पामे ॥ २७ ॥ ॥ ए प्रकारें ए सर्व दिवस संबंधि करणी जाणीने श्रावकवर्गने कीधो छे उत्तम संतोष जेणें एवी करणी जे आदरे, ते पुरुष

सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ ध्यायन् शांतिजिनं नैति चौरादिभ्यो जयं नरः ॥ २७ ॥ इत्यवेत्य दिनकृत्यमशेषं श्राद्धवर्गजनितोत्तमतोषम् ॥ संचरन्निह परत्र च लो के कीर्तिमेति पुरुषो धुतदोषः ॥ २८ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतुर्थवर्गः ॥४॥ ॥ अथ पंचमवर्गप्रारंभः ॥ लब्ध्वा तन्मानुषं जन्म सारं सर्वेषु जन्मसु ॥ सुकृतेन सदा कुर्यात् सकलं सफलं सुधीः ॥ १ ॥ निरन्तरकृताद्धर्मात् सुखं नि

सर्व दोष टाळीने इहलोक अने परलोकें जस पामे ॥ २८ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतुर्थवर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥ सघला जन्मनो सार एवो ए मनुष्यनो जन्म पामीने ते पुरुष पुण्यैंकरीने सदा सर्वदा सर्व कामनी सिद्धि करे ॥ १ ॥ ॥ निरंतर धर्म कस्याथी

निश्चें सदाइ सुख होय, माटे दान, ध्यान, तप अने जणवुं तेणे करी दिवसने वांजीउ न गमावे, एटले दिवसने वांजीउ न करे, परंतु दानादिक अवश्य प्रत्येक दिवसें करीनें सफल दिवस करे ॥ १ ॥ ॥ जीव पोताना आयुष्यना प्रायें त्रीजे जागें अथवा अंत समयें शुज अने अशुज बेमांथी एक प्रकारनुं आगला जवनुं आयुष्य बांधे ॥ २ ॥

त्यं जवेदिति ॥ अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात् दानध्यानतपःश्रुतैः ॥ २ ॥ आयुस्तृतीयजागे च जीवोंत्यसमयेऽथवा ॥ आयुः शुजाशुजं प्रायो बध्नाति परजन्मसु ॥ ३ ॥ आयुस्तृतीयजागस्थः पर्वश्रेणीषु पंचसु ॥ श्रेयः समाचरन् जन्तुर्बध्नात्यायुर्निजं ध्रुवम् ॥ ४ ॥ जन्तुराराधयेद्धर्मं द्वितीयायां द्विधा स्थितम् ॥ सू

आउखाने त्रीजे जागे रह्यो थको प्राणी बीज, पांचम, आठम, अगीआरस अने चौदश ए पांच पर्वना दिवसें धर्म आचरतो थको पोतानुं निश्चें थकी आउखुं बांधे ॥४॥ बीज पाळ्याथी प्राणी यतिधर्म अने श्रावकधर्म ए बे प्रकारना धर्म प्रत्यें आराधे, ते

प्राणी घणा पुण्यनो समूह संपादन करतो राग अने द्वेप ए बेने बीज तिथीयें जीते ॥ ५ ॥ ॥ पांचम पाल्याथी पांच ज्ञान प्रत्यें पामे, पांच चारित्र पामे, पांच महाव्रत पामे, ए पांचम प्रत्यें पालतो अहंकार, विषय, कपाय, निद्रा अने विकथा ए पांच प्रमादने जीते ॥ ६ ॥ ॥ आठम पाल्याथी मांगं आठ कर्म प्रत्यें नशाडे, तथा पांच

जन् सुकृतसंघातं रागद्वेषद्वयं जयेत् ॥ ५ ॥ पंच ज्ञानानि लजते चारित्राणि व्रतानि च ॥ पंचमीं पालयन् पंच प्रमादाञ्जयति ध्रुवम् ॥६॥ डुष्टाष्टकर्मनाशायाष्टमी नवति रक्षिता ॥ स्यात्प्रवचनमातॄणां शुद्ध्येऽष्टमदान् जयेत् ॥ ७ ॥ एकादशांगानि सुधीराराधयति निश्चितम् ॥ एकादश्यां शुजस्तद्व्रावकप्रतिमा

समिति अने त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माता तेने शुद्ध करे, तथा जातिमद, कुलमद, रूपमद, बलमद, ज्ञानमद, तपमद, लाजमद अने धनमदने जीते, एटले ए आठ मद तेना दूर जाय ॥ ७ ॥ ॥ एकादशियें धर्म प्रत्यें करतो पंमित पुरुष अगीआर

अंग प्रत्यें तथा श्रावकनी अगीआर प्रतिमा प्रत्यें आराधे ॥ ७ ॥ ॥ चतुर्दशीने आराधतो ते दिवसें तप करतो थको प्राणी चौदराज लोकने उपरला जे मोक्षरूप स्थानक छे, ते प्रत्यें तथा चौद पूर्व प्रत्यें पामे ॥ ए ॥ ॥ ए पांच पर्वना दिवस छे ते निश्चें एकेक थकी चडता चडता फलनां देवावाला छे, ते माटे ए दिवसें धर्म करणी

स्तथा॥७॥चतुर्दशानासुपरिवासमासादयत्यहो॥चतुर्दश्यामाराधयेत् पूर्वाणि च चतुर्दश ॥ए॥ पंच पर्वाण्यमूनीह फलदानि यथोत्तरम् ॥ तदत्र विहितं श्रेयो ह्यधिकं फलदं भवेत् ॥ १० ॥ धर्मक्रियाः प्रकुर्वीत विशेषात् पर्ववासरे ॥ आराधनुत्तरगुणान् वर्जयेत्स्नानमैथुनम् ॥ ११ ॥ विदध्यात्पौषधं धीमान् मुक्तिवश्यौ

करवाथी अधिकुं अधिकुं फल पामे ॥ १० ॥ ॥ माटे विशेषथी पर्वने दिवसें धर्मनी क्रिया प्रत्यें करे,उत्तर गुण जे पोसह पडिक्कमणादिक ते प्रत्यें आराधतो स्नान तथा मैथुन प्रत्यें वर्जे ॥ ११ ॥ ॥ बुद्धिवंत पर्वना दिवसें पोसह करे, ए मुक्तिने वश कर

पथ्यं परम् ॥ तदशक्तौ विशेषेण श्रयेत्सामयिकं व्रतम् ॥ १२ ॥ च्यवनं जननं दीक्षा ज्ञानं निर्वाणमप्यहो ॥ अर्हतां कल्याणकानि सुधीराराधयेत्तथा ॥ १३ ॥ एकस्मिन्नेकाशनकं द्वयोर्निर्विकृतं तपः ॥ त्रिष्वाचाम्लं सपूर्वार्द्धं चतुष्षूपोषितं सृजेत् ॥ १४ ॥ कुर्यादर्धं चोपवासमतः पञ्चसु तेष्वपि ॥ पंचन्निर्व

वाने औषध छे, ते जो पोतानी शक्ति न होय, तो विशेषथी सामायिक व्रत आश्रय करे ॥ १२ ॥ ॥ तेम १ च्यवन, २ जन्म, ३ दीक्षा, ४ केवल अने ५ मोक्ष ए पांच श्रीअरिहंतना कल्याणिकनां दिवस छे, ते प्रत्यें पंम्डित आराधे ॥ १३ ॥ ॥ एक कल्याणक होय ते दिवसें एकासणुं करे, बे कल्याणक होय ते दिवसें नीवी करे, त्रण कल्याणक होय ते दिवसें आयंबिल पूर्वार्द्ध ते एकासणुं करे, चार कल्याणक होय ते दिवसें उपवास करे ॥ १४ ॥ ॥ वली पांच कल्याणक होय, ते दिवसें एकासणा सहित उपवास करे, ते पंम्डित कल्याणक तप पांच वर्षे करी पूर्ण करे ॥१५॥ ॥ ॥

नमोअरिहंतादिक वीश पद ते वीश थानक तेने जे विधि सहित एकासण प्रमुख तपें करीनें करे, ते पुरुष धन्य जाणवो॥१६॥ ॥ते विधि अने ध्यानसहित जे ए वीशस्थानक आराधे, ते प्राणी दुःखनो हरनार एवुं महोटुं तीर्थंकर पदवीनुं नाम कर्म पामे ॥ १७ ॥

त्सरैः पूर्यात् तेषु चोपोषिते सुधीः ॥१५॥ अर्हदादिपदस्थानि विंशतिः स्थानकानि च ॥ प्रकुर्वीत विधिं धन्य, स्तपसैकाशनादिना ॥ १६ ॥ ततो विधिध्यानपरो योऽमून्याराधयत्यहो ॥ लभते तीर्थकृन्नामकर्माशर्महरं परम् ॥ १७ ॥ उपवासेन यः शुक्ला, माराधयति पञ्चमीम् ॥ सार्धानि पञ्च वर्षाणि लभते पंचमीं गतिम् ॥ १८ ॥ उद्यापनं व्रते पूर्णे कुर्याद्वा द्विगुणं व्रतम् ॥ तपोदिन

साडा पांच वरस लगें उपवासें करीने जे उजवाली पांचम प्रत्यें आराधे ते पांचमी गति मोक्ष प्रत्यें पामे ॥१८॥ ॥ व्रत पूरण थया पछी उजमणुं करे, जो शक्ति न होय तो बमणुं तप करे, तपना दिवस प्रमाणे माणसोने जमाडे ॥१९॥ ॥ ॥ ॥

पाटी पोथी कवली ठवणी नोकरवाली ए पांच,ज्ञाननां उपकरण पांचमने उजमणें करे,तेम वली देरासरनां उपकरण करे॥२०॥ तेम पाखीनुं पडिक्कमणुं करतो अने चौदशनो उपवास करतो श्रावक पन्नरे दिननो पक्ष अने कुटुंबनो पक्ष ए बे पक्षनी शुद्धि करे ॥२१॥ आ

प्रमणानि भोजयेन्मानुषाणि च ॥ १९ ॥ कारयेत्पञ्च पंचोच्चैर्ज्ञानोपकरणानि च ॥ पञ्चम्युद्यापने तद्वच्चैत्योपकरणान्यपि ॥ २० ॥ पाक्षिकावश्यकं तत्त्वं चतुर्दश्यामुपोषितम् ॥ पक्षं विशुद्धं तनुते द्विधापि श्रावको निजम् ॥ २१ ॥ त्रिषु चातुर्मासिकेषु कुर्यात्षष्ठं तपः सुधीः ॥ अष्टपर्वण्यष्टमीं च तदावश्यकयुक् सृजेत् ॥ २२ ॥ अष्टमिकासु सर्वासु विशेषात् पर्ववासरे ॥ आरंभान् वर्जयेज्ज

षाढ चोमासो,कार्त्तिक चोमासो अने फागुण चोमासो ए त्रण चोमासानी छठ करे तथा महोटुं पर्व पंजोसण आवे, तेवारें तेनी अठम करे,अने संवत्सरीनुं पडिक्कमणुं करे॥२२॥ सघला अठाइने विषे विशेष पर्वने दहाडे पोताना घरने विषे खांडवुं, दलवुं, धोवुं तथा

स्नान प्रमुख आरंभ न करे ॥२३॥ ॥ महोटुं पर्व पंजोसण छे, तेने विषे शुद्ध मनें करी
ने जिनशासननी शोभामाटें उत्सव करतो नगरमां जीवदया पलावतो कल्पसूत्र सांभले२४
ते श्रावक भला धर्मनी करणी प्रत्यें करीनें पण संतोष पामी रहे नही. मनेंकरी तृप्ति अ

हे स्वंभनापेपणादिकान् ॥ २३ ॥ पर्वणि शृणुयाज्ज्येष्ठे श्रीकल्पं स्वच्छमानसः॥
शासनोत्सर्पणं कुर्वन्न मारीं कारयेत्पुरे ॥ २४ ॥ श्राध्दो विधाय स्वं धर्मं नो तृ
प्तिं तावता व्रजेत् ॥ अतृप्तमानसः कुर्याध्दर्मकर्माणि नित्यशः ॥ २५ ॥ तृप
पर्वणि श्रीकल्पं सावधानः शृणोति यः ॥ अंतर्भवाष्टकं धन्यं लभेतपरमं प
दम् ॥ २६ ॥ सम्यक्त्वसेवनान्नित्यं सब्रह्मव्रतपालनात् ॥ यत्पुण्यं जायते लो

ण पामतो धर्मनी करणी प्रत्यें सदा सर्वदा करे ॥ २५ ॥ ॥ पंजोसण पर्वनें विषे श्री
कल्पसूत्र सावधान थइनें श्रावक सांभले, ते धन्य पुरुष आठ भव मांहे मोक्ष पामे ॥२६॥
नित्यें समकेतनी सेवाथी तथा नित्यें रूडुं ब्रह्मचर्य व्रत पालवाथी लोकने विषे जे पुण्य

थाय, ते पुण्य कल्पसूत्र सांजलवाथी थाय ॥२७॥ दानें करी, विविध प्रकारना तपेकरी, रूडा तीर्थनी सेवायें करी जे प्राणीउनां पाप क्षय पामे, ते पाप कल्पसूत्र सांजलतां थकां जाय ॥२८॥ मुक्ति उपरांत कोइ पद नथी, शत्रुंजय उपरांत कोइ तीर्थ नथी, रूडा समकेत

के श्रीकल्पश्रवणेन तत् ॥ २७ ॥ दानैस्तपोभिर्विविधैः सत्तीर्थोपासनैरहो ॥ यत्पापं क्षीयते जन्तोस्तत्पापं श्रवणेन वै ॥ २८ ॥ मुक्तेः परं पदं नास्ति तीर्थं शत्रुंजयात्परम् ॥ संदर्शनात्परं तत्त्वं शास्त्रं कल्पात्परं नहि ॥ २९ ॥ अमावस्याप्रतिपदोर्दीपोत्सवदिनस्थयोः॥ प्राप्तनिर्वाणसज्ज्ञानौ स्मरेद्वीरगोतमौ ॥ ३० ॥ उपवासद्वयं कृत्वा गौतमं दीपपर्वणि ॥ स्मरेत्स लभते नूनमिह

उपरांत कोइ व्रत नथी, तेम कल्पसूत्र उपरांत बीजुं कोइ शास्त्र नथी ॥२९॥ ॥दीवालीना दिवसनी अमावास्यायें श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया छे, अने पडवाना दिवसें श्रीगोतम स्वामी केवलज्ञान पाम्या छे, तेनुं स्मरण करीयें ॥ ३० ॥ जे बे उपवास करीनें श्रीगौतम

॥११४॥

स्वामी प्रत्यें दीवालीना दिवसें स्मरण करे, ते निश्चयथी इहलोकें अने परलोकें मोहोटो उदय पामे ॥ ३१ ॥ ॥ पोताना घरने देरासरें अथवा गामने देरासरें विधियें करी नग वंतने पूजीने मंगलदीवो प्रत्यें करीने पोताना बंधव साथें नोजन प्रत्यें करे ॥ ३२ ॥ श्रीनगवंतना कल्याणकना मह्योटा पांच दिवसने विषे पोतानी शक्ति माफक यथायो

मुत्र महोदयान् ॥ ३१ ॥ स्वगृहे ग्रामचैत्ये च विधिनार्चां जिनेशितुः ॥ कृत्वा मङ्गलदीपं चाश्नीयात्सार्द्धं स्वबंधुनिः ॥३२॥ कल्याणके जिनानां हि परमे दिन पंचके ॥ निजशक्त्या सदर्थिभ्यो दद्याद्दानं यथोचितम् ॥ ३३ ॥ इबं सुपर्ववि हितोत्तमकृत्यचार्वाचारप्रचारपिहिताश्रववर्गमार्गः ॥ श्राद्धः समृद्धविधिवार्द्ध

ग्य सद्याचकने दान प्रत्यें आपे ॥ ३३ ॥ ॥ एम रूडा पर्वना समयें करवा योग्य कृत्य रूप नला आचारने पालवे करी ढांक्यो छे आश्रवना वर्गनो मार्ग जेणें, समृद्ध जे विधि तेणें करी वृद्धि पामी छे नली बुद्धि जेनी एवो श्रावक ते देवताना सुख प्रत्यें नोगवीने

शाश्वत एवां मोक्षनां सुख पामे ॥ ३४ ॥ इत्याचारोपदेशे पंचमवर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥ श्रावक रूडी धर्मनी करणी प्रत्यें करतो सम्यक्त्व निवृत्ति पामी रहे, अतृप्त मनें करी धर्मनी करणी प्रत्यें नित्य करे ॥ १ ॥ ॥ धर्मथी ठकुराइ पामी, जे प्राणी धर्म न करे

तच्छुद्धबुद्धिर्भुक्तिं सुपर्वसुखमेति च मुक्तिसौख्यम् ॥ ३४ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे पंचमवर्गः ॥ ५ ॥ अथ षष्ठवर्गप्रारंभः ॥ श्राद्धो विधाय सद्धर्मं कर्मतो निवृतिं व्रजेत् ॥ अतृप्तमानसः कुर्याद्धर्मकर्माणि नित्यशः ॥ १ ॥ धर्मादधिगतैश्वर्यो धर्ममेव निहन्ति यः ॥ कथं शुभायतिर्भूयात् स स्वामिद्रोहपातकी ॥ २ ॥ दानशीलतपोभावभेदैर्धर्मं चतुर्विधम् ॥ शुचिधीराराधयेद्यो भुक्तिमुक्ति

एवा पोताना स्वामिद्रोही पापीनुं आगल भलुं केम थाय ? ॥२॥ ॥ रूडी बुद्धिनो धणी जे होय ते निरंतर भुक्ति अने मुक्तिना फलनो देवावालो एवो दान, शील, तप अने भाव

ए चार प्रकारनो धर्म आराधे ॥ ३ ॥ ॥ थोडामांथी थोडुं आपीयें, महोटा उदयनी
अपेक्षा न करवी; केमके, मननी इच्छा सरखी संपदा केवारें कोइने होती नथी ॥ ४ ॥
प्राणी छे ते ज्ञानने दानेकरी ज्ञानवंत थाय, अभयदान देवाथी भयरहित थाय, अ

फलप्रदम् ॥ ३ ॥ देयं स्तोकादपि स्तोकं न चापेक्ष्यो महोदयः ॥ इच्छानुरूपो
विभवः कदा कस्य भविष्यति ॥ ४ ॥ ज्ञानवान् ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदान
तः ॥ अन्नदानात् सुखी नित्यं निर्व्याधिर्भेषजाद्भवेत् ॥ ५ ॥ कीर्तिः संजायते
पुण्यात् न दानादथ कीर्तये ॥ कैश्चिद्वितीर्यते दानं ज्ञेयं तद्व्यसनं बुधैः ॥ ६ ॥
व्याजैः स्याद्द्विगुणं वित्तं व्यवसायैश्चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं पात्रेऽनंत

न्नना दानथी सदा सुखी थाय, अने औषधिनुं दान देवाथी रोगरहित थाय ॥ ५ ॥
पुण्य थकी कीर्ति पामीयें,एकली मात्र कीर्त्तिने अर्थें केटलाएक दान आपे छे,ते दान पंडि
तोएं व्यसन जाणवुं ॥ ६ ॥ ॥ जे व्याजें धन आपीयें, ते बमणुं थाय, व्यापारें चो

गुणुं धन थाय, क्षेत्रमां वावियें ते सोगुणुं थाय, अने सुपात्रने आपीयें ते अनंतगुणुं थाय ॥ ७ ॥ ॥ देरासर, प्रतिमा,पुस्तक, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका ए सात क्षेत्रने विषे घणां फल पामवाने अर्थें धन वावरे ॥ ८ ॥ ॥ भगवंतनां भक्तिभावथी जे देरासर प्रत्यें करावे, ते पुरुष धन्य छे, ते देरासरना परमाणुनी जेटली संख्या

गुणं भवेत् ॥ ७ ॥ चैत्यप्रतिमापुस्तकश्रीसंघभेदयुक्तेषु ॥ क्षेत्रेषु सप्तसु धनं व्ययेद्भूरिफलाप्तये ॥ ८ ॥ चैत्यं च कारयेऽन्यो जिनानां भक्तिभावितः ॥ तत्परमाणुसंख्यानि कल्पानेप सुरो भवेत् ॥ ए ॥ यत्कारितं चैत्यगृहं तिष्ठेद्यावद्दिनानि ह ॥ स तत्समयसंख्यानि वर्षाणि त्रिदशो भवेत् ॥ १० ॥ सुवर्णरूप्य

छे तेटला पल्योपम सुधी ते पुरुष देवतानुं आयु भोगवे ॥ ए ॥ ॥ जे देरासर कराव्युं, ते देरासर जेटला दिवस सुधी रहे तेटला वर्ष पर्यंत ते पुरुष देवतापणे रहे ॥१०॥ सोनानी, रूपानी, पाषाणनी रत्ननी, मृत्तिकानी एवी भगवंतनी प्रतिमा प्रत्यें जे पुरुष

करावे, ते निश्चैं तीर्थंकर थाय ॥ ११ ॥ ॥ जे पोतानी शक्तिमाफक मात्र एक अं
गुष्ठ प्रमाणें परमेश्वरनी प्रतिमा करावे, ते मोक्षपद प्रत्यें पामे ॥ १२ ॥ ॥ धर्मरूप
वृक्षनुं मूळ ते नलुं शास्त्र छे, तथा प्रत्यक्ष मोक्ष फळनुं दातार छे, एम जाणतो जे पु

पाषाणरत्नलेपमयीमपि ॥ कारयत्यर्हतां मूर्तिं स वै तीर्थकरो भवेत् ॥ ११ ॥
अंगुष्ठमात्रामपि यः प्रतिमां परमेष्ठिनः ॥ कारयेद्वा यथाशक्ति स लभेत्पदमव्य
यम् ॥१२॥ धर्मद्रुमूलं स्याच्छास्त्रं, जानन् मोक्षफलप्रदम् ॥ लेखयेद्वाचयेद्यस्तु
शृणुयाद्भावशुद्धिकृत् ॥ १३ ॥ लेखयित्वा च शास्त्राणि यो गुणिभ्यः प्रयच्छति ॥
तन्मात्राक्षरसंख्यानि वर्षाणि त्रिदशो भवेत् ॥ १४ ॥ ज्ञानभक्तिं विधत्ते यो

रुप शास्त्रने लखावे, वांचे, सांभळे; तेनी ते शास्त्रथी भावशुद्धि थाय ॥१३॥ ॥ जे म
नुष्य सिद्धांतशास्त्र लखावीने गुणवंत पंडितने आपे; ते मनुष्य,शास्त्रना जेटला अक्षर
होय तेटला अक्षर प्रमाण वरस देवता थइने रहे॥ १४ ॥ ॥ जे ज्ञाननी भक्तिप्रत्यें

करे, ते ज्ञान विज्ञाने करी शोभे, वली सघला सुखनुं कारण अन्ननुं दान छे, एवुं मनमां भावीने यथाशक्ति वर्ष प्रत्यें साहामीवात्सल्य करे ॥ १५ ॥ ॥ बांधव कुटुंब ने जे जमाडे, ते संसारनुं हेतु छे, अने तेहिज जो सरखा धर्मिने जमाडे, साहामी

ज्ञानविज्ञानशोभितः ॥ निदानं सर्वसौख्यानामन्नपानं विभावयन् ॥ साधर्मिकाणां वात्सल्यं कुर्याद्भक्त्या समां प्रति ॥ १५ ॥ वात्सल्यं बंधुमुख्यानां संसारार्णववर्धनं ॥ तदेव समधर्माणां संसारोदधितारकम् ॥१६॥ प्रतिवर्षं संघपूजा शक्त्या कुर्याद्विवेकवान् ॥ प्राशुकानि श्रीगुरुभ्यो देयाद्वस्त्राणि भक्तितः ॥ १७॥ सत्पात्राशनयानानि पात्रवस्त्रौपधानि च ॥ चेन्न पर्याप्तविभवो देयात्तदपिशक्तितः

वात्सल्य करे, तो ते संसार समुद्रनुं तारक छे ॥ १६ ॥ ॥ वर्ष प्रत्यें श्रीसंघनी पधरामणी भक्ति पोतानी शक्तिमाफक करे, तथा फाशु शुद्धमान एवां वस्त्रादिक गुरुने भक्तियें करी आपे ॥ १७ ॥ ॥ तथा उत्तम पात्रने विषे अशन, पान, खादिम, स्वा

दिम, पात्र, वस्त्र, औपधि प्रमुख, जो पण पूरण आपवानी संपदा न होय, तो पण शक्तिमाफक आपे ॥ १८ ॥ ॥ उत्तम पात्रने विषे दान दीधुं थकुं हाणी न पामे, तथा कूवो, तलाव, वावडी बगीचा अने गाय प्रमुखनुं नित्यप्रत्यें दान करे, तो तेथी तेनी संपदा वधे ले ॥ १९ ॥ ॥ दीधुं अने खाधुं ए वेमांहे महोटुं अंतर देखाय ले; केमके,

॥ १८ ॥ सत्पात्रे दीयते दानं दीयमानं न हीयते ॥ कूपारामगवां दानाद्दद तामेव संपदः ॥ १९ ॥ प्रदत्तस्य च भुक्तस्य दृश्यते महदन्तरम् ॥ प्रभुक्तं जा यते वर्चो दत्तं भवति चाक्षयम् ॥ २० ॥ आयासशतलब्धस्य प्राणेभ्योऽपि ग रीयसः ॥ दानमेकैव वित्तस्य गतिरन्या विपत्तये ॥ २१ ॥ क्षेत्रेषु सप्तसु ददत्

खाधुं ते विष्ठा थाय, अने दीधुं ते अक्षय थाय ले ॥ २० ॥ ॥ शेंकडा गमे प्रयासेंकरी जे पाम्युं, पोताना प्राणथकी पण अधिक एवुं जे धन तेनी दानगति ले; अने बीजी ते विपत्ति ले ॥ २१ ॥ ॥ न्यायें कमावेला पोताना धन प्रत्यें सात क्षेत्रें वावतो दान

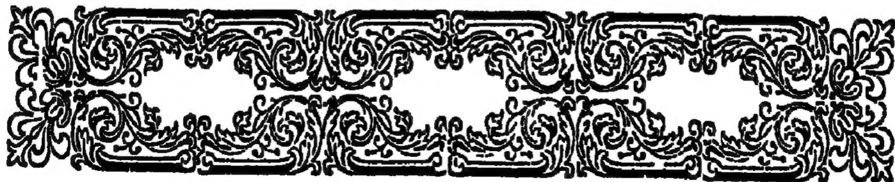
देश्ने श्रावक पोताना धनने अने जनमने सफल करे ॥ २२ ॥ इतिश्री रत्नसिंहसूरि

न्यायोपात्तं निजं धनम् ॥ साफल्यं कुरुते श्राद्धो निजयोर्धनजन्मनोः ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीरत्नसिंहसूरिशिष्यचारित्रसुंदरगणिविरचिते श्रीआचारोपदेशे षष्ठो वर्गः संपूर्णः ॥ ६ ॥ इति श्रीआचारोपदेशः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

शिष्यचारित्रसुंदरगणिविरचिते श्रीआचारोपदेशे बालावबोधे षष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

इदं पुस्तकं मोहमय्यां निर्णयसागराख्यमुद्रालये
श्रावक नीमसिंहमाणकेन मुद्रापितम्. संवत् १९४५.



॥ इति लघु-प्रकरण-संग्रहः समाप्तः ॥